वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 306
ISBN 978-93-80353-00-5

पंचकल्याणक तीर्थक्षेत्र विधान

–रचयित्री –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के पावन सानिध्य में
21 दिसम्बर 2008 को भारत की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों द्वारा उद्घाटित ''विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन'' के अनन्तर पूज्य माताजी द्वारा घोषित 'शांति वर्ष-2009' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. फोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweep.org
E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	श्रावण शु. 11	मूल्य
1100 प्रतियाँ	वी. नि. सं. 2535, 1 अगस्त 2009	80/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

पंचकल्याणक सभी तीर्थंकरों के जीवन के वे पाँच विशेष महोत्सव हैं जिन्हें स्वयं सौधर्म इन्द्र अग्रसर होकर विशाल देवसमूह के साथ सम्पन्न करता है किन्तु तीर्थंकर भगवान उनमें अनुरंजित नहीं होते हैं, वे तो जल से भिन्न कमल के समान सदा आत्मस्वरूप में ही लवलीन रहते हैं।

तीर्थंकर सम्पूर्ण गुणों के पुंज होते हैं, जैन संस्कृति के परम आधार हैं, उनकी दिव्यध्वनि ही जिनवाणी कहलाती है जिसके दिव्यप्रकाश में भव्य प्राणी अपने आत्मकल्याण के मार्ग को प्रशस्त करते हैं। ध्यान के बल से कर्मरूपी शत्रुओं का संहार करने वाले उन तीर्थंकरों की भक्ति प्रत्येक प्राणी की कर्म निर्जरा में माध्यम बनती है।

साहित्य सृजन के क्षेत्र में भक्ति संचार द्वारा ऐतिहासिक क्रान्ति लाने वाली राष्ट्रगौरव परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी सर्वदा यही कहती हैं कि इस कलिकाल में अपनी आत्मा की विशुद्धि हेतु अंतरंग ध्यान साधना से अधिक उपयोगी पूजन-विधान के माध्यम से भगवान की भक्ति करना है क्योंकि कालदोष के कारण ध्यान साधना में कोई भी जीव उत्कृष्ट अवस्था को प्राप्त करने में असमर्थ होता है। जीव के जन्म-जन्मान्तरों का पुण्य संचित होकर जब एक साथ उदय में आता है तब जिनधर्म एवं जिनवाणी सुनने का साधन प्राप्त होता है जिससे शुभोपयोग में जीव का समय व्यतीत होता है अन्यथा तो सभी संसारी प्राणी दिन रात अशुभोपयोग अर्थात् पाप क्रियाओं में संक्लेशित होकर अपार दुख उठाते हैं।

धर्म जगे तो सुख जागे, तन मन पुलकित होय।
धर्म छुटे तो सब छुटे, तन मन विफलित होय।।

कहने का अभिप्राय यह है कि अशुभोपयोग से बचने के लिए प्रत्येक श्रावक को अपना समय शुभोपयोग में व्यतीत करने हेतु भगवान की भक्ति, पूजा, स्तोत्रपाठ, तीर्थयात्रा वगैरह करना चाहिए जो शुभोपयोग के अंग हैं।

आचार्य कुन्दकुन्दस्वामी के अनुसार तो "दाणं पूजा मुक्खो" अर्थात् श्रावक के लिए दान और पूजन ये दोनों आवश्यक कर्तव्य हैं। पूजन विधान रचना के क्रम में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अनेकानेक विधानों की रचना कर अनूठी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है जिन्हें अपनी ग्रंथमाला से प्रकाशित कर हम अत्यन्त गौरवान्वित हैं। ग्रंथ रचना के उसी क्रम में पूज्य माताजी की शिष्या आर्यिका श्री चंदनामती माताजी भी एक सिद्धहस्त लेखिका हैं जिन्होंने जैन जगत को अनेक कृतियाँ प्रदान कर महान उपकार किया है। जिसमें से एक कृति 'पंचकल्याणक तीर्थक्षेत्र विधान' है। संगीत की मधुर स्वरलहरियों के साथ जब इस पूजा विधान का पठन किया जायेगा तो भौतिक ताप से संतप्त प्राणी शीतलता का अनुभव कर अत्यन्त आनन्द विभोर हो उठेंगे। मिश्री के समान मिष्ट फलदायी यह विधान सभी भक्तगणों के भावों की विशुद्धि कर तीर्थंकरों की पंचकल्याणक भूमियों की महत्ता का दिग्दर्शन कराते हुए एक दिन सभी भव्यात्माओं को भी तीर्थरूप बनाने में सहायक होवे, यही शुभेच्छा है।

G G G G G

प्रस्तावना

–ब्र.कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

"कल्याणं करोति इति कल्याणकः" इस व्युत्पत्ति के अनुसार जो स्व और पर का कल्याण करने में समर्थ होते हैं वे तीर्थंकर महापुरुष पंचकल्याणकों से समन्वित होते हैं। तीर्थंकर के अलावा अन्य किसी महापुरुष के भी पाँच कल्याणक नहीं हो सकते हैं अथवा यूँ भी कहा जा सकता है कि जिस भव्यात्मा ने पूर्व जन्म में किसी तीर्थंकर के पादमूल में दर्शनविशुद्धि आदि सोलहकारण भावनाओं को भाकर तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर लिया है वह पुनः उस भव से मरण कर स्वर्गों में या सर्वार्थसिद्धि आदि विमानों में जन्म लेते हैं। वहाँ की आयु पूर्ण कर जब वह जीव माता के गर्भ में आता है तभी से गर्भकल्याणक आदि पंचकल्याणक इन्द्रगण मनाते हैं।

'तीर्थं करोति इति तीर्थंकरः' जो धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करते हैं वह तीर्थंकर कहलाते हैं। उन तीर्थंकर भगवन्तों के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और निर्वाण ये पाँच कल्याणक होते हैं, ऐसा वर्णन शास्त्रों में आया है। तीर्थंकर भगवन्तों के बारे में आचार्यों ने कहा है कि तीर्थंकर भगवान श्रेष्ठों में भी श्रेष्ठ पुरुष होते हैं। उनका जन्म स्थान ही पूज्य नहीं होता, वह काल भी मंगल हो जाता है जब उनके पंचकल्याणक हुए हों।

कहा भी है–

यत्रापि कुत्रापि भवंति हंसाः, हंसाः मही-मंडलमंडनानि।
हानिस्तु तेषां हि सरोवराणां, येषां अरालैः सह विप्रयोगः ।।

अर्थात् मानसरोवर के कारण हंस को गौरव नहीं मिलता है, हंस के कारण मानसरोवर सन्मान का पात्र बनता है। हंस जहाँ भी रहता है, वही स्थल महत्वपूर्ण बन जाता है।

ठीक उसी प्रकार कोई भी स्थल पवित्र नहीं होता है न ही कोई भूमि पूज्य होती है परन्तु जिस स्थल पर तीर्थंकर भगवान के पंचकल्याणक हुए हों, वह क्षेत्र ही पूज्य नहीं हो जाता अपितु उस स्थल का कण-कण पवित्र हो जाता है। वर्तमान में जिन चौबीस तीर्थंकरों के नाम पढ़े जाते हैं वे इस हुण्डावसर्पिणी के तीर्थंकर हैं जो कि जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में हुए हैं। यूँ तो प्रत्येक अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी में प्रत्येक चौबीसी भगवान शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या में जन्म लेकर शाश्वत निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर से मोक्ष प्राप्त करते हैं परन्तु वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी कालदोषवश पाँच तीर्थंकर ही अयोध्या नगरी में जन्में और शेष उन्नीस तीर्थंकर अलग-अलग स्थानों पर जन्में और २० तीर्थंकर सम्मेदशिखर से तथा चार अलग-अलग स्थानों से मोक्ष गए, जिनका वर्णन हमें पुराण ग्रंथों व चौबीसी पूजन में प्राप्त होता है। अभी यहाँ पंचमकाल चल रहा है, इस काल के मानव हीन पुण्य वाले हैं अतः उन्हें साक्षात्

रूप से तीर्थंकरों के दर्शन, देवों के अतिशय आदि तो सुलभ नहीं हैं फिर भी आचार्यों ने उनके लिए श्रावक और मुनिधर्म के उपदेश प्रदान किए हैं जिन्हें यथाशक्ति पालन कर हम सभी मोक्षमार्ग के पथिक तो बन ही सकते हैं।

जैन समाज में आज भी पूजा पद्धति का विशेष प्रचलन है जिसमें नित्य और नैमित्तिक पूजन के भेद में नैमित्तिक पूजन के अन्तर्गत यह "पंचकल्याणक तीर्थक्षेत्र विधान" है। विधान रचना का नाम आते ही हमारे सामने पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का शारद स्वरूप दिग्दर्शित हो जाता है जिन्होंने बहुतायत संख्या में पूजन विधानों की अनवरत शृँखला इस जैनागम को प्रदान की है, विधान की उन्हीं शृँखलाओं में कुछ मोतियों को अपनी जादुई लेखनी से पिरोया है उन्हीं गणिनी श्री की सुशिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने। गुरुभक्ति में सतत तत्पर पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने पूज्य माताजी की मंगल प्रेरणा प्राप्त कर अब तक लगभग १०० कृतियाँ जनमानस को प्रदान की हैं, जिसमें ६-७ पूजन विधान भी प्रकाशित हो चुके हैं।

इस पूजन विधान में कुल २५ पूजाएँ हैं और १६५ अर्घ्य, १८ पूर्णार्घ्य एवं २६ जयमाला हैं। इन २५ पूजाओं में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित अयोध्या, हस्तिनापुर एवं सम्मेदशिखर पूजा को पूज्य माताजी ने इसमें जोड़ा है। प्रस्तुत विधान में पंचकल्याणक तिथियाँ, दीक्षा वन, वैराग्य के कारण, मोक्षस्थल आदि का वर्णन है जिससे विधान के साथ-साथ अच्छा स्वाध्याय भी हो जाता है।

बंधुओं! जिस प्रकार शुद्ध भावों के द्वारा इन चौबीसों भगवन्तों ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया, जिस उज्ज्वल परिणामों से युत हो पूज्य आर्यिका श्री ने उनके कल्याणकों का परिचय विभिन्न छंदों में निबद्ध कर हमें स्वाध्याय और पूजन इन दो कर्त्तव्यों को करने का सुअवसर दिया, उन्हीं शुभ भावों को संजोकर अपने व्यस्ततम समय में से कुछ समय निकालकर निर्मल हृदय एवं शुद्ध द्रव्य से हम पूजन करें और उसके रहस्य को समझकर अपने मानव जीवन को सार्थक करें ताकि कुछ भवों में हमें भी उस पंचकल्याणक अवस्था प्राप्ति का सौभाग्य मिले और यदि ऐसा अवसर न भी मिल सके तो कम से कम पंचकल्याणकों को मनाने वाले एक-दो भवावतारी इन्द्रपद की ही प्राप्ति का पुण्य संचित कर लें। विधान की रचयित्री पूज्या माताजी के श्रीचरणों में शत-शत वंदन करते हुए गागर में सागर के समान इस सारभूत कृति के द्वारा हम अपने कर्मबंधन को काटने में सक्षम होवें और यह विधान भक्तों के अभीष्ट मनोरथों की सिद्धि में सहकारी होवे, यही मंगल भावना है।

G G G G G

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का
मंगल आशीर्वाद

नमः श्री पुरुदेवाय, धर्मतीर्थ प्रवर्तिने।
सर्वाः विद्याकला, यस्मादाविर्भूता महीतले।।

देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति में प्रयुक्त किए गए शब्द निश्चित ही लेखन शक्ति को विकसित करने में कारण होते हैं। पौद्गलिक होते हुए भी यह शब्द जीव को भावनानुसार फल प्रदान करते हैं, जैसे-सिद्ध भगवान की अकाट्य भक्ति में प्रयुक्त शब्द सीधे सिद्धशिला पर जाकर वहाँ का स्पर्श कर वापस आकर भव्यात्मा के मनोरथों की सिद्धि कर देते हैं।

जिस प्रकार कुएँ से जितना जल निकलता है, उसमें जल की उतनी ही वृद्धि होती है और वह उतना ही अधिक मीठा होता है ठीक उसी प्रकार स्वयं में उत्पन्न ज्ञान को जितना दूसरों को बांटा जाए, श्रुतज्ञान उतना ही अधिक वृद्धिंगत होगा और देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति मोक्षमार्ग को प्रशस्त करने में भी सहायक होगी।

छहढाला में कहा है-

ज्ञान समान न आन, जगत में सुख को कारन।
इह परमामृत जन्म जरा मृत रोग निवारन।।

ऐसी अचिन्त्य इस ज्ञान की महिमा है और आत्मविशुद्धि और क्षयोपशम की वृद्धि ज्ञान द्वारा ही होती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए मेरी शिष्या आर्यिका चंदनामती जी ने मेरी प्रेरणा से "पंचकल्याणक तीर्थक्षेत्र विधान" नामक सारभूत कृति की रचना की है, जो कि तीर्थंकर भगवन्तों के जीवन से संबंधित विभिन्न पहलुओं का ज्ञान जनमानस को सहजता से प्रदानकर वर्तमान में उत्पन्न नाना विसंगतियों को दूरकर जैनधर्म की कीर्ति पताका को दिग्दिन्त व्यापी प्रसारित करेगा, ऐसा मुझे विश्वास है।

आर्यिका चंदनामती जी की प्रज्ञा विशेष है, साथ ही लेखन में इनकी गहरी रुचि है। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में लिखित अनेक पूजन, भजन, आरती स्तुतियाँ, विधान आदि इनकी कृतियाँ लोगों को धर्म की ओर प्रेरित करती हैं। वे सदैव इसी प्रकार अपने ज्ञान को जिनवाणी सेवा में समर्पित करते हुए जिनधर्म की प्रभावना करती रहें, यही उनके लिए मेरा मंगल आशीर्वाद है और सभी पाठकगण इस समसामयिक कृति के द्वारा भगवान की भक्ति करते हुए चौबीसों तीर्थंकरों की पंचकल्याणक भूमियों के विषय में वास्तविक ज्ञान प्राप्त करें और उनका संरक्षण-संवर्धन करते हुए महान पुण्य का संचय करें, यही शुभाशीर्वाद है।

G G G G G

विधान की प्रेरणास्रोत, परमपूज्य गणिनीप्रमुख
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि—आसोज सुदी १५ (शरदपूर्णिमा) वि. सं. १९९१(सन् १९३४)
गृहस्थ का नाम—कु. मैना
माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् १९५२ में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।
क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. १, ई. सन् १९५३ को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।
आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. २, ई. सन् १९५६ को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती १०८ आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।
साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं २५० विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् १९९५ में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।
तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा—भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की ३१ फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन १०८ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।
महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव इत्यादि। **विशेषरूप से २१ दिसम्बर २००८ को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**
शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।
रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (१९८२ से १९८५), समवसरण श्रीविहार (१९९८ से २००२), महावीर ज्योति (२००३-२००४) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विधान रचयित्री, पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका

श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम—ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि—१८-५-१९५८ (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई—चार (कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जैन)

बहन—आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

लौकिक शिक्षा—हाईस्कूल

गुरुसंघ में आगमन—सन् १९६९

आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत—सन् १९७१, अजमेर में सुगंध दशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन—१९७२ में सोलापुर से "शास्त्री" की उपाधि, १९७३ में "विद्यावाचस्पति" की उपाधि।

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत—सन् १९८१ एवं १९८७ में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

आर्यिका दीक्षा—हस्तिनापुर में १३-८-१९८९, श्रावण शु. ग्यारस को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से।

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि—१९९७ में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

साहित्यिक योगदान—चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, कल्याण मंदिर विधान, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान आदि लगभग १०० पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित "षट्खण्डागम की संस्कृत टीका एवं "भगवान ऋषभदेव चरितम्" की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' इत्यादि ग्रंथों का पद्यानुवाद। भजन (३०० से अधिक), पूजन, आरती, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका।

इस प्रकार बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के श्रीचरणों में नमन करते हुए भगवान जिनेन्द्र से यह प्रार्थना है कि पूज्य माताजी दीर्घकाल तक स्वस्थ रहें तथा उनकी रत्नत्रय साधना निराबाध चलती रहे, ताकि भूले-भटके संसारी प्राणियों को सम्यक्बोध की प्राप्ति होती रहे।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

—पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् १९७२ में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् १९७४ में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं—

१. सन् १९७२ से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

२. सन् १९७४ से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

३. सन् १९७४ से १९८५ तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

४. सन् १९७४ से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है—कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना एवं नवग्रहशांति जिनमंदिर।

५. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग १५००० ग्रंथ संग्रहीत हैं।

६. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

७. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

८. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

९. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

१०. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

११. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

१२. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना से समन्वित हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं शारीरिक सुख की प्राप्ति करें।

समर्पण

हिमालय पर्वत से भी उच्च आदर्श से समन्वित
नीलनदी से भी वृहत् ज्ञानगंगारूपी वाणी से युक्त, एशिया महाद्वीप से
भी विस्तृत कीर्ति से संयुत, प्रशान्त महासागर के समान गंभीर
तीर्थंकर कन्यासम शारद माता की प्रतिमूर्ति,
डी.लिट्. की मानद् उपाधि से अलंकृत, हम जैसे अज्ञानी जीवों को
कर का अवलम्बन देकर संसार समुद्र से निकालकर
मुक्तिपथ का पथिक बनाने वाली,
षट्खण्ड विजय प्राप्त चक्रवर्ती के समान षट्खण्डागम जैसे महान
सिद्धान्तग्रंथ की संस्कृत टीका करने वाली सिद्धान्तचक्रेश्वरी,
बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी, वाग्देवी,
जिनशासनप्रभाविका, तीर्थोद्धारिका,
युगप्रवर्तिका, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

के पावन करकमलों में अपने २१वें
आर्यिका दीक्षा दिवस के सुअवसर पर
समुद्र को अपने नन्हें हाथों से मापने और
दीपक से सूर्य की आरती करने के
सदृश यह कृति विनयावनत
श्रद्धायुत समर्पित

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर — ***समर्पणकर्त्री*** — **श्रावण शुक्ला एकादशी**
1 अगस्त 2009 — **आर्यिका चंदनामती** — **वीर नि. सं. 2535**

विषय-सूची

क्र.सं.	पूजा	पृष्ठ नं.
१.	नवदेवता पूजा	
२.	समुच्चय पूजा	३
३.	अयोध्या तीर्थ पूजा	९
४.	श्रावस्ती तीर्थ पूजा	२१
५.	कौशाम्बी तीर्थ पूजा	२७
६.	वाराणसी तीर्थ पूजा	३३
७.	चन्द्रपुरी तीर्थ पूजा	४०
८.	काकन्दी तीर्थ पूजा	४६
९.	भद्रिकापुरी तीर्थ पूजा	५३
१०.	सिंहपुरी तीर्थ पूजा	५९
११.	चम्पापुरी तीर्थ पूजा	६५
१२.	कम्पिलपुरी तीर्थ पूजा	७२
१३.	रत्नपुरी तीर्थ पूजा	७८
१४.	हस्तिनापुर तीर्थ पूजा	८६
१५.	मिथिलापुरी तीर्थ पूजा	९३
१६.	राजगृही तीर्थ पूजा	१००
१७.	शौरीपुर तीर्थ पूजा	१०८
१८.	कुण्डलपुर तीर्थ पूजा	११५
१९.	प्रयाग तीर्थ पूजा	१२१
२०.	अहिच्छत्र तीर्थ पूजा	१२८
२१.	महावीर केवलज्ञान भूमि जृम्भिका तीर्थ पूजा	१३४
२२.	कैलाशपर्वत की पूजा	१३९
२३.	सम्मेदशिखर पूजन	१४६
२४.	श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पूजा	१६२
२५.	श्री पावापुरी सिद्धक्षेत्र पूजा	१६८
२६.	निर्वाणक्षेत्र पूजा	१७७
	समुच्चय जयमाला	१८६
	पंचकल्याणक तीर्थ आरती	१८८
	सम्मेदशिखर टोंक वंदना	१८९
	मण्डल का नक्शा	१९२

नवदेवता पूजन

—गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

—गीता छन्द —

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अथाष्टक —

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा — **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य — **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा — **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।१।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।२।।
आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।

जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।३।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।४।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।५।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।६।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।७।।

दोहा — **नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।**
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

—गीता छंद —

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।९।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

G

पंचकल्याणक तीर्थक्षेत्र विधान

मंगलाचरण

तीर्थ वंदना गीत

तर्ज —जरा सामने तो.....

तीर्थयात्रा का पुण्य विशाल है, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा भवसागर से होकर पार है।।
कोई गंगा को तीरथ कह उसमे डुबकी लगाते है।
कोई संगम तट पर जाकर निज को शुद्ध बनाते हैं।।
सच्चे तीरथ की कीरत विशाल है इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा भवसागर से होकर पार है।।१।।

सत्य अहिंसा करुणा की नदियाँ जहाँ कल-कल बहती हैं।
उनमें पापों के क्षालन को जनता आतुर रहती है।।
वही तीरथ अलौकिक विशाल है, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा भवसागर से होकर पार है।।२।।

कहीं किसी पर्वत पर जाकर महामुनि तप करते हैं।
वृक्षों के नीचे भी तप कर केवल ज्ञानी बनते हैं।।

वे ही तीरथ कहाते विशाल है, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा भवसागर से होकर पार है।।३।।

ये सब द्रव्य तीर्थ हैं चेतन भावतीर्थ कहलाता है।
चलते फिरते तीर्थ साधुगण जिनका मोक्ष से नाता है।।
''चन्दनामती'' ये तीरथ विशाल हैं, इनकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा भवसागर से होकर पार है।।४।।

तीर्थंकर के पंचकल्याणक, तीर्थों की वंदना करूँ।
निज आतम कल्याण के हेतू, इनकी मैं अर्चना करूँ।।
आठों द्रव्यों का पूजन थाल है, पूजा करते सदा पुण्यवान हैं।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, भवसागर से होकर पार है।।५।।

।।इति तीर्थंकर पंचकल्याणकतीर्थ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

G G G G G

—विधान का मूलमंत्र—

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक-तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।

(पूजा नं.–1)

तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ पूजा

(समुच्चय पूजा)

—शंभु छंद—

श्री ऋषभदेव से महावीर तक चौबिस तीर्थंकर प्रभु हैं।
इन सबके पंचकल्याणक से पावन तेईस तीर्थ भू हैं।।
मेरा भी हो कल्याण प्रभो! मैं पंचकल्याणक तीर्थ नमूँ।
आह्वानन स्थापन एवं सन्निधीकरण विधि से प्रणमूँ।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणाम् पंचकल्याणक तीर्थसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणाम् पंचकल्याणक तीर्थसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणाम् पंचकल्याणक तीर्थसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (शंभु छंद)—

इस जग में काल अनादी से, हर प्राणी तृषा समन्वित है।
तीरथ पद में जलधारा कर, हो सकती तृष्णा विस्मृत है।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।१।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीरथ यात्रा से सचमुच ही, आत्मा में परमशांति मिलती।
चन्दन पूजा संसार ताप को, दूर हटा सब सुख भरती।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।२।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद पाकर जिनवर ने, आत्मा को तीर्थ बना डाला।
अक्षत ले शुभ्र धवल मुट्ठी में, मैंने पुंज चढ़ा डाला।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।३।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ तीर्थंकर ने ब्याह किया, कुछ ने नहिं ब्याह रचाया है।
विषयों की इच्छा तजकर ही, सबने तप को अपनाया है।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।४।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गों का भोजन भी तजकर, तीर्थंकर प्रभु ने दीक्षा ली।
हर प्राणी को दीक्षा लेने के, हेतु प्रभू ने शिक्षा दी।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।५।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ज्ञान का दीप जलाकर प्रभु ने, जग को ज्ञान प्रकाश दिया॥
हमने घृतदीप जला आरति, करके कुछ आत्मविकास किया।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।६।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शुक्लध्यान की अग्नी में, कर्मों की धूप दहन करके।
जिनवर ने शिवपद पाया हम भी, धूप अग्नि में दहन करें।।

जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।७।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस मोक्षमहाफल के निमित्त, प्रभु ने उग्रोग्र तपस्या की।
उसकी अभिलाषा करके ही, हमने फल थाली अर्पित की।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।८।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध सुअक्षत पुष्प चरु, दीपक वर धूप फलादि लिया।
''चन्दनामती'' तीर्थंकर बनने, हेतु तीर्थ पद चढ़ा दिया।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।९।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शेरछंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक की भूमियाँ।
पावन हैं सभी के लिए वे तीर्थभूमियाँ।।
तीर्थों की अर्चना में शांतिधारा करूँ मैं।
निज शांति के संग विश्वशांति भाव धरूँ मैं।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

जिन उपवनों में जिनवरों ने की थी तपस्या।
सब ऋतु के फूल-फल से फलित वृक्ष थे वहाँ।।
इन पुष्पों में भी उन्हीं पुष्प की है कल्पना।
पुष्पांजली के द्वारा करूँ तीर्थ अर्चना।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—शंभु छंद—

जो भवसमुद्र से तिरवाता, वह तीर्थ कहा जाता जग में।
वह द्रव्य तीर्थ औ भावतीर्थ, दो रूप कहा जिन आगम में।।
तीर्थंकर के जन्मादिक से, पावन हैं द्रव्यतीर्थ सच में।
हर प्राणी की आत्मा परमात्मा भावतीर्थ मानी जग में।।१।।

जय जय तीर्थंकर तीर्थनाथ, तुम धर्मतीर्थ के कर्ता हो।
जय जय चौबीस जिनेश्वर तुम, त्रिभुवन गुणमणि के भर्ता हो।।
जय ऋषभदेव से वीर प्रभू तक, सबकी महिमा न्यारी है।
इन पंचकल्याणक के तीर्थों को, नितप्रति धोक हमारी है।।२।।

चौबीसों जिन की जन्मभूमि का, अतिशय ग्रंथों में आया।
जहाँ पन्द्रह-पन्द्रह मास रतन-वृष्टि सुरेन्द्र ने करवाया।।
वह तीर्थ अयोध्या प्रथम तथा, कुण्डलपुर जन्मभूमि अन्तिम।
जहाँ तीर्थंकर माताओं ने, देखे सोलह सपने स्वर्णिम।।३।।

यूँ तो सब तीर्थंकर की शाश्वत जन्मभूमि है अवधपुरी।
लेकिन हुण्डावसर्पिणी में हो गईं पृथक् ये जन्मथली।।
इस कारण तीजे काल में ही, हुई कर्मभूमि प्रारंभ यहाँ।
तब नगरि अयोध्या धन्य हुई, हुआ प्रथम प्रभू का जन्म जहाँ।।४।।

उस शाश्वत तीर्थ अयोध्या में, इस युग के पाँच प्रभू जन्में।
ऋषभेश अजित अभिनंदन एवं, सुमति अनंत उन्हें प्रणमें।।
गणधर मुनि एवं इन्द्र आदि से, वंद्य अयोध्या नगरी है।
वृषभेश्वर की ऊँची प्रतिमा, जहाँ तीर्थ की महिमा कहती है।।५।।

इन जन्मभूमियों की श्रेणी में, श्रावस्ती संभव प्रभु की।
कौशाम्बी पद्मप्रभ की वाराणसि सुपार्श्व पारस प्रभु की।।

चन्द्रप्रभ जन्में चन्द्रपुरी में, पुष्पदन्त काकन्दी में।
भद्रिकापुरी में शीतल जिन, जन्मे श्रेयाँस सिंहपुरि में।।६।।

चम्पापुर नगरी वासुपूज्य की, जन्मभूमि से पावन है।
पाँचों कल्याणक से केवल, चम्पापुर ही मनभावन है।।
कम्पिलापुरी में विमलनाथ, है धर्मनाथ की रत्नपुरी।
श्रीशांति कुंथु अरनाथ तीन की, जन्मभूमि हस्तिनापुरी।।७।।

मिथिलानगरी में मल्लिनाथ, नमिनाथ जिनेश्वर जन्मे हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर राजगृही, नेमी प्रभु शौरीपुर में हैं।।
कुण्डलपुर में महावीर प्रभू का, नंद्यावर्त महल सुन्दर।
प्राचीन छवी के ही प्रतीक में, ऊँचा बना सात मंजिल।।८।।

ये सोलह तीर्थ सभी तीर्थंकर, के जन्मों से पावन हैं।
ये गर्भ जन्म तप ज्ञान चार, कल्याणक से भी पावन हैं।।
इनके वन्दन से निज घर में, लक्ष्मी का वास हुआ करता।
इनके वन्दन से आतम में, सुख शांती लाभ हुआ करता।।९।।

पूर्णार्घ्य महार्घ्य समर्पण कर, सब तीर्थ भाव से नमन करो।
पूजन का फल पाने हेतू, सब राग द्वेष को शमन करो।।
ज्यों राजहंस से मानसरोवर, की पहचान कही जाती।
त्यों ही जिनवर जन्मों से धरती, पावन पूज्य कही जाती।।१०।।

तीरथ प्रयाग में ऋषभदेव के दीक्षाज्ञान कल्याणक हैं।
अहिछत्र तीर्थ पर पार्श्वनाथ का हुआ ज्ञानकल्याणक है।।
जृंभिका ग्राम में ऋजुकूला नदि के तट पर महावीर प्रभू।
कैवल्यधाम को प्राप्त हुए, कर घातिकर्म का नाश प्रभू।।११।।

कैलाशगिरी से ऋषभदेव ने, मुक्तिश्री का वरण किया।
चम्पापुर से प्रभु वासुपूज्य ने, मोक्षधाम में गमन किया।।
गिरनार तीर्थ से नेमिनाथ, पावापुरि से महावीर प्रभू।
सम्मेदशिखर पर तप करके, निर्वाण गये हैं बीस प्रभू।।१२।।

यूँ तो जिनआगम में केवल, दो ही माने शाश्वत तीरथ।
शुभतीर्थ अयोध्या जन्मभूमि, निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर।।
पहले के सब तीर्थंकर नगरि अयोध्या में ही जनमते थे।
फिर कर्मनाश सम्मेदशिखर से मुक्तिप्रिया को वरते थे।।१३।।

निज जन्मभूमि से अलग ऋषभ प्रभु नेमिनाथ ने दीक्षा ली।
बाकी बाइस तीर्थंकर ने निज जन्मभूमि में दीक्षा ली।।
ऐसे ही तीन जिनेश्वर को अन्यत्र सु केवलज्ञान हुआ।
श्री ऋषभ-पार्श्व-महावीर प्रभू का समवसरण निर्माण हुआ।।१४।।

इन पंचकल्याणक तीर्थों को है मेरा बारम्बार नमन।
कुछ सिद्धक्षेत्र अतिशयक्षेत्रों को भी मेरा शत-शत वन्दन।।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, मैं तीर्थंकर पद को पाऊँ।
कर धर्मतीर्थ का वर्तन मैं शाश्वत सुख में बस रम जाऊँ।।१५।।

इस युग की गणिनीप्रमुख ज्ञानमति माता की प्रेरणा मिली।
कल्याणक तीर्थों का विकास करने की नव चेतना मिली।।
उनकी शिष्या आर्यिका ''चन्दनामति'' की है याचना यही।
शिवपद पाने तक तीर्थों के प्रति भक्ति रहे भावना यही।।१६।।

दोहा—शब्दों की जयमाल यह, अर्पूं जिनपद मांहि।
अष्टद्रव्य का थाल ले, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय।।१७।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद—तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(पूजा नं. –2)

अयोध्या तीर्थ पूजा

रचयित्री-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

—अथ स्थापना —

तर्ज-गोमटेश, जय गोमटेश.....

आदिनाथ, जय आदिनाथ, मम हृदय विराजो-२
हम यही भावना करते हैं।
भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।
हो नगर नगर में प्रभु पूजा, सारी धरती भक्ति स्थल हो।।हम०।।१।।
युग की आदि में इन्द्रराज ने, नगरि अयोध्या रचवाई।
श्री नाभिराय मरुदेवि को पाकर, सारी जनता हरषाई।।
प्रभु आदिनाथ का जन्म याद कर, मेरा मन भी उज्ज्वल हो।।हम०।।२।।
श्री अजितनाथ अभिनंदन सुमती, जिन अनंत ने जन्म लिया।
इन्द्रों ने जिन शिशु को लेकर, मेरू गिरि पर अभिषेक किया।।
जिन जन्मभूमि का अर्चन कर, मेरा मन भी अति उज्ज्वल हो।।हम०।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक —

तर्ज-आवो बच्चों तुम्हें दिखायें.....

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

सरयूनदि का जल अति शीतल, पद्मपराग सुवास मिला।
रागभाव मल धोवन कारण, धार करें मनकंज खिला।।
जलधारा से पूजा करते, पावें उज्ज्वल कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।१।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

केशर घिस कर्पूर मिलाया, भ्रमर पंक्तियां आन पड़ें।
तीर्थक्षेत्र पूजन से नशते, कर्मशत्रु भी बड़े बड़े।।
चंदन से पूजा करते ही, पावें अविचल कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।२।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

चंद्र चन्द्रिका सम सित तंदुल, पुंज चढ़ायें भक्ती से।
अमृतकणसम निज समकित गुण, पायें अतिशय युक्ती से।।

अक्षत से जिनक्षेत्र पूजते, पावें अक्षय कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ के।।३।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

वर्ण वर्ण के सुमन सुगंधित, पारिजात वकुलादि खिले।
काम व्यथा नश जाय क्षेत्र को, अर्पण कर नवलब्धि[1] मिले।।
पुष्पों से पूजा करते ही, पावें निजगुण कीर्ति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।४।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

रसगुल्ला रसपूर्ण अंदरसा, कलाकंद पयसार[2] लिये।
अमृतपिंड सदृश नेवज से, तीर्थक्षेत्र का यजन किये।।
चरु से पूजा करते ही जन, हरते क्षुध की भीति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।५।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

१. क्षायिकज्ञान आदि नव क्षायिक लब्धियाँ। २. मलाई।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

हेमपात्र में घृत भर बत्ती, ज्योति जले तम नाश करे।
दीपक से आरति करते ही, हृदय पटल की भ्रांति हरे।।
करें आरती भक्ति भाव से, पावें आतमज्योति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।६।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

धूपघड़े में धूप जलाकर, अष्टकर्म को दग्ध करें।
निजआतम के भावकर्म मल, द्रव्यकर्म भी भस्म करें।।
धूप खेयकर पूजा करते, पावें सुरभित कीर्ति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।७।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतम तीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

फल अंगूर अनंनासादिक, सरस मधुर ले थाल भरे।
आत्म अतीन्द्रिय सुख इच्छुक हो, फल अर्पें बहु भक्ति भरे।।

फल से पूजा करते ही हम, पावें निजपद तीर्थ को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।८।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।
जल चंदन अक्षत माला चरु, दीप धूप फल अर्घ्य लिया।
केवल 'ज्ञानमती' पद हेतू, जिनपद पंकज अर्घ्य किया।।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पावें शिवपद तीर्थ को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।९।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—सोरठा—

सरयूनदि का नीर, कंचन झारी में भरा।
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा शं करे।।१०।।

शांतये शांतिधारा

वकुल कमल कल्हार, पुष्पांजलि करते यहाँ।
मिले सौख्य भंडार, यश सौरभ चहुंदिश भ्रमें।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः

—प्रत्येक अर्घ्य-(शंभु छंद)—

(इति मंडलस्योपरि प्रथमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।)

आषाढ़ वदी दुतिया के जहाँ, कृतयुग का प्रथम महोत्सव था।
प्रभु ऋषभदेव के गर्भकल्याणक, का वह पहला उत्सव था।।

उस तीर्थ अयोध्या जी के प्रति, मेरा यह अर्घ्य समर्पण है।
हो गर्भवास दुख नाश मेरा, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवगर्भकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चैत्र कृष्ण नवमी तिथि को, जहाँ ऋषभदेव का जन्म हुआ।
माता मरुदेवी का आंगन, एवं त्रिलोक भी धन्य हुआ।।
पितु नाभिराय ने जहाँ किमिच्छक, दान सभी को बाँटा था।
उस नगरि अयोध्या को वन्दूँ, जहाँ लगा देव का तांता था।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवजन्मकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ चैत्र वदी नवमी को, नीलांजना नृत्य प्रभु ने देखा।
उसकी मृत्यु लख जीवन की, क्षणभंगुरता का क्षण देखा।।
वैरागी वृषभेश्वर ने जहाँ, जाकर दीक्षा धारण की थी।
वह तीर्थ प्रयाग प्रसिद्ध हुआ मैं पूजूँ मुझे मिले सिद्धी।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवदीक्षाकल्याणक पवित्रप्रयागतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि ग्यारस तिथि को, केवलज्ञान प्रभू ने प्राप्त किया।
तब पुरिमतालपुर में धनपति ने, समवसरण निर्माण किया।।
नृप वृषभसेन ने दीक्षा लेकर, गणधर का पद प्राप्त किया।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमन करूँ, वृषभेश्वर ने जहाँ ज्ञान लिया।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रपुरिमतालपुर[१]-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ का गर्भागम, कल्याणक हुआ अयोध्या में।
वदि ज्येष्ठ अमावस धनपति ने, बरसाये रत्न अयोध्या में।।
उस नगरी का अर्चन करने को, अर्घ्य सजाकर लाया हूँ।
तीर्थंकर की शाश्वत नगरी को, वन्दन करने आया हूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथगर्भकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

१. आज इसको भी प्रयाग में ही माना जाता है।

जहाँ अजितनाथ का जन्मकल्याण, मनाने इन्द्र सभी आये।
शुभ माघ शुक्ल दशमी तिथि को, त्रैलोक्य के प्राणी हरषाये।।
उस पावन भूमि अयोध्या का, अर्चन सबको सुखकारी है।
तीर्थंकर श्री अजितेश्वर के, चरणों में धोक हमारी है।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथजन्मकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उस नगरी का सुन्दर वैभव भी, नहीं लुभा पाया प्रभु को।
शुभ माघ शुक्ल नवमी के दिन, वैराग्य हुआ अजितेश्वर को।।
साकेतपुरी के बाग सहेतुक, में जाकर दीक्षाधारी।
उस त्यागभूमि को अर्घ्य चढ़ा, चरणों में जाऊँ बलिहारी।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साकेतपुरी में अजितनाथ का, केवलज्ञान कल्याणक है।
तिथि पौष शुक्ल ग्यारस का दिन, परमातमपद का ज्ञायक है।।
उस तीर्थ अयोध्या की रज में, पावनता सदा महकती है।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमूँ, ज्ञान की वर्षा जहाँ बरसती है।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रअयोध्या-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख शुक्ल षष्ठी तिथि में, सिद्धार्था माँ के आँगन में।
साकेतपुरी में रत्न बरसते, पिता स्वयंवर के घर में।।
चौथे तीर्थंकर अभिनंदन, प्रभु का गर्भागम उत्सव था।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमूँ अयोध्या, तीरथ सचमुच शाश्वत था।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथगर्भकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन जिन का जन्म हुआ, तब इन्द्र सिंहासन डोल उठा।
तिथि माघ शुक्ल द्वादशि के दिन, तीनों लोकों में शोर मचा।।
रत्नों की वर्षा हुई पिता ने, दान किमिच्छक बांट दिया।
उस पुण्यभूमि को अर्घ्य चढ़ा, मैंने भी आनंद प्राप्त किया।।१०।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथजन्मकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस जगह प्रभू ने मेघों का, इक सुंदर नगर बसा देखा।
वैराग्य प्राप्त हो गया तुरत, जब वही नगर विनशा देखा।।
जग की नश्वरता लख वन में, जाकर दीक्षित हो गये प्रभो।
उस नगरि अयोध्या को पूजूं, हे अभिनन्दन जगवंद्य प्रभो।।११।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथदीक्षाकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयकार अयोध्या में गूंजी, जब पौष शुक्ल चौदश आई।
अभिनंदन प्रभु के तीर्थंकर, शुभ कर्म की प्रकृति उदय आई।।
धनपति ने समवसरण रचना, कर दी तुरंत गगनांगण में।
उस पावन भू को अर्घ्य चढ़ा, चाहूँ तीरथ का दर्शन मैं।।१२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रअयोध्या-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला दुतिया तिथि में, जहाँ सुमतिनाथ जी गर्भ बसे।
जिस जगह मेघरथ राजा की रानी, को सोलह स्वप्न दिखे।।
पितु मात की पूजा करने को, तब इन्द्र सपरिकर थे आये।
उस गर्भकल्याणक भूमी की, पूजन कर हम सब हरषाये।।१३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथगर्भकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलावती माता ने जहाँ, प्रभु सुमतिनाथ को जन्म दिया।
तिथि चैत्र शुक्ल एकादशि ने, साकेतपुरी को धन्य किया।।
पर्वत सुमेरु पर ले जाकर, सौधर्म इन्द्र ने न्हवन किया।
उस जन्मभूमि को अर्घ्य चढ़ा, हम सबने पावन जनम किया।।१४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथजन्मकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी नवमी को जहाँ, प्रभु सुमति को जातिस्मरण हुआ।
दीक्षा का भाव प्रगटते ही, लौकान्तिक सुर आगमन हुआ।।

उद्यान सहेतुक में जाकर, वस्त्राभरणों का त्याग किया।
उस त्यागभूमि को अर्घ्य चढ़ा, हमने सुख का साम्राज्य लिया।।१५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साकेतपुरी का वह उपवन, फिर से इक बार प्रफुल्लित था।
जहाँ चैत्र सुदी ग्यारस के दिन, कैवल्य दिवाकर प्रगटित था।।
उस ज्ञानकल्याणक के प्रतीक में, समवसरण निर्माण हुआ।
जो अर्घ्य चढ़ाकर नमन करें, उनका सचमुच कल्याण हुआ।।१६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रअयोध्या-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदी एकम तिथि जहाँ, माँ श्यामा ने देखे सपने।
जिनवर अनंत का गर्भकल्याण, मनाने आये देव घने।।
नृप सिंहसेन साकेतपती ने, सपनों का फल बतलाया।
उस तीर्थ अयोध्या की पूजन को, थाल सजा कर मैं लाया।।१७।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथगर्भकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुण्डावसर्पिणी काल अयोध्या, नगरी का इतिहास बना।
यहाँ पाँच प्रभू के जन्म में, अन्तिम प्रभु अनंत का धाम बना।।
शुभ ज्येष्ठ वदी बारस तिथि को, सुर मुकुट स्वयं ही नम्र हुए
उस पुण्य धरा को अर्घ्य चढ़ा, तीरथवन्दन के भाव हुए।।१८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथजन्मकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक बार देख उल्का गिरते, जिनवर अनंत ने दीक्षा ली।
निज जन्मतिथी में ही प्रभु ने, परिकर व प्रजा को शिक्षा दी।।
क्षणभंगुर इस मानव तन से, अविनश्वर पद को पाना है।
इसलिए त्यागमय धरती को, श्रद्धा से अर्घ्य चढ़ाना है।।१९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फिर उसी अयोध्या में अनंत, तीर्थंकर प्रभु को ज्ञान मिला।
उग्रोग्र तपस्या के द्वारा, जहाँ समवसरण का धाम मिला।।
वह चैत्र अमावस्या का दिन, सबने दिव्यध्वनि पान किया।
आठों द्रव्यों का अर्घ्य चढ़ा, मैंने निज में विश्राम किया।।२०।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रअयोध्या-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य—

जो नगरि अयोध्या तीर्थंकर की, शाश्वत जन्मभूमि मानी।
इस युग के पाँच जिनेश्वर के ही, जन्म से वह पावन मानी।।
सबके कल्याणक से पवित्र, साकेतपुरी का अर्चन है।
पूर्णार्घ्य समर्पण करके, तीर्थ व तीर्थंकर को वंदन है।।२१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथादिपंचतीर्थंकरकल्याणक पवित्र अयोध्यातीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—शंभु छन्द—

हे नाथ! आपके गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाये हैं।
भक्ती से प्रभु के चरणों में, गुणमाल चढ़ाने आये हैं।।
है धन्य अयोध्यापुरी जहाँ, श्री आदिनाथ ने जन्म लिया।
जिन अजितनाथ अभिनंदन सुमती, प्रभु अनंत ने धन्य किया।।
कैलाशगिरी से वृषभदेव जिन, मोक्षधाम को पाये हैं।।हे०।।१।।

सम्राट् भरतचक्री ने दीक्षा ले, शिवपद को प्राप्त किया।
इक्ष्वाकुवंशि[१] नृप चौदह लाख हि, लगातार शिवधाम लिया।।

ये पुरी विनीता के जन्में, परमात्मधाम को पाये हैं।।
हे नाथ! आपके गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाये हैं।।२।।

बाहुबलि कामदेव ने जीत, भरत को फिर दीक्षा धरके।
प्रभु एक वर्ष थे ध्यान लीन, तन बेल चढ़ी अहि भी लिपटे।।
फिर केवलज्ञानी बनें नाथ, हम गुण गाके हर्षाये हैं।।हे नाथ०।।३।।

श्री अजितनाथ आदिक चारों, तीर्थंकर सम्मेदाचल से।
शिवधाम गये इन्द्रादिवंद्य, हम नित वंदें, मन वच तन से।।
धनि धन्य अयोध्या जन्मस्थल, शिवथल वंदत हर्षाये हैं।।हे ०।।४।।

चक्रीश सगर आदिक यहाँ के, कर्मारि नाश शिव लिया अहो।
श्री रामचन्द्र ने इसी अयोध्या को, पावन कर दिया अहो।।
मांगीतुंगी से मोक्ष गये, इन वंदत पुण्य बढ़ाये हैं।।हे नाथ०।।५।।

युग की आदी में आदिनाथ, पुत्री ब्राह्मी सुंदरी हुई।
पितु से ब्राह्मी औ अंकलिपी, पाकर विद्या में धुरी हुई।।
पितु से दीक्षा ले गणिनी थीं, इनके गुण सुर नर गाये हैं।। हे०।।६।।

इनके पथ पर अगणित नारी, ने चलकर स्त्रीलिंग छेदा।
आर्यिका सुलोचना ने ग्यारह, अंगों को पढ़ जग संबोधा।।
दशरथ माँ पृथिवीमती आर्यिका, को हम शीश नमाये हैं।।हे०।।७।।

सीता ने अग्निपरीक्षा में, सरवर जल कमल खिलाया था।
पृथ्वीमति गणिनी से दीक्षित, आर्यिका बनी यश पाया था।।
श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण लवकुश, सब दुःखी हृदय गुण गाये हैं।। हे०।।८॥

सीता ने बासठ वर्षों तक, बहु उग्र उग्र तप तप करके।
तैंतिस दिन सल्लेखना ग्रहण, करके सुसमाधि मरण करके।।
अच्युत दिव में होकर प्रतीन्द्र, रावण को बोध कराये हैं।।हे०।।९।।

१. अयोध्या में भरत को आदि लेकर चौदह लाख इक्ष्वाकुवंशीय राजा बिना व्यवधान के लगातार मोक्ष गये हैं। हरिवंश पु. सर्ग १३ श्लोक १३।

जय जय रत्नों की खान रत्नगर्भा, रत्नों की प्रसवित्री।
जय जय साकेतापुरी अयोध्यापुरी, विनीता सुखदात्री।।
जय जयतु अनादिनिधन नगरी, हम वंदन कर हर्षाये हैं।।हे०।।१०।।

बस काल दोष से इस युग में, यहाँ पांच तीर्थंकर जन्म लिये।
सब भूत भविष्यत् कालों में, चौबिस जिन जन्मभूमि हैं ये।।
हम इसका शत शत वंदन कर, अतिशायी पुण्य कमाये हैं।।हे०।।११।।

जय जय तीर्थंकर भरत सगर, जय रामचन्द्र लव कुश गुणमणि।
जय जयतु आर्यिका ब्राह्मी माँ, सुंदरी व सीता साध्वीमणि।।
हम केवल 'ज्ञानमती' हेतू, तुम चरणों शीश झुकाये हैं।।हे ०।।१२।।

जय जयतु अयोध्या जिस निकटे, है टिकैतनगर जहाँ जन्म लिया।
जय जयतु आर्यिका रत्नमती, जिनने निज जीवन धन्य किया।।
ब्राह्मी माँ की पदधूलि बनूं, यह भाव हृदय लहराये हैं।
हे नाथ! आपके गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाये हैं।।हे०।।१३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथ तीर्थंकर जन्मभूमि अयोध्यातीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.–3)

श्रावस्ती तीर्थ पूजा

—स्थापना (शंभु छंद) —

श्री संभव जिन के जन्मकल्याणक, से पावन श्रावस्ती है।
जहाँ मात सुषेणा के आँगन में, हुई रत्न की वृष्टी है।।
उस श्रावस्ती तीरथ की पूजन, करके पुण्य कमाना है।
आह्वानन स्थापन करके, आत्मा में तीर्थ बसाना है।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमि श्रावस्तीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री संभवनाथ जन्मभूमि श्रावस्तीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री संभवनाथ जन्मभूमि श्रावस्तीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (नंदीश्वर पूजा की चाल) —

कंचन झारी में नीर, लेकर धार करूँ।
हो जाऊँ भवदधि तीर, ऐसे भाव करूँ।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन कर्पूर मिलाय, घिस कर लाऊँ मैं।
संसार ताप मिट जाय, शांति पाऊँ मैं।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्वल धौत, तंदुल लाया मैं।
अक्षयपद प्राप्ती हेतु, पुंज चढ़ाया है।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ले भाँति भाँति के फूल, माला गूंथ लिया।
नश जायं काम के शूल, प्रभु पद पूज लिया।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य थाल भर लाय, निकट चढ़ाऊँ मैं।
मम क्षुधारोग नश जाय, निज गुण पाऊँ मैं।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति जलाय, आरति करना है।
मम मोह नष्ट हो जाय, निज गुण वरना है।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर गंध सुगंधित धूप, अग्नी में ज्वालूँ।
मिल जावे सौख्य अनूप, कर्म अरी ज्वालूँ।।

श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेव बादाम, फल को लाऊँ मैं।
हो आतम में विश्राम, अतः चढ़ाऊँ मैं।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
''चन्दना'' धूप फल युक्त, तीरथ अर्घ्य दिया।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—शेर छंद—

जिस तीर्थ की पवित्रता स्वयं प्रसिद्ध है।
उसके लिए जलधार तो बस इक निमित्त है।।
आत्मा में शांति एवं जग भर में शांति हो।
त्रयधार देके तीन रत्न मुझको प्राप्त हों।।

शांतये शांतिधारा।

फूलों के जिस उद्यान में संभव प्रभू खेले।
उद्यान वह साक्षात् नहिं श्रावस्ती में भले।।
लेकिन वही संकल्प तुच्छ पुष्पों में किया।
पुष्पांजली के द्वारा भक्ति को प्रगट किया।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मंडलस्योपरि द्वितीयदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—प्रत्येक अर्घ्य (शंभु छंद) —

फाल्गुन सुदि अष्टमि को जहाँ पर, माता को सोलह स्वप्न दिखे।
दृढ़रथ राजा ने बतलाया, तुम गर्भ में श्रीजिनराज बसे।।
श्रावस्ती में उससे छह महिने, पहले रत्न बरसते थे।
मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ उसको यहाँ, आने को इन्द्र तरसते थे।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथगर्भकल्याणक पवित्रश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि पूनो को जहाँ पर, संभव जिनवर का जन्म हुआ।
दृढ़रथ पितु मात सुषेणा के संग, जहाँ का कण-कण धन्य हुआ।।
पितु दान किमिच्छक बाँट रहे, थे जहाँ पुत्र-जन्मोत्सव पर।
उस जन्मकल्याणक से पवित्र, श्रावस्ती की पूजा रुचिकर।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मकल्याणक पवित्रश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ ब्याह किया औ राज्य किया , बहुतेक समय संभवप्रभु ने।
फिर मेघ विघटते देख वहीं, वैराग्य भाव धारा प्रभु ने।।
श्रावस्ती में उस मगशिर पूनो, को लौकांतिक सुर आये।
दीक्षा कल्याणक से पवित्र, श्रावस्ती के हम गुण गायें।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावस्ती में तपकर के संभव, जिन को केवलज्ञान हुआ।
उद्यान सहेतुक में शाल्मलि, तरु नीचे प्रगटित ज्ञान हुआ।।
मगशिर वदि चौथ तिथी को जहाँ पर, अधर बना था समवसरण।
उस पावन समवसरण भूमी को, अर्घ्य चढ़ाकर करूँ नमन।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रश्रावस्ती तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य (दोहा) —

चार कल्याणक से सहित, पावन तीर्थ महान।
श्रावस्ती को अर्घ्य दे, चाहूँ आतमज्ञान।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथगर्भजन्मतपज्ञानचतुःकल्याणक पवित्रश्रावस्ती-तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—शंभु छन्द —

जय जय तीर्थंकर संभवप्रभु की, जन्मभूमि मंगलकारी।
जय जय श्रावस्ती नगरी की, देवोपुनीत महिमा भारी।।
सौधर्म इन्द्र जिस नगरी की, त्रय प्रदक्षिणा कर आया था।
अपने संग में शचि इन्द्राणी एवं परिकर बहु लाया था।।१।।

जब गर्भ में तीर्थंकर आये, तब उत्सव गर्भकल्याण किया।
पितु माता की पूजा करके, वस्त्रादिक से सम्मान किया।।
श्री ह्री धृति आदि देवियों को, माता की सेवा में लाये।
त्रैलोक्यपती के जनक और जननी के गुण गा हरषाये।।२।।

जब जन्म लिया तीर्थंकर ने, तब श्रावस्ती का क्या कहना।
वहाँ का हर कण रोमांचित था, फिर मात पिता का क्या कहना।।
स्वर्णिम शरीर की आभा को, दो नेत्र से इन्द्र न देख सका।
तब सहस नेत्र कर देख-देख, वह प्रभु दर्शन कर नहीं थका।।३।।

जन्मोत्सव मेरुसुदर्शन पर, कर श्रावस्ती प्रभु को लाये।
वहाँ पुनः प्रभू का जन्मोत्सव, लख पुरवासी भी हरषाये।।
श्रावस्ती के हर घर में संभव-नाथ प्रभू की चर्चा थी।
हर नगर गली औ शहरों में, संभवजिन की ही अर्चा थी।।४।।

तीर्थंकर क्रम में सभी जानते, अश्वचिन्ह से संभव को।
संभव जिन तीर्थंकर बनकर, करते थे कार्य असंभव को।।
भोजन न किया श्रावस्ती का, दीक्षा से पहले जिनवर ने।
दीक्षा लेकर आहार हेतु, चर्या करते थे घर-घर वे।।५।।

संभव के चार कल्याणक से, पावन श्रावस्ती नगरी है।
उनके निर्वाणकल्याणक से, पावन सम्मेदशिखर गिरि है।।
अब यहाँ मुख्यतः जन्मभूमि, अर्चन का भाव बनाया है।
उसके माध्यम से और सभी, कल्याणक का क्रम आया है।।६।।

शब्दों में शक्ति नहीं प्रभु जी, बस भाव तीर्थ पूजन का है।
''चन्दनामती'' तीरथ गाथा, कहने को शब्द भला क्या हैं।।
इन्द्रों मुनियों से वंद्य जन्म, नगरी को वन्दन करना है।
श्रावस्ती नगरी के प्रति यह, जयमाल समर्पित करना है।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद —

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.–4)

कौशाम्बी तीर्थ पूजा

तर्ज– आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं.....

पदमचिन्ह युत पदमप्रभू की, जन्मभूमि वन्दना करें।
कौशाम्बी शुभ तीर्थ ऐतिहासिक, की हम अर्चना करें।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्।।टेक.।।

कौशाम्बी में धरणराज की, रानी एक सुसीमा थीं।
जिनके सुख वैभव की धरती, पर नहिं कोई सीमा थी।।
इन्द्रों द्वारा पूज्य वहाँ की, पावन रज वन्दना करें।
कौशाम्बी शुभ तीर्थ ऐतिहासिक, की हम अर्चना करें।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्।।१।।

चार कल्याणक पदमप्रभू के, इन्द्र ने यहीं मनाये हैं।
हम उनकी पूजा हेतु, आह्वानन करने आये हैं।।
यमुना तट पर बसे तीर्थ की, मुनिगण भी वंदना करें।
कौशाम्बी शुभ तीर्थ ऐतिहासिक, की हम अर्चना करें।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजन्मभूमि कौशाम्बी तीर्थक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजन्मभूमि कौशाम्बी तीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजन्मभूमि कौशाम्बी तीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक– (शंभु छन्द) —

जब-जब काया पर मैल चढ़ा, मैंने जल से स्नान किया।
निज मन का मैल हटाने को, तीरथ के लिए प्रस्थान किया।।

कौशाम्बी नगरी पद्मप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब दुर्गन्ध मिली मुझको, मैं द्रव्य सुगंधित ले आया।
अब आत्मसुगंधी पाने को, चन्दन मलयागिरि घिस लाया।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जब जब मुझ पर संकट आया, मैंने कुदेव की शरण लिया।
अब ज्ञान मिला तो अक्षत ले, अक्षय पद हेतु समर्प्य दिया।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब विषयों की आश जगी, भोगों में सुख मैंने माना।
अब ज्ञान मिला तो पुष्पों से, प्रभु पूजन करने को ठाना।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब काया को भूख लगी, स्वादिष्ट सरस व्यंजन खाया।
अब ज्ञान हुआ तो व्यंजन का, भर थाल अर्चना को लाया।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब देखा कुछ अंधकार, विद्युत प्रकाश को कर डाला।
अब जाना प्रभु आरति करके, मिलता है अन्तर उजियाला।।

कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब निद्रा मैंने चाही, कमरे में धूप जलाया है।
अब जाना असली तथ्य अतः, पूजन में उसे चढ़ाया है।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब कोई भी फल देखा, खाने की इच्छा प्रबल हुई।
अब जाना तथ्य मोक्ष फल का, तो पूजन इच्छा प्रबल हुई।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब मैंने आठों द्रव्यों का, स्वर्णिम थाल सजाया है।
तब-तब मैंने ''चन्दनामती'', लोकोत्तर वैभव पाया है।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

यूँ तो जल कितना बहता है, उसकी नहिं कुछ सार्थकता है।
पूजन में प्रासुक जल से, जलधारा की ही सार्थकता है।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।

शांतये शांतिधारा

यूँ तो उपवन में फूल, बहुत गिरते मुरझाते रहते हैं।
प्रभु सम्मुख पुष्पांजलि करके, उनके भी भाग्य निखरते हैं।।
कौशाम्बी नगरी पद्मप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।

दिव्य पुष्पांजलिः

—प्रत्येक अर्घ्य (शेर छन्द) —

(इति मंडलस्योपरि तृतीयदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जहाँ माघ कृष्णा छठ गरभ कल्याण हुआ था।
माता सुसीमा को हरष अपार हुआ था।।
राजा धरण की नगरी में इन्द्र थे आये।
उस तीर्थ कौशाम्बी को सभी अर्घ्य चढ़ायें।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभगर्भकल्याणक पवित्रकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदी तेरस को जहाँ प्रभु जनम हुआ।
इन्द्राणी ने प्रसूतिगृह में जा दरश किया।।
सुरपति ने प्रभु को गोद में ले नृत्य था किया।
उस जन्मभूमि के लिए अब अर्घ्य मैं दिया।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजन्मकल्याणक पवित्रकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मरण से प्रभु जहाँ विरक्त हुए थे।
कार्तिक वदी तेरस को वे निवृत्त हुए थे।।
कौशाम्बि में प्रभासगिरि पे दीक्षा ले लिया।
अतएव अर्घ्य मैंने तीर्थ को चढ़ा दिया।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभदीक्षाकल्याणक पवित्रकौशाम्बीअन्तर्गत-प्रभासगिरितीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तप कर जहाँ प्रभु घातिया कर्मों को नशाया।
शुभ चैत्र सुदि पूनम तिथी कैवल्य को पाया।।
धनपति ने आ तुरन्त समवसरण बनाया।
अतएव पभौषा को मैंने अर्घ्य चढ़ाया।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रकौशाम्बीअन्तर्गत-प्रभासगिरितीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य दोहा —

चार कल्याणक से सहित, पावन तीर्थ महान।
कौशाम्बी व प्रभासगिरि, को दूँ अर्घ्य महान।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभगर्भजन्मतपज्ञान चतुःकल्याणक पवित्र कौशाम्बी-प्रभासगिरि तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

तर्ज-चाँद मेरे आ जा रे.....

तीर्थ का अर्चन करना है-२,
श्री पद्मप्रभ की जन्मभूमि कौशाम्बी को भजना है।।
तीर्थ का.।।टेक०।।

नौका सम जो प्राणी को, भवदधि से पार लगाते।
इस धरती पर वे स्थल, ही पावन तीर्थ कहाते।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।१।।

मिश्री से मिश्रित आटा, मीठा जैसे हो जाता।
तीर्थंकर कल्याणक से, वैसे ही तीर्थ बन जाता।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।२।।

तीर्थों की इस श्रेणी में, कौशाम्बी तीर्थ है पावन।
तीर्थंकर पद्मप्रभू की, वह जन्मभूमि मनभावन।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।३।।

प्रारंभिक चार कल्याणक, पद्मप्रभु के माने हैं।
वहीं पास पपौसा तीरथ पे, तप व ज्ञान माने हैं।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।४।।

महावीर प्रभू भी आये, थे कौशाम्बी नगरी में।
आहार दिया था जहाँ पर, उनको चन्दना सती ने।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।५।।

यह अर्घ्य थाल अर्पित है, कौशाम्बी तीर्थ चरण में।
आत्मा को तीर्थ बनाने, का भाव मेरे है मन में।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।६।।

कौशाम्बी एवं उसके, नजदीक प्रभाषगिरी है।
''चन्दनामती'' दोनों ही, कल्याणक पूज्य मही हैं।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद —

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.–5)

वाराणसी तीर्थ पूजा

—स्थापना (शंभु छंद) —

जिस वाराणसि नगरी का हमने, नाम सुना है ग्रंथों में।
जो पावन और पवित्र सुपारस, पार्श्वनाथ के चरणों से।।
उस जन्मभूमि तीरथ की पूजन, हेतु करूँ आह्वानन मैं।
स्थापन सन्निधिकरण करूँ, वाराणसि तीर्थ का अर्चन मैं।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथ पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी तीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथ पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी तीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथ पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी तीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (शंभु छंद) —

हे नाथ! विषयसुख की इच्छा में, मैंने निज को भरमाया।
लेकिन दुःखों की वैतरणी में, किंचित् भी सुख नहिं पाया।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधाग्नी में जलकर अब तक, अपना सर्वस्व लुटाया है।
अब चंदन से पूजा करने का, भाव हृदय में आया है।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयनिधि की पहचान बिना, जड़ को आत्मा मैंने माना।
पूजन में अक्षत पुंज चढ़ा, अब चाहूँ अक्षय पद पाना।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं कामभोग की मदिरा से, अब तक मतवाला बना रहा।
उसकी संतृप्ति हेतू मैं, अब पुष्पमाल को चढ़ा रहा।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इस क्षुधा रोग की ज्वाला से, भव भव में जलता आया हूँ।
उस ज्वाला की उपशांति हेतु, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्री सुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार में पड़ा-पड़ा, संसार में ही परिभ्रमण किया।
वह मोह दूर करने हेतू, दीपक का अब अवलंब लिया।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का इस आत्मा के संग, बंधन अनादि से चला किया।
उस बन्धन से मुक्ती हेतू, मैं धूप अग्नि में जला दिया।।

वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इतने फल भव-भव में खाये, उसका फल क्या पाया मैंने।
उत्तम शिवफल की आश में अब, फल थाल चढ़ाया है मैंने।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सांसारिक अभिलाषाओं में, नहिं पद अनर्घ्य पहचान सका।
''चन्दनामती'' अब अर्घ्य लिये, किंचित् उस पद को जान सका।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

गंगनदी का नीर ले, करूँ तीर्थ पर धार।
आत्मा भी निर्मल बने, पाऊँ शांति अपार।।

शांतये शांतिधारा।

वाराणसि उद्यान के, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, वाराणसि के माँहि।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

प्रत्येक अर्घ्य (शंभु छंद)

(इति मंडलस्योपरि चतुर्थदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

भादों सुदि षष्ठी को जहाँ गर्भ, कल्याणक हुआ सुपारस का।
इन्द्रों ने तब उत्सव कीना, जिनवर के गर्भकल्याणक का।।

राजा सुप्रतिष्ठ की रानी पृथ्वी-षेणा भी तब पूज्य बनी।
उस गर्भागम से पावन नगरी, वाराणसि भी वंद्य घनी।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथगर्भकल्याणक पवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ज्येष्ठ सुदी बारस तिथि में, जहाँ श्रीसुपार्श्व ने जन्म लिया।
उन जन्मकल्याणक घड़ियों ने, वाराणसि नगरी धन्य किया।।
स्वर्गों में वाद्य स्वयं बाजे, इन्द्रासन भी कम्पा उस क्षण।
उस जन्मभूमि वाराणसि की, अर्चना किया करते सुरगण।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथजन्मकल्याणक पवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वाराणसि के उपवन में ही, जिनवर सुपार्श्व ने दीक्षा ली।
ऋतु परिवर्तन लख हो विरक्त, मोही परिजन को शिक्षा दी।।
वह तिथि भी ज्येष्ठ सुदी बारस, जब दीक्षा स्वयं लिया प्रभु ने।
दीक्षाकल्याणक से पवित्र, नगरी को अर्घ्य दिया मैंने।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वाराणसि के उद्यान सहेतुक, में शिरीष तरु के नीचे।
फाल्गुन वदि छट्ठ तिथी को केवल-ज्ञान प्राप्त किया जिनवर ने।।
घाती कर्मों का कर विनाश, शुभ समवसरण लक्ष्मी पाया।
मैं इसीलिए वाराणसि तीरथ, की पूजन करने आया।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रवाराणसी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

फिर बाद करोड़ों वर्ष जहाँ, प्रभु पार्श्वनाथ इतिहास चला।
वैशाख कृष्ण दुतिया को गर्भ-कल्याणक उत्सव वहाँ मना।।
पितु अश्वसेन माता वामा के, महलों में सुरगण आये।
उस पावन तीर्थ बनारस को, हम अर्घ्य चढ़ाकर हरषाये।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथगर्भकल्याणक पवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष कृष्ण ग्यारस को, पारसनाथ जहाँ पर जन्मे थे।
मेरूपर्वत की पांडुशिला पर, अभिषव किया था इन्द्रों ने।।
उस जन्मकल्याणक से पावन, नगरी को अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं।
वाराणसि तीरथ है प्रसिद्ध, उसकी गुणगाथा गाऊँ मैं।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजन्मकल्याणक पवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ ऋषभदेव गुणगाथा सुन, पारसप्रभु को वैराग्य हुआ।
तिथि पौष वदी ग्यारस को प्रभु ने, राजपाट सब त्याग दिया।।
उन बालब्रह्मचारी प्रभु के, चरणों में शीश झुका मेरा।
उनकी दीक्षाभूमी वाराणसि, को है कोटि नमन मेरा।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जब पार्श्वनाथ भगवान ध्यान में, लीन तपस्या में रत थे।
उपसर्ग किया तब पूर्व जन्म के, बैरी उस कमठासुर ने।।
धरणेंद्र और पद्मावती ने, उपसर्ग प्रभू का दूर किया।।
हुआ केवलज्ञान जहाँ प्रभु को, अहिच्छत्र तीर्थ वह पूज्य हुआ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथ केवलज्ञानकल्याणक पवित्रअहिच्छत्रतीर्थ-क्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य—

जिनवर सुपार्श्व अरू पार्श्वनाथ के, कल्याणक से पावन जो।
उनके प्राचीन कथानक से, है प्रसिद्ध तीर्थ बनारस वो।।
उस तीरथ से प्रार्थना मेरी, आत्मा भी तीरथ बन जावे।
मैं पूर्ण अर्घ्य अर्पित करता, मुझको अनर्घ्य पद मिल जावे।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथगर्भजन्मादिकल्याणक पवित्र-वाराणसि तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—शंभु छंद—

शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।
प्रभु श्रीसुपार्श्व अरु पार्श्वनाथ की, जन्मभूमि को सदा नमन।।टेक.।।

तीर्थंकर श्री वृषभेश्वर की, आज्ञा से बसी नगरियाँ थीं।
उनमें से ही प्रसिद्ध वाराणसि, आदि कई नगरियाँ थीं।।
यहाँ प्रथम आदि तीर्थंकर के, चलते रहते थे सदा भजन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।१।।

जब-जब स्वर्गों से च्युत होकर, तीर्थंकर यहाँ जनमते थे।
तब-तब धनपति आकर रुचि से, बहुमूल्य रत्न बरसाते थे।।
माता की सेवा करके अष्ट, कुमारी होती थीं प्रसन्न।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।२।।

दो बार हुई पन्द्रह-पन्द्रह, महिने तक यहाँ रतन वर्षा।
सौधर्म इन्द्र इक सहस नेत्र से, प्रभु को देख-देख हर्षा।।
मेरूपर्वत की पाण्डुशिला पर, किया प्रभू का जन्म न्हवन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।३।।

भगवान जहाँ खेले एवं, स्वर्गों का भोजन किया जहाँ।
तीर्थंकर श्रीसुपार्श्व जिन ने, राजा बन राज्य किया था जहाँ।।
युवराज पार्श्व ने दीक्षा ली, स्वयमेव बालब्रह्मचारी बन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वंदन।।४।।

सम्मेदशिखर से मोक्ष गये, पारस सुपार्श्व द्वय तीर्थंकर।
उपसर्ग हुआ अहिछत्र में, केवलज्ञान लहा पारस जिनवर।।
तीर्थंकर प्रभु की पदरज से, धरती बन जाती नन्दनवन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।५।।

है वर्तमान में वाराणसि का, क्षेत्र भदैनी सुखकारी।
वह प्रभु सुपार्श्व की जन्मभूमि, मानी जाती मंगलकारी।।
भेलूपुर पारसनाथ जिनेश्वर, का कहलाता जन्मस्थल।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वंदन।।६।।

यह अर्घ्यथाल स्वीकार करो, आठों द्रव्यों से युक्त मेरा।
यह शब्दमाल स्वीकार करो, गुणवर्णन से संयुक्त मेरा।।
यह भक्तिमाल स्वीकार करो, भावों से मैं करता अर्चन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वंदन।।७।।

जन्मभूमि वाराणसी, है जग में सुप्रसिद्ध।
नमन ''चन्दनामति'' सदा, पूजन का है लक्ष्य।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.—6)

श्री चन्द्रपुरी तीर्थ पूजा

स्थापना —शंभु छन्द

अष्टम तीर्थंकर चन्द्रप्रभू की, जन्मभूमि है चन्द्रपुरी।
गर्भागम से केवलज्ञानी, बनने तक पावन हुई मही।।
उस चन्द्रपुरी तीरथ की पूजन, से पहले आह्वानन है।
स्थापन सन्निधिकरण सहित, जन्मस्थल का आराधन है।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (शंभु छन्द) —

जग में कुछ सुख है कुछ दुख है, मैंने तो अब तक यह जाना।
लेकिन यह भ्रम है गुरु कहते, जग में केवल दुख ही माना।।
निज जन्ममरण के नाश हेतु, पूजन में जल की धार करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को वन्दन बारम्बार करूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन अरु चंद्रकिरण मोती, गंगाजल यद्यपि शीतल हैं।
लेकिन जिनवर के पुण्यवचन, इस जग में शाश्वत शीतल हैं।।
पूजन में चन्दन चर्चन कर, संसार ताप को शांत करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को वन्दन बारम्बार करूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

छहखंडाधिप चक्री का भी, नहिं पद अक्षय रह पाया है।
बस मात्र अमूर्तिक आत्मा का, क्षय कभी न होने पाया है।।

उस आतम सुख की प्राप्ति हेतु, पूजन में अक्षत थाल धरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को वन्दन बारम्बार करूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यूँ तो पञ्चेन्द्रिय विषयों का, तीर्थंकर भी उपभोग करें।
पर उनको नश्वर समझ शीघ्र ही, उन्हें त्याग कर मोक्ष वरें।।
निज कामबाण विध्वंस हेतु, पूजन में पुष्प की माल धरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को वन्दन बारम्बार करूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हो कल्पवृक्ष का भोजन चाहे, शाश्वत तृप्ति न देता है।
वह तो खाते-खाते भी सबकी, क्षुधा वृद्धि कर देता है।।
शुद्धातम की संतृप्ति हेतु, पूजन में व्यंजन थाल भरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को वन्दन बारम्बार करूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो रत्नदीप या घृतदीपक, सबका प्रकाश क्षणभंगुर है।
केवल आत्मा का ज्ञानदीप, देता प्रकाश अविनश्वर है।।
मोहान्धकार के नाश हेतु, पूजन में दीपक थाल धरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को वन्दन बारम्बार करूँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शारीरिक सुख की प्राप्ति हेतु, जलती है धूप सभी घर में।
लेकिन उससे नहिं कर्मनाश, होते वह तो भव वृद्धि करें।।
उन कर्मों के विध्वंस हेतु, अग्नी में धूप प्रजाल करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को वन्दन बारम्बार करूँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमि चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तन की संपुष्टी हेतु न जाने, कितने फल खाए जाते।
लेकिन मन की संपुष्टि हेतु, वे फल भी कार्य न कर पाते।।
अब मोक्षमहाफल प्राप्ति हेतु, पूजन में फल का थाल भरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को वन्दन बारम्बार करूँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमि चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर प्रभु ने तप करके, जिस अष्टम वसुधा को पाया।
उसको पाने के लिए ''चन्दनामती'', अर्घ्य मैं ले आया।।
आत्मा को पूज्य बनाने हेतू, अष्टद्रव्य का थाल भरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को वन्दन बारम्बार करूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभुजन्मभूमि चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की प्राप्ती हेतू, त्रयधारा जल की मैं डालूँ।
निज आत्मा की शांती हेतू, शांतीधारा मैं कर डालूँ।।
पुर राज्य राष्ट्र की शांति हेतु, झारी से शांतीधार करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को वन्दन बारम्बार करूँ।।१०।।

शान्तये शांतिधारा

जीवन को पुष्पित करने का, शुभ भाव हृदय में आया है।
बस इसीलिए तीरथ पर, पुष्पांजलि करना मन भाया है।।
धरती का अंचल सजा रहे, पुष्पों का रंग अपार करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को वन्दन बारम्बार करूँ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मंडलस्योपरि पंचमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—प्रत्येक अर्घ्य —

जहाँ चैत्र वदी पंचमि तिथि को, चन्द्रप्रभ गर्भ पधारे थे।
लक्ष्मणा मात महासेन पिता सह, धन्य सभी जग वाले थे।।

उस गर्भकल्याणक की नगरी, शुभ चन्द्रपुरी अतिप्यारी है।
गंगा तट बसी हुई नगरी को, पूजूँ वह सुखकारी है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभगर्भकल्याणक पवित्रचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिन महलों में चन्द्रप्रभ ने, तीर्थंकर बनकर जन्म लिया।
तिथि पौष कृष्ण एकादशि को भी, अपने जन्म से धन्य किया।।
उस नगरी में अद्यावधि भी, प्राचीन एक जिनमंदिर है।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर चन्द्रपुरी को, पाऊँ पद अतिसुन्दर है।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मकल्याणक पवित्रचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण में मुख लखकर जहाँ श्री, चन्द्रप्रभ को वैराग्य हुआ।
वदि पौष इकादशि को जहाँ जिनवर, को दीक्षा से राग हुआ।।
जिस नगरी का सर्वर्तुक वन भी, प्रभु दीक्षा से था पावन।
उस चन्द्रपुरी को अर्घ्य चढ़ा, मेरा खिल जावे मन उपवन।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभदीक्षाकल्याणक पवित्र चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उस चन्द्रपुरी के सर्वर्तुक वन, में ही केवलज्ञान हुआ।
फाल्गुन वदि सप्तमि तिथि को जहाँ पर, समवसरण निर्माण हुआ।।
श्रीचन्द्रप्रभ की ज्ञानकल्याणक, भूमि को शत-शत वंदन।
मस्तक पर पावन धूलि चढ़ा, मैं अर्घ्य चढ़ाकर करूँ नमन।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य—

चन्द्रप्रभ जी के चार कल्याणक, से पवित्र जो नगरी है।
चिरकाल बीत जाने पर वह, वीरान हो गई नगरी है।।

लेकिन उसकी रज लेने को, सब भक्त आज भी आते हैं।
उस तीरथ के पावन चरणों में, हम भी अर्घ्य चढ़ाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभगर्भजन्मदीक्षाज्ञानचतुःकल्याणक पवित्रचन्द्र-पुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

तर्ज-मनिहारों का वेष बनाया.....

मैंने पूजन का थाल सजाया,
पूजा करने का भाव है आया।।टेक.।।
गंगा यमुना नहाना है तीरथ नहीं,
मन को पावन बनाना है तीरथ सही।
सत्य का पंथ अब अपनाया,
पूजा करने का भाव है आया।।१।।
धूनी भस्म रमाना न तप है सही,
मन को निज वश में लाना ही तप है सही।
वही पथ मैंने अब अपनाया,
पूजा करने का भाव है आया।।२।।
मिथ्या भावों का जप-तप सभी व्यर्थ है,
क्रिया सम्यक्त्वयुत तप में ही अर्थ है।
वही सम्यक्त्व अब मैंने पाया,
पूजा करने का भाव है आया।।३।।
भव जलधि से जो तिरवाते वे तीर्थ हैं,
उनमें ही चन्द्रपुरि की अमर कीर्ति है।
चन्द्रप्रभ ने जनम जहाँ पाया,
पूजा करने का भाव है आया।।४।।
गर्भ जन्म व तप ज्ञान चारों हुए,
जहाँ पर कार्य उत्तम हजारों हुए।

उसका गुणगान अब मैंने गाया,
पूजा करने का भाव है आया।।५।।
पूज्यता उसके कण-कण में है आज भी,
जैन संस्कृति का पावन है इतिहास भी।
वही इतिहास मैंने भी गाया,
पूजा करने का भाव है आया।।६।।
स्वर्णथाली में पूजन की सामग्री है,
अर्घ्य के संग मिली उसमें मणियाँ भी हैं।
आठों द्रव्यों को क्रम से सजाया,
पूजा करने का भाव है आया।।७।।
मोक्ष सम्मेदगिरि से प्रभू ने लहा,
चन्द्रप्रभ टोंक अब भी बना है वहाँ।
उसका भी संस्मरण आज आया,
पूजा करने का भाव है आया।।८।।
अर्चना हो सफल तीर्थ बन पाऊँ मैं,
''चन्दनामति'' निजातम में रम जाऊँ मैं।
भाव मैंने ये मन में बनाया,
पूजा करने का भाव है आया।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(पूजा नं.—7)
काकन्दी तीर्थ पूजा

—स्थापना—

तर्ज-आओ बच्चों.....

चलो चलें काकन्दी नगरी, पुष्पदन्त को नमन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-२।।टेक.।।
चौबिस तीर्थंकर में से, श्रीपुष्पदन्त नवमें प्रभु हैं।
उनसे काकन्दी नगरी ने, प्राप्त किया वैभव सब है।।
इन्द्र मनुज भी आकर जिस, तीरथ को शत-शत नमन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-२।।१।।
आह्वानन स्थापन सन्निधिकरण, विधी हम करते हैं।
पूजन में काकन्दी नगरी, का स्थापन करते हैं।।
आत्मशक्ति प्रगटाने हेतु, तीर्थक्षेत्र का यजन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-२।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (स्रग्विणी छंद)—

स्वर्ण भृंगार में क्षीर सम नीर ले।
धार डालूँ तो मिट जाय भव पीर है।।

तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस के चन्दन मलयगिरि का लाया प्रभो।
भव का संताप मैंने नशाया विभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमि काकन्दीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शालि के पुंज से नाथ पूजा करूँ।
पूर्ण आनंदमय आत्मसुख को वरूँ।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमि काकन्दीतीर्थक्षेत्राय अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोगरा जूही चंपा चमेली कुसुम ।
तीर्थ पद में चढ़ा कर लहूँ पद विमल।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरियां लाडुओं से भरा थाल है।
रोग क्षुध नाश हेतू चढ़ाऊँ तुम्हें।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीपक की ज्योति जलाई प्रभो।
स्वर्ण थाली में आरति सजाई प्रभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप को अग्निघट में जलाऊँ प्रभो।
कर्म की धूम्र चहुँदिश उड़ाऊँ प्रभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अनंनास नींबू नरंगी लिया।
मोक्षफल आश से नाथ अर्पित किया।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि युत अर्घ्य अर्पण करूँ।
''चन्दना'' अर्घ्य प्रभु पद समर्पण करूँ।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुःख रंच ना।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शेरछन्द—

गंगानदी के नीर से त्रयधार करूँ मैं।
त्रयरत्न प्राप्ति हेतु शांतिधार करूँ मैं।।

शांतये शांतिधारा।

नाना तरह के पुष्प अंजुली में भर लिया।
पुष्पांजली कर मैंने आत्मसौख्य वर लिया।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(इति मंडलस्योपरि षष्ठदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—प्रत्येक अर्घ्य (शेर छन्द) —

फाल्गुन वदी नवमी जहाँ प्रभु गर्भ में आये।
काकन्दी में जयरामा माँ को स्वप्न दिखाये।।
उस गर्भकल्याणक से पूज्य भूमि को वन्दूँ।
काकन्दी को मैं अर्घ्य चढ़ा दुःख को खंडूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथगर्भकल्याणक पवित्रकाकन्दी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदी एकम को जन्म पुष्पदंत का।
काकन्दी में हुआ था जब त्रैलोक्य धन्य था।।
उस जन्मकल्याणक पवित्र तीर्थ को नमूँ।
कर अर्घ्य समर्पण प्रभू तीर्थेश को प्रणमूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मकल्याणक पवित्र काकन्दीतीर्थ-क्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदी एकम जहाँ वैराग्य हुआ था।
श्री पुष्पदंत जिनवर ने त्याग लिया था।।
काकन्दी का वह पुष्पक वन हो गया पावन।
उस तीर्थ को ही मेरा यह अर्घ्य समर्पण।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रकाकन्दी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदी दुतिया को जहाँ ज्ञान हुआ था।
जिनवर समवसरण का निर्माण हुआ था।।
काकन्दि उस पवित्र धरा को नमन करूँ।
मैं अर्घ्य चढ़ा घाति कर्म को हनन करूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र-काकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य (शेरछंद) —

श्रीपुष्पदंत जिनवर के चार कल्याणक।
सम्मेदगिरि से मोक्ष गये उनको नमूं नित।।
उन गर्भ जन्म तप व ज्ञान भूमि को जजूँ।
काकन्दि को पूर्णार्घ्य दे निज आत्मा भजूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथगर्भजन्मदीक्षाज्ञानचतुःकल्याणक पवित्रकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—गीताछन्द —

जय तीर्थ काकन्दी जगत में, जन्मभूमि जिनेन्द्र की।
जय चार कल्याणक धरा वह, पुष्पदन्त जिनेन्द्र की।।
जय मात जयरामा व पितु, सुग्रीव का शासन जहाँ।
जयवंत हो त्रैलोक्यपूज्य, जिनेन्द्र का शासन जहाँ।।१।।

शुभ स्वर्ग प्राणत का सुखी, जीवन व्यतीत किया प्रभो।
प्रकृती जो तीर्थंकर बंधी थी, उसकी थी महिमा प्रभो।।
माँ के गरभ में आने से, छह माह पहले से हुई।
काकन्दि नगरी में धनद, द्वारा रतन वर्षा हुई।।२।।

रोमांच होता है हृदय में, जन्म का क्षण सोचकर।
जब स्वर्ग पूरा आ गया था, इस धरा पर भक्तिवश।।
सौधर्म सुरपति की शची, इन्द्राणी का सौभाग्य था।
जिसने प्रसूतिगृह में जा, पहले किया प्रभुदर्श था।।३।।

मायामयी बालक को रख, माँ को किया निद्रामगन।
गोदी में लाकर जिनशिशू को, कर लिया जीवन सफल।।
फिर इन्द्र ने जिनराज दर्शन, हेतु नेत्र सहस किया।।
मेरू शिखर पर जा प्रभू के, जन्म का उत्सव किया।।४।।

भारत की ही धरती का यह, इतिहास पौराणिक रहा।
त्रेसठ शलाका पुरुषों का, जिसने कथानक है कहा।।
जहाँ विश्वमैत्री का सदा, संदेश देते ऋषि मुनी।
उस देश में ही जिनवरों के, जन्म की महिमा सुनी।।५।।

तीर्थंकरों की श्रेणि में, श्रीपुष्पदंत नवम कहे।
उनके जनम से धन्य, काकन्दीपुरी के नृप रहे।।
बीते करोड़ों वर्ष फिर भी, वह धरा तो पूज्य है।
पूजी सदा जाती रहेगी, उस धरा की धूल है।।६।।

जहाँ देख उल्कापात प्रभु, वैरागि बनकर चल दिये।
साम्राज्य और कुटुम्ब को, समझा क्षणिक सब तज दिये।।
दीक्षा लिया तप कर जहाँ, कैवल्यज्ञान प्रगट किया।
उस पुण्यथान जिनेन्द्र भूमी, का सदा अर्चन किया।।७।।

जयमाल में पूर्णार्घ्य का, यह थाल अर्पित कर दिया।
गुणमाल में निज आत्म का, उद्गार प्रगटित कर दिया।।
स्वीकार कर लो द्रव्य मेरा, तीर्थ अर्चन कर रहा।
भंडार भर दो ''चन्दनामति'', आत्मचिंतन चल रहा।।८।।

—दोहा—

पुष्पदन्त जन्मस्थली, काकन्दी शुभ तीर्थ।
अर्घ्य समर्पण कर प्रभो, पाऊँ आतम तीर्थ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं. –8)

भद्रिकापुरी तीर्थ पूजा

—स्थापना (बसन्ततिलका छन्द) —

शीतल जिनेन्द्र जन्मस्थल को जजूँ मैं।
श्री भद्रिकापुरी पुण्यस्थल भजूं मैं।।
आह्वाननं कर यहाँ प्रभु को बुलाऊँ।
उन जन्मभूमि की पूजा भी रचाऊँ।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (शंभु छन्द) —

सुरगंगा के प्रासुक जल से, सोने का कलशा भर लाया।
पूजा में सहज चढ़ाने को, मेरे अन्तर्मन में आया।।
अध्यात्म सुधारस पीकर के, भव भव की तृषा बुझाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वचनों सम शीतल चंदन, घिसकर कर्पूर मिला लाया।
तीरथ पद में चर्चन करने का, भाव सहज मन में आया।।
अपनी आत्मा में शीतलता का, भाव प्रगट करवाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु गुण सम धवल सुअक्षत के, पुंजों को मैं धोकर लाया।
पूजा में पुंज चढ़ाने को, मेरा अन्तर्मन हरषाया।।
निज शुद्ध अखंड प्राप्ति हेतु, अक्षत के पुंज चढ़ाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर कीर्ति सम पुष्पों से, पूजन का भाव हृदय आया।
अंजलि में भरकर पुष्प विविध, पुष्पांजलि मैंने बिखराया।।
हो नष्ट काम की व्यथा मेरी, आतमगुण को प्रगटाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर भावामृत पिण्ड सदृश, नैवेद्य सरस बनवाया है।
पावन रज की पूजन हेतू, भक्ति से चरू चढ़ाया है।।
क्षुधरोग विनाशन हो मेरा, इस चिन्तन को प्रगटाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के कैवल्यसूर्य सम, जगमगता दीपक लाया।
मन से प्रभु जन्मस्थल जाकर, आरति करके अति हर्षाया।।
कर मोह नाश निज आत्मा में, केवल रवि को प्रगटाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर गुण सुरभि सदृश मैंने, चंदनयुत धूप बनाई है।
कर्मों के विध्वंसन हेतु, अग्नी में धूप जलाई है।।

सब कर्ममलों से रहित शुद्ध, क्षायिकगुण मुझको पाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परमभाव सम सुखदायी, अमृतफल लेकर आया हूँ।
कर ध्यान प्रभू जन्मस्थल का, फल अर्पित करने आया हूँ।।
ज्ञानामृत फल आस्वादन कर, क्रम से शिवफल भी पाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल ले आया।
आठों द्रव्यों में रत्न मिला, ''चंदनामती'' मन हरषाया।।
प्रभु सम अनर्घ्य पद प्राप्ति हेतु, तीरथ को अर्घ्य चढ़ाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा —

भद्दिलपुर शुभ तीर्थ की, पूजा है सुखकार।
निज पर शांति के लिए, कर लूँ शांतीधार।।

शांतये शान्तिधारा

तीर्थंकर शीतलप्रभू, का उद्यान विशाल।
वही पुष्प अंजलि भरूँ, अर्पूं होउँ खुशाल।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मंडलस्योपरि सप्तमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—प्रत्येक अर्घ्य (शंभु छंद) —

जहाँ मात सुनन्दा ने महलों में, सोलह सपने देखे थे।
शुभ चैत्र कृष्ण अष्टमि तिथि थी, पति से उनके फल पूछे थे।।
उस गर्भकल्याणक से पावन, नगरी को नमन हमारा है।
अब गर्भवास दुख प्राप्त न हो, ऐसा अनुरोध हमारा है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथगर्भकल्याणक पवित्रभद्रिकापुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

राजा दृढ़रथ के यहाँ माघ, कृष्णा द्वादशि को प्रभु जन्मे।
देवों के आसन कांप उठे, वे सब भद्रिकापुरी पहुँचे।।
उस जन्मकल्याणक से पावन, नगरी को नमन हमारा है।
अब पुनर्जन्म दुख प्राप्त न हो, ऐसा अनुरोध हमारा है।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मकल्याणक पवित्रभद्रिकापुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ ब्याह किया औ राज्य किया, शीतल प्रभु ने राजा बनकर।
फिर जन्मतिथी में ही दीक्षा, लेने चल दिये राज्य तजकर।।
उस तपकल्याणक से पावन, नगरी को नमन हमारा है।
प्रभु सम दीक्षा का योग मिले, ऐसा अनुरोध हमारा है।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष वदी चौदश को जहाँ, शीतल को केवलज्ञान हुआ।
धनपति ने तत्क्षण नभ में अधर ही, समवसरण निर्माण किया।।
उस ज्ञानकल्याणक से पावन, नगरी को नमन हमारा है।
मन में सम्यक्त्व की ज्योति जले, ऐसा अनुरोध हमारा है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रभद्रिका-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य—

जहाँ पर शीतल तीर्थंकर के, हुए चार-चार कल्याणक हैं।
भद्रिकापुरी का कण-कण भी, पावन व पूज्य अद्यावधि है।।
चारों कल्याणक से पवित्र, नगरी को नमन हमारा है।
श्रद्धा भक्ति के साथ समर्पित, यह पूर्णार्घ्य हमारा है।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणक पवित्र भद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

तर्ज-बाबुल की दुआएं.....

जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।
गुणमाल तीर्थ की सजाते चलो, आतम तीरथ सज जाएगा।।टेक.।।

धरती तो सब हैं एक सदृश, इस मध्यलोक के द्वीपों में।
हैं जीव व पुद्गल सभी जगह, तिर्यंच मनुज के रूपों में।।
प्रभु की गुणगाथा गाते चलो, आतम गुणमय बन जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।१।।

उनमें ढाई द्वीपों के ही, अन्दर मनुष्य सब रहते हैं।
उससे आगे के किसी द्वीप में, मनुज नहीं जा सकते हैं।।
उनकी महिमा बतलाते चलो, आतम महान बन जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।२।।

ढाई द्वीपों में प्रथम द्वीप, है जम्बूद्वीप कहा जाता।
उसमें दक्षिण दिश भरतक्षेत्र का, आर्यखंड है सुखदाता।।
उसकी नवगाथा गाते चलो, आतम नव कीरत पाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।३।।

उस आर्यखण्ड में त्रयकालों में, चौबिस तीर्थंकर होते।
उनमें ही वर्तमानकालिक, चौबिस जिन क्षेमंकर होते।।

उन जन्म की गाथा गाते चलो, आतम का बल बढ़ जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।४।।
इन चौबिस जिन की जन्मभूमि, जिनशासन की कीरत मानीं।
इनमें भद्रिकापुरी नगरी, शीतलप्रभु की कीरत मानीं।।
उस तीर्थ को अर्घ्य चढ़ाते चलो, आतम अनर्घ्य पद पाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।५।।
इस जन्मभूमि की पूजन कर, निज जन्म को सार्थक करना है।
इस कर्मभूमि को वंदन कर, निज भव को वंदित करना है।।
अर्चन का भाव बढ़ाते चलो, आतम अर्चित बन जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।६।।
शीतल प्रभु के कल्याण चार, भद्रिकापुरी इतिहास बने।
''चन्दनामती'' यह अर्घ्य थाल, हम सबके लिए वरदान बने।।
पूर्णार्घ्य की माल चढ़ाते चलो, आतम का मल धुल जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।७।।

—दोहा—

जन्मभूमि की अर्चना , करे जन्म साकार ।
अर्घ्य समर्पण कर लहूँ, आत्म सौख्य भण्डार।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमि भद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।

(पूजा नं. –9)
सिंहपुरी तीर्थ पूजा

—अडिल्ल छन्द —

सिंहपुरी श्रेयाँसनाथ जन्मस्थली।
है प्रसिद्ध जो सारनाथ पुण्यस्थली।।
उसकी पूजन हेतु करूँ स्थापना।
तीरथ अर्चन से होगा हित आपना।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (सखी छन्द) —

प्रासुक जल से भर झारी, कर धार मिटे भ्रम भारी।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन लाया, चर्चत भवताप नशाया।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गजमोती सम अक्षत हैं, अर्चत लूँ अक्षय पद मैं।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों को चुन-चुन लाऊँ, भर अंजलि नाथ चढ़ाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान अनेक बनाये, पूजन हेतू ले आये।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप कपूर जलाऊँ, आरति कर पुण्य बढ़ाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु धूप बनाई, अग्नी में उसे जलाई।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदिक फल लाऊँ, शिवफल हित उन्हें चढ़ाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों को मिलाया, ''चन्दना'' प्रभू को चढ़ाया।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल से करूँ शान्तीधारा, हो शांत जगत यह सारा।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।१०।।

शान्तये शांतिधारा

उपवन से पुष्प मंगाऊँ, पुष्पांजलि कर सुख पाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वंदन।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि अष्टमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—प्रत्येक अर्घ्य (शंभु छन्द) —

जिस सिंहपुरी में विष्णुमित्र, राजा ने राज्य किया सुंदर।
देवों की टोली आती थी, जिनकी रानी नंदा के घर।।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी को, श्री श्रेयांस गर्भ में आये थे।
मैं उस नगरी को नमूँ जहाँ, धनपति ने रतन बरसाये थे।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथगर्भकल्याणक पवित्रसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि फाल्गुन वदि ग्यारस को जहाँ, श्रेयाँसनाथ का जन्म हुआ।
सुरपति ने मेरु सुदर्शन पर, कर न्हवन जन्म निज धन्य किया।।
फिर सिंहपुरी में लाकर के, जन्मोत्सव पुनः मना डाला।
उस भू को अर्घ्य चढ़ा मैंने , निज जीवन सफल बना डाला।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मकल्याणक पवित्रसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपभोग राज्यवैभव का कर, वैराग्य जहाँ मन में आया।
जहाँ पर बसंतऋतु नाश देख, प्रभु ने दीक्षा पथ अपनाया।।
उस सिंहपुरी में फाल्गुन वदि, ग्यारस को तपकल्याण हुआ।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमन करूँ, तो मेरा भी कल्याण हुआ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथदीक्षाकल्याणक पवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघ वदी नवमी को जहाँ, जिनवर को केवलज्ञान हुआ।
श्रेयाँसनाथ तीर्थंकर ने, तुंबुरु तरु नीचे ध्यान किया।।
उस सिंहपुरी को सारनाथ के, नाम से जाना जाता है।
जो अर्घ्य चढ़ाकर जजे इसे, श्रुतज्ञान उसे मिल जाता है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रसिंह-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य (शंभु छन्द) —

श्रेयाँसनाथ के गर्भ जन्म तप, ज्ञान चार कल्याण जहाँ।
वह सिंहपुरी है धन्य तथा, सम्मेदशिखर निर्वाण हुआ।।
चारों कल्याणक से पवित्र, श्रीसिंहपुरी को वंदन है।
पूर्णार्घ्य समर्पित कर चाहूँ, तीरथपूजन का शुभ फल मैं।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयासँनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणकपवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

तर्ज-आओ बच्चों.....

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, तीर्थ यजन को आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल बनाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन ।। टेक. ।।
बड़े पुण्य से तीर्थंकर प्रभु, जन्म धरा पर लेते हैं।
अपनी पावनता से वे जग, को पावन कर देते हैं।।
उनकी पदरज पाने हेतु, तीर्थ यजन को आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल बनाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।१।।

ढाई द्वीपों में इक सौ, सत्तर जो कर्मभूमियाँ हैं।
वे तीर्थंकर के जन्मों से, बनती धर्मभूमियाँ हैं।।
इसीलिए वे जन्मक्षेत्र, साक्षात तीर्थ कहलाये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।२।।

जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र का, आर्यखण्ड जो पहला है।
उसमें जन्मे चौबिस तीर्थंकर का परिचय करना है।।
उनकी जन्मभूमियों को हम, वन्दन करने आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।३।।

ग्यारहवें तीर्थंकर श्रीश्रेयाँसनाथ को नमन करूँ।
चारकल्याणक से पावन, उनके जन्मस्थल को प्रणमूँ।।
अतिशयकारी प्रतिमा के, दर्शन भक्तों ने पाये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।४।।

जहाँ प्रभू ने राजा बनकर, राजनीति सिखलाई थी।
धर्मनीति के साथ जहाँ पर, न्यायनीति बतलाई थी।
होते ही वैराग्य जहाँ, लौकान्तिक सुरगण आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।५।।

ध्यानलीन हो जहाँ प्रभू ने, कर्म घातिया नष्ट किया।
दिव्यध्वनि सुन जहाँ प्राणियों, ने मिथ्यातम ध्वस्त किया।।
उस श्रेयासँनाथ धर्मस्थल का यश गाने आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।६।।

हे स्वामी! इस कलियुग में, सम्यक्त्व जहाँ अतिदुर्लभ है।
वहीं आपकी भक्ति से, भक्तों को मिलता सब कुछ है।।
इसीलिए ''चन्दनामती'', हम अर्घ्य सजाकर लाये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।७।।

—दोहा—

सिंहपुरी की अर्चना, करे चमत्कृत लाभ।
जिन प्रतिमा की वन्दना, हरे सभी दुख व्याधि।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.–10)

चम्पापुरी तीर्थपूजा

तर्ज–मेरे देश की धरती.....

चम्पापुर नगरी वासुपूज्य के जन्म से धन्य हुई है,
चम्पापुर नगरी.....।।टेक.।।
जिनशासन के बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य स्वामी।
उनके पाँचों कल्याणक से, चम्पापुर की धरती नामी।।
वसुपूज्य पिता के साथ जयावति माता धन्य हुई है।।
चम्पापुर.।।१।।
उस चम्पापुर तीरथ का मैं, आह्वानन स्थापन कर लूँ।
सन्निधीकरण कर वासुपूज्य, प्रभु को मन में धारण कर लूँ।।
इस पूजा विधि से पूजनसामग्री भी धन्य हुई है।।
चम्पापुर.।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (शंभु छन्द) —

जीवात्मा एवं कर्मों का, सम्बन्ध अनादीकाल से है।
बस इसीलिए जीवन व मरण, हो रहा अनादीकाल से है।।
अब जन्मजरामृतिनाश हेतु, जल से प्रभु का अर्चन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुरि का वंदन कर लूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यादर्शन के कारण जीव, अनादी से भव भ्रमण करें।
सम्यग्दर्शन यदि मिल जावे, तब ही उसका उपशमन करे।।
भव आतप के विध्वंस हेतु, चंदन से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षणिक विनश्वर पद प्राप्ती, के लिए सदा अन्याय यहाँ।
आत्मा का लाभ न ले पाया, है अविनश्वर साम्राज्य जहाँ।।
अब अक्षय पद पाने हेतू, अक्षत से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कामदेव के वश होकर, सच्चे सुख को सब भूल रहे।
जिनराज उसी को वश में कर, आतम अमृत में डूब रहे।।
उस कामबाण के नाश हेतु, पुष्पों से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधावेदनी कर्म सभी के, संग अनादि से लगा हुआ।
उसके ही तीव्र उदय होने पर, नहिं अभक्ष्य का भान रहा।।
वह क्षुधारोग विध्वंस हेतु, नैवेद्य से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों में मोहकर्म, सबसे बलवान कहा जाता।
उससे निजरूप न दिखे अतः, वह अंधकार माना जाता।।

अब मोहतिमिर के नाश हेतु, दीपक से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों के नाश हेतु, जिनराज तपस्या करते हैं।
क्रमशः उनके नाशन हेतू, श्रावकजन पूजा करते हैं।।
उन कर्मों की उपशांति हेतु, पूजन में धूप दहन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैंने अनादि से इस जग में, ग्रैवेयक तक फल प्राप्त किया।
लेकिन सम्यक्चारित्र बिना, नहिं मुक्ति योग्य फल प्राप्त किया।।
अब मोक्षमहाफल प्राप्ति हेतु, फल से प्रभु की पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमुक्ता आदि मिला करके, मैं अर्घ्य सजाकर ले आया।
''चन्दनामती'' प्रभु पूजन कर, चाहूँ तीरथ पद की छाया।।
अब पद अनर्घ्य की प्राप्ति हेतु, मैं अर्घ्य चढ़ा प्रणमन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

गंगनदी का नीर ले, डालूँ जल की धार।
देश राष्ट्र में शांति हो, मन में यही विचार।।

शान्तये शांतिधारा

चम्पापुर उद्यान से, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, मन में अति हरषाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि नवमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—प्रत्येक अर्घ्य (शेर छन्द) —

भगवान वासुपूज्य जहाँ गर्भ में आये।
आषाढ़ कृष्णा छठ तिथी सुरगण वहाँ आये।।
माता जयावती पिता वसुपूज्य का आँगन।
रत्नों से भर गया करूँ उस भूमि का यजन।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथगर्भकल्याणक पवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश जहाँ प्रभु का जन्म हुआ।
स्वर्गों में सुरपती का मुकुट स्वयं झुक गया।।
चम्पापुरी नगरी की पूज्यता है इसलिए।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ उस भू को इसलिए।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मकल्याणक पवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश को ही वैराग्य हुआ था।
प्रभु जी ने स्वयं दीक्षा स्वीकार लिया था।।
उस दीक्षाकल्याणक पवित्र भूमि को नमन।
मंदारगिरि उद्यान का है भाव से अर्चन।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रचम्पापुरीनिकटस्थ-मंदारगिरितीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघ शुक्ल दुतिया को ज्ञान हो गया।
जिनवर के घातिकर्म का विनाश हो गया।।

मंदारगिरि का पूज्य वह उद्यान मनोहर।
पूजूँ समवसरण का स्थल वह मनोहर।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रचम्पापुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों सुदी चौदश को प्रभू मोक्ष पा गये।
सम्पूर्ण कर्म नाश अचल सौख्य पा गये।।
निर्वाण कल्याणक मनाने इन्द्र आ गये।
मंदारगिरि जजूँ जहाँ से सिद्धि पा गये।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथमोक्षकल्याणक पवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्यं—

चम्पापुरी इक मात्र ऐसा तीर्थ है पावन।
जहाँ वासुपूज्य प्रभु के हुए पाँचों कल्याणक।।
चम्पापुरी में माना मंदारगिरि स्थल।
पूजूँ जहाँ प्रसिद्ध वासुपूज्य धर्मस्थल।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथगर्भजन्मतपकेवलज्ञानमोक्षपंचकल्याणक पवित्रचम्पापुरी मंदारगिरितीर्थक्षेत्राभ्यां पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—दोहा—

धर्मतीर्थ वर्तन जहाँ, हुआ वही है तीर्थ।
नमन करूँ उस तीर्थ को, पाऊँ आतम कीर्ति।।१।।

—नरेन्द्र छन्द—

चम्पापुर नगरी में नृप वसुपूज्य राज्य करते थे।
न्यायनीति में दक्ष प्रजा का न्याय किया करते थे।।

धर्मपरायण श्रावक वे प्रभु भक्ति सदा करते थे।
षट्कर्तव्यों में रत रहकर शिवपथ पर चलते थे।।२।।
कर विवाह गुणयुक्त जयावती रानी को वर लाये।
सांसारिक सुख भोग मनोहर जीवनकाल बितायें।।
एक दिवस देवों की टोली ले धनपति वहाँ आये।
रत्नवृष्टि कर इन्द्राज्ञा से नगरी खूब सजाये।।३।।
जान गये तब राजा रानी तीर्थंकर आएंगे।
छः महीने पश्चात् गर्भकल्याणक मनवाएंगे।।
खुशियों में कैसे बीते छह माह पता नहिं पाया।
आखिर इक रात्री में रानी को सपना हो आया।।४।।
सोलह सपनों के फल में वसुपूज्य ने यह बतलाया।
इक तीर्थंकर बालक रानी तेरे गरभ में आया।।
खुशियों में डूबी रानी अपने महलों में रहतीं।
दिक्कुमारियाँ सेवा में आ उनसे प्रश्न उचरतीं।।५।।
धीरे-धीरे बीत गये नव मास घड़ी वह आई।
तीर्थंकर का जन्म हुआ वहाँ बजने लगी बधाई।।
जन्मकल्याणक का उत्सव इन्द्रों ने आन मनाया।
वासुपूज्य यह नामकरण तीर्थंकर शिशु ने पाया।।६।।
वस्त्राभूषण दिव्य पहन प्रभु पलने में झूले थे।
क्रमशः घुटने के बल चलकर देवों संग घूमे थे।।
उनकी मीठी और तोतली बोली जब माँ सुनती।
मानो जग की सारी निधियाँ उनको फीकी लगतीं।।७।।
तीर्थंकर के बाल्यकाल का वर्णन कैसे करना।
इन्द्रपुरी के सुख भी उनके आगे तुच्छ ही कहना।।
बचपन से यौवन काया को वासुपूज्य ने पाया।
मात-पिता के कहने पर भी ब्याह नहीं रचवाया।।८।।

बालयती बन तप करके कैवल्यज्ञान उपजाया।
घाति अघाती कर्म नाश कर मोक्षधाम प्रगटाया।।
चम्पापुर उनके पाँचों कल्याणक से पावन है।
वहीं निकट मंदारगिरी चम्पापुरि का पर्वत है।।९।।
वर्तमान में ये दोनों प्रभु वासुपूज्य के तीरथ।
भव्यात्माओं को दर्शन से प्रगटाते मुक्तीपथ।।
इसीलिए चम्पापुर तीरथ की जयमाल बनाई।
वासुपूज्य तीर्थंकर की पूजन में इसे चढ़ाई।।१०।।
एक यही इच्छा है मेरी जन्मभूमि अर्चन में।
रत्नत्रय निधि को पाकर कर पाऊँ जन्म सफल मैं।।
बस तब तक ''चंदनामती'', पूजन का भाव रहेगा।
पूज्य न जब तक बन जाऊँ, प्रभु नाम हृदय में रहेगा।।११।।
मेरा यह पूर्णार्घ्य समर्पण, चम्पापुर तीरथ को।
है पवित्र जिस भू का कण कण, नमन है उसकी रज को।।
दुःखों का क्षय हो प्रभु! मेरे, कर्मों का भी क्षय हो।
मरण समाधीयुत हो जिससे, मेरा सुख अक्षय हो।।१२।।

दोहा — **तीर्थंकर अरु तीर्थ का, प्रस्तुत यह गुणगान।**
अर्घ्य चढ़ाकर मैं चहूँ, स्वातम में विश्राम।।१३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद —

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(पूजा नं.–11)

कम्पिलपुरी तीर्थ पूजा

—स्थापना (कुसुमलता छन्द) —

तीर्थंकर श्री विमलनाथ की, जन्मभूमि काम्पिल्यपुरी।
गर्भ जन्म तप ज्ञान चार, कल्याणक से पावन नगरी।।
आह्वानन स्थापन करके, पूजूँ कम्पिल तीरथ को।
जिनवर की पद धूलि नमन कर, गाऊँ जिनगुण कीरत को।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (अडिल्ल छन्द) —

गंग नदी का नीर, कलश में भर लिया।
पाऊँ भवदधि तीर, धार पद कर दिया।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वंदूँ कम्पिलधाम, भव भव दुख से छूटूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिसकर के लाइये।
जिनवर चरणकमल से, पूज्य बनाइये।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिलधाम भव भव दुख से छूटूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्जवल अक्षत के पुंज हैं।
अक्षयपद के हेतु निजातम वुंज हैं।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्प चमेली बेला पुष्प चढ़ाय के।
कामव्यथा नश जाय स्वात्म सुख पाय के।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बावर आदि बहुत पकवान ले।
क्षुधा व्याधि नाशन हित नाथ चढ़ाय के।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रजतथाल में घृत का दीप जलाय के।
मोहनाश हो तीरथ आरति गाय के।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु की शुद्ध धूप बनवाय के।
कर्म नष्ट हो प्रभु के निकट जलाय के।।

विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिलधाम भव भव दुख से छूटूँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूरों का गुच्छा सुंदर लाय के।
सम्यक्फल हो प्राप्त जिनेश चढ़ाय के।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्ययुत अर्घ्य चढ़ाऊँ नाथ मैं।
तभी ''चन्दनामती'' मिले गुणराज्य है।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—सोरठा—

विमलनाथ पदपद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले निजातम सद्म, कम्पिलजी तीरथ जजूँ।।१०।।

शांतये शांतिधारा

चंपक हरसिंगार, प्रभु पद पुष्पांजलि करूँ।
भरे सुगुण भंडार, कम्पिल जी तीरथ जजूँ।।१।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि दशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—प्रत्येक अर्घ्य (दोहा) —

ज्येष्ठ वदी दशमी जहाँ, हुआ गर्भकल्याण।
विमलनाथ की वह धरा, पूजूँ करूँ प्रणाम।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथगर्भकल्याणक पवित्रकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी तिथि चौथ को, जन्मे विमल जिनेश।
अतः कम्पिला तीर्थ को, पूजें नमें सुरेश।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मकल्याणक पवित्रकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म तिथी में ही जहाँ, हुआ प्रभू वैराग्य।
उपवन कम्पिल तीर्थ का, अर्चूं लहूँ स्वराज्य।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रकम्पिलपुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल छठ श्रेष्ठ तिथि, हुआ जहाँ पर ज्ञान।
समवसरण से पूज्य वह, कम्पिल तीर्थ महान।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रकम्पिलपुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य (शंभु छन्द) —

श्री विमलनाथ तेरहवें तीर्थंकर का अर्चन करना है।
उनके चारों कल्याणक से, पावन तीरथ को भजना है।।
उस कम्पिल जी में अद्यावधि, प्राचीन कथानक मिलता है।
उसको पूर्णार्घ्य चढ़ाने से, निज मन का उपवन खिलता है।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणक पवित्रकम्पिलपुरी तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

तर्ज-यदि भला किसी का कर न सको.....

कम्पिल जी की गौरव गाथा, सब मिलकर वृद्धिंगत करना।
तीर्थंकर विमलनाथ जी के, जन्मस्थल का अर्चन करना।।टेक०।।

कृतवर्मा पितु के महलों में, जयश्यामा माँ के आंगन में।
हुई पन्द्रह महिने रत्नवृष्टि, उस पुण्यांगण का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।१।।

जन्मे खेले जिस धरती पर, वहाँ स्वर्गपुरी भी आती थी।
सौधर्म इन्द्र जहाँ किंकर था, उस कम्पिलजी का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।२।।

जहाँ ब्याह किया और राज्य किया, फिर भी आसक्त न थे उसमें।
लख बर्फ नाश दीक्षा ले ली, उस तपोभूमि का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।३।।

तप से जहाँ घातिकर्म नाशे, कैवल्यज्ञान का उदय हुआ।
बना समवसरण गगनांगण में, उस ज्ञान स्थल का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।४।।

अपनी दिव्यध्वनि से प्रभु ने, फिर जन-जन का कल्याण किया।
सम्मेदशिखर से मोक्ष गये, उस सिद्धक्षेत्र का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।५।।

कम्पिल जी की यह धर्मकथा, जिन आगम ग्रंथ पुराण कहें।
लेकिन इतिहास भी है प्रसिद्ध, सति द्रौपदि के जन्मस्थल का।।
तीर्थंकर०।।६।।

है कथा महाभारत युग की, नृप द्रुपद यहाँ पर रहते थे।
उनकी कन्या द्रौपदी हुई, उसके सतीत्व का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।७।।

पांचाल देश की रजधानी, काम्पिल्यपुरी कहलाती थी।
द्रौपदी तभी पाञ्चाली कहलाई, इतिहास यही पढ़ना।।
तीर्थंकर०।।८।।

है वर्तमान गौरवशाली, कम्पिल की श्रीवृद्धि लखकर।
जिनमंदिर है प्राचीन जहाँ, प्रभु विमलनाथ का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।९।।

कम्पिलनगरी के कण-कण को, मेरा वंदन अन्तर्मन से।
मन मेरा भी हो विमल सदा, अनुरोध यही स्वीकृत करना।।
तीर्थंकर०।।१०।।

जयमाला पढ़कर तीरथ की, पूर्णार्घ्य समर्पण करता हूँ।
''चंदनामती'' मति पूर्ण बने, यह अर्घ्य मेरा स्वीकृत करना।।
तीर्थंकर०।।११।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.—12)

रत्नपुरी तीर्थ पूजा

—स्थापना (कुसुमलता छन्द)—

श्री तीर्थंकर धर्मनाथ ने, रत्नपुरी में जन्म लिया।
धर्मतीर्थ का वर्तन करके, जन्मभूमि को धन्य किया।।
पन्द्रहवें तीर्थंकर की, उस जन्मभूमि को वन्दन है।
आह्वानन स्थापन सन्निधिकरण विधी से अर्चन है।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनम् ।

—अष्टक—

शीतल झरनों का जल पीकर, तत्काल प्यास कुछ शांत हुई।
पर पुनः प्यास लग जाने से, वह इच्छा फिर से जाग गई।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि श्री रत्नपुरी, की पूजन को जल लाया हूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन घिस लेपन करने से भी, दाह न मेरी शान्त हुई।
बस उसका असर क्षीण होते ही, दाह पुनः प्रारम्भ हुई।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि श्री रत्नपुरी, पूजन को चन्दन लाया हूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिक्षण क्षय होती काया में, अक्षय इक आत्मतत्व ही है।
इस काया से तप कर अखंड, मिलता परमात्मतत्त्व भी है।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि श्री रत्नपुरी, पूजन को अक्षत लाया हूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये विनाशनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियविषयों को भोग भोग कर, बहुत बार छोड़ा मैंने।
उनको तज यदि ले लिया योग, कुछ कर्मबन्ध तोड़ा मैंने।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, फूलों का गुच्छा लाया हूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छित पकवानों को खाकर, तन की तो क्षुधा कुछ शांत हुई।
पर पुनः भूख लग जाने से, फिर क्षुधा की बाधा जाग गई।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, नैवेद्यथाल भर लाया हूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग ज्योति से भरे हुए, संसार में यद्यपि रहता हूँ।
अन्तर्ज्योती नहिं प्राप्त हुई, भवभ्रमण तभी मैं करता हूँ।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, घृतदीपक भर कर लाया हूँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल सुगंधि के लिए प्रभो! मैंने बहु धूप जलाई है।
नहिं कर्मनाश के लिए प्रभो! युक्ती मेरे मन आई है।।

इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ! तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, मैं धूप बनाकर लाया हूँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर मौसम के फल खाकर मैंने, तन मन को कुछ तृप्त किया।
नहिं पूजन में फल चढ़ा तभी, शिवफल बिन मन संतप्त रहा।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ! तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, फल थाल सजाकर लाया हूँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल ले आया।
चन्दनामती मैं पद अनर्घ्य, पाने का भाव बना लाया।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि श्री रत्नपुरी को, अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—सोरठा—

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले ज्ञान साम्राज्य, तिहुंजग में भी शांति हो।।१०।।

शांतये शांतिधारा

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
तीर्थ अर्चनालाभ, पाऊँ सुख संपति भरूँ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि एकादशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—प्रत्येक अर्घ्य —

तर्ज–जहाँ डाल–डाल पर सोने की.....

श्री रत्नपुरी तीरथ अर्चन का भाव हृदय में आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।टेक.।।
वैशाख सुदी तेरस को जहाँ, धनपति ने रतन बरसाया।
प्रभु धर्मनाथ का गर्भकल्याणक, उत्सव खूब मनाया।।उत्सव.....
पितु भानु मात सुव्रता के मन में, आनंद अद्भुत छाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।१।।
उस गर्भकल्याणक से पवित्र, धरती को शत वन्दन है।
सरयू तट निकट अयोध्या के, वह बसा तीर्थ पावन है।। वह बसा.....
बस उसी रत्नपुरि नगरी को, मैं अर्घ्य चढ़ाने आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथगर्भकल्याणक पवित्ररत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

श्री रत्नपुरी तीरथ अर्चन का भाव हृदय में आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।
शुभ माघ शुक्ल तेरस के दिन, जहाँ धर्मनाथ प्रभु जन्मे।
ऐरावत हाथी पर चढ़कर, सौधर्म इन्द्र वहाँ पहुँचे।।सौधर्म...
जिनबालक को लख प्रथम शची का रोम-रोम हर्षाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।१।।
कर मेरु शिखर पर जन्मोत्सव, वस्त्राभूषण पहनाये।
उस जन्मकल्याणक नगरी की, पूजा करने सब आये।।पूजा.....
मैं भी उस पावन जन्मभूमि का वन्दन करने आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मकल्याणक पवित्ररत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

श्रीरत्नपुरी तीरथ अर्चन का भाव हृदय में आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।टेक.।।
प्रभु धर्मनाथ तीर्थंकर ने, जहाँ उल्कापात को देखा।
सब राजपाट तज दिया तुरत, फिर मुड़कर भी नहिं देखा।।फिर.....
शुभ माघ सुदी तेरस को ही मन में वैराग्य समाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।१।।
जिस धरती पर लौकांतिक देवों का आगमन हुआ था।
जहाँ नमः सिद्ध कह धर्मनाथ ने, मुनिव्रत ग्रहण किया था।। मुनिव्रत.....
उस रत्नपुरी के कण-कण को मैंने यह अर्घ्य चढ़ाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथदीक्षाकल्याणक पवित्ररत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

श्री रत्नपुरी तीरथ अर्चन का भाव हृदय में आया,
मैं रत्नथाल भर लाया ।। टेक. ।।
जिस नगरी के उपवन में प्रभु को, केवलज्ञान हुआ था।
जहाँ समवसरण की रचना का, तत्क्षण निर्माण हुआ था। तत्क्षण.....
कर घातिकर्म का नाश जहाँ निज को भगवान बनाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।१।।
जहाँ पौष शुक्ल पूनम के दिन, दिव्यध्वनि प्रभु ने खिराई।
ऊँकारमयी निजवाणी से, जन-जन की प्यास बुझाई।।जन जन की.....
उस ज्ञानभूमि को अर्घ्य चढ़ाकर रोम-रोम हर्षाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्ररत्नपुरी–तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

—पूर्णार्घ्य (शंभु छंद) —

पन्द्रहवें जिनवर धर्मनाथ के, जहाँ चार कल्याण हुए।
सम्मेदशिखर को वंदूँ मैं, जहाँ से वे प्रभु शिवधाम गये।।
मैं उन चारों कल्याणक से, पावन धरती को नमन करूँ।
पूर्णार्घ्य थाल ले रत्नपुरी को, अर्पण कर मैं नमन करूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतु:कल्याणक पवित्ररत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—शेरछन्द —

श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वन्दना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।टेक.।।

सौ इन्द्र भी तीर्थंकर के पद कमल जजें।
गणधर गुरु भी गुण का वर्णन न कर सकें।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।१।।

पाँचों ही कल्याणक जिन्हों के देव मनाते।
उत्सवविशेष जन्मकल्याणक में रचाते।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।२।।

यह पुण्य भी सौधर्म इन्द्र का विशेष है।
तीर्थंकरों के पंचकल्याणक मनाते हैं।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।३।।

वे विक्रिया पृथक् करें अपने शरीर की।
निज स्वर्ग में रहता है असली शरीर ही ।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।४।।

जब रत्नपुरी में भी धर्मनाथ जी जनमे।
सौधर्म इन्द्र स्वर्ग से तुरत वहाँ पहुँचे।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।५।।

चारों ही कल्याणक मनाये देवों ने आके।
सम्मेदशिखर से प्रभू निर्वाण गये थे।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।६।।

उस रत्नपुरी तीर्थ से इतिहास इक जुड़ा।
देवों के द्वारा निर्मित मंदिर वहाँ मिला।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।७।।

दर्शनकथा में हुई ख्यात जो मनोवती।
दर्शन मिले रतनपुरी में धन्य वो सती।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।८।।

है आज भी मंदिर वहाँ प्रभु धर्मनाथ का।
तिथि माघ शुक्ल तेरस मेला लगा करता।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।९।।

मैं रत्नपुरी तीर्थ को पूर्णार्घ्य समर्पूं।
निजभाव तीर्थ प्राप्त हेतु नाथ को अर्चूं।।

श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।१०।।

प्रभु जन्मभूमि पूजन से जन्म सफल हो।
फिर ''चन्दनामती'' सभी पुरुषार्थ सफल हों।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।११।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.—13)

हस्तिनापुर तीर्थ पूजा

-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

—स्थापना-गीता छंद—

श्री शांति कुंथु अर जिनेश्वर, जन्म ले पावन किया।
दीक्षा ग्रहण कर तीर्थ यह, मुनिवृन्द मन भावन किया।।
निज ज्ञानज्योती प्रकट कर, शिवमार्ग को प्रकटित किया।
इस हस्तिनापुर क्षेत्र को, मैं पूजहूँ हर्षित हिया।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथकुंथुनाथअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथकुंथुनाथअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथकुंथुनाथअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (चामर छंद)—

तीर्थ रूप शुद्ध स्वच्छ सिंधु नीर लाइये।
गर्भवास दुःखनाश तीर्थ को चढ़ाइये।।
हस्तिनापुरी पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंकुमादि अष्ट गंध लेय तीर्थ पूजिये।
राग आग दाह नाश पूर्ण शांत हूजिये।।
हस्तिनापुरी पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र तुल्य श्वेत शालि पुंज को रचाइये।
देह सौख्य छोड़ आत्म सौख्य पुंज पाइये।।
हस्तिनापुरी पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद केतकी गुलाब वर्ण वर्ण के लिये।
मार मल्लहारि तीर्थक्षेत्र को चढ़ा दिये।।
हस्तिनापुरी पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर पूरिका इमर्तियाँ भराय थाल में।
तीर्थ क्षेत्र पूजते क्षुधा महाव्यथा हने।।
हस्तिनापुरी पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप में कपूर ज्योति अंधकार को हने।
आरती करंत अंतरंग ध्वांत को हने।।
हस्तिनापुरी पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप गंध लेय अग्नि पात्र में जलाइये।
मोह कर्म भस्म को उड़ाय सौख्य पाइये।।

हस्तिनापुरी पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मातुलिंग आम्र सेब संतरा मंगाइये।
तीर्थ पूजते हि सिद्धि संपदा सुपाइये।।
हस्तिनापुरी पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय मोक्ष-फलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षतादि अर्घ्य को बनाइये।
''ज्ञानमति'' सिद्धि हेतु तीर्थ को चढ़ाइये।।
हस्तिनापुरी पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति मण्डलस्योपरि द्वादशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—प्रत्येक अर्घ्य (रोला छंद) —

भादों कृष्णा पाख, सप्तमि तिथि शुभ आई।
गर्भ बसे प्रभु शांति, सब जन मन हरषाई।।
इन्द्र सुरासुर संग, उत्सव करते भारी।
हम पूजें धर प्रीति, तीरथ रज सुखकारी।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथगर्भकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म लिया प्रभु शांति, ज्येष्ठ वदी चौदस में।
सुरगिरि पर अभिषेक, किया सभी सुरपति ने।।

शांतिनाथ यह नाम, रखा शांतिकर जग में।
हम नावें निजमाथ, जिनवर चरण कमल में।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथजन्मकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा ली प्रभु शांति, ज्येष्ठ वदी चौदस के।
लौकांतिक सुर आय, बहु स्तवन उचरते।।
इंद्र सपरिकर आय, तपकल्याणक करते।
गजपुर अर्घ्य चढ़ाय, हम दुख संकट हर लें।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान विकास, पौष सुदी दशमी के।
समवसरण में नाथ, राजें अधर कमल पे।।
इन्द्र करें बहु भक्ति, बारह सभा बनी हैं।
अर्घ्य चढ़ावें भव्य, हस्तिनापुर नगरी है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रहस्तिनापुर-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा — **श्रावण वदि दशमी तिथि, कुंथु गर्भकल्याण।**
इन्द्र हस्तिनापुरि नमें, मैं पूजूँ वह थान।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीकुंथुनाथगर्भकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम सित वैशाख की, जन्मे कुंथु जिनेश।
मैं पूजूं वह जन्म भू, नमन करूँ सिर टेक।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीकुंथुनाथजन्मकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित एकम वैशाख की, दीक्षा ली जिनदेव।
वही हस्तिनापुर जजूँ, करूँ कुंथु प्रभु सेव।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीकुंथुनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल तिथि तीज में, प्रगट हुआ जहाँ ज्ञान।
हस्तिनापुर की वह धरा, पूजूँ हो कल्याण।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीकुंथुनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रहस्तिनापुर-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—सखी छन्द—

फाल्गुन कृष्णा तृतिया में, अर जिनवर गर्भ बसे थे।
जहाँ सुरपति उत्सव कीना, हम पूजें भवदुख हीना।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअरनाथगर्भकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर शुक्ला चौदश के, जहाँ जन्में प्रभु सुर हर्षे।
उस हस्तिनापुर की अर्चा, हम करें सदा प्रभु चर्चा।।१०।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअरनाथजन्मकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदि दशमी तिथि में, दीक्षा धारी प्रभु वन में।
इन्द्रों से पूजा पाई, वह तीर्थ जजूँ सुखदाई।।११।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअरनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि बारस तिथि में, केवल रवि पाया प्रभु ने।
बारह गण को उपदेशा, हम पूजें भक्ति समेता।।१२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअरनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थ-क्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)—

जहाँ तीर्थंकरत्रय कामदेव, चक्री पद के धारी जन्मे।
छहखण्ड जीत कर हस्तिनागपुर, नगरी के राजा वे बने।।

उस भू पर उनके चार-चार, कल्याणक इन्द्र मनाते थे।
वह तीर्थ जजूँ पूर्णार्घ्य चढ़ा, जिसकी महिमा सुर गाते थे।।१३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथकुंथुनाथअरनाथजिनेन्द्र गर्भजन्मदीक्षा-केवलज्ञानचतुःचतुःकल्याणकपवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा — **समवसरण में राजते, ज्ञान ज्योति से पूर्ण।**
शांति कुंथु अर नाथ को, पूजत ही दुःख चूर्ण।।१।।

—शंभु छंद —

श्री आदिनाथ को सर्व प्रथम, इक्षूरस का आहार दिया।
श्रेयांस नृपति ने यहाँ तभी से, दान तीर्थ यह मान्य हुआ।।
देवों ने पंचाश्चर्य किया, रत्नों की वर्षा खूब हुई।
वैशाख सुदी अक्षय तृतिया, यह तिथि भी सब जग पूज्य हुई।।२।।
श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर, इन तीनों के इस तीरथ पर।
हुए गर्भ जन्म तप ज्ञान चार, कल्याणक इस ही भूतल पर।।
अगणित देवी-देवों के संग, सौधर्म इन्द्र तब आये थे।
अतिशय कल्याणक पूजा कर, भव भव के पाप नशाये थे।।३।।
आचार्य अकंपन के संघ में, मुनि सात शतक जब आये थे।
उन पर बलि ने उपसर्ग किया, तब जन जन मन अकुलाये थे।।
श्री विष्णुकुमार मुनीश्वर ने, उपसर्ग दूर कर रक्षा की।
रक्षाबंधन का पर्व चला, श्रावण सुदि पूनम की तिथि थी।।४।।
गंगा में गज को ग्राह ग्रसा, तब सुलोचना ने मंत्र जपा।
द्रौपदी सती का चीर बढ़ा, सतियों की प्रभु ने लाज रखा।।
श्रेयांस सोमप्रभ जयकुमार, आदीश्वर के गणधर होकर।
शिव गये अन्य नरपुंगव भी, पांडव भी हुए इसी भू पर।।५।।

राजा श्रेयांस ने स्वप्ने में, देखा था मेरु सुदर्शन को।
सो आज यहाँ इक सौ इक फुट, उत्तुंग सुमेरु बना अहो।।
यह जंबूद्वीप बना सुन्दर, इसमें अट्ठत्तर जिनमंदिर।
इक सौ तेइस हैं देवभवन, उसमें भी जिनप्रतिमा मनहर।।६।।
जो भक्त भक्ति में हो विभोर, इस जम्बूद्वीप में आते हैं।
उत्तुंग सुमेरू पर चढ़कर, जिन वंदन कर हर्षाते हैं।।
फिर सब जिनगृह को अर्घ चढ़ा, गुण गाते गद्गद हो जाते।
वे कर्म धूलि को दूर भगा, अतिशायी पुण्य कमा जाते।।७।।
श्री आदिनाथ, भरतेश और, बाहूबलि तीन मूर्ति अनुपम।
श्री शांति कुंथु अर चक्रीश्वर, तीर्थंकर की मूर्ति निरुपम।।
वर कल्पवृक्ष महावीर प्रभू का, जिनमंदिर अतिशोभित है।
यह कमलाकार बना सुन्दर, इसमें जिनप्रतिमा राजित है।।८।।
जय शांति कुंथु अर तीर्थेश्वर, जय इनके पंचकल्याणक की।
जय जय हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र, जय जय हो सम्मेदाचल की।।
जय जंबूद्वीप तेरहों द्वीप, नंदीश्वर के जिन भवनों की।
जय भीम, युधिष्ठिर, अर्जुन और, सहदेव नकुल पांडव मुनि की।।९।।

—दोहा —

तीर्थक्षेत्र की अर्चना, हरे सकल दुख दोष।
''ज्ञानमती'' सम्पत्ति दे, भरे आत्म सुखकोष।।१०।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमि हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद —

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(पूजा नं.–14)
मिथिलापुरी तीर्थ पूजा

—स्थापना (शंभु छंद) —

श्री मल्लिनाथ नमिनाथ जिनेश्वर, जन्मभूमि मिथिलानगरी।
तीर्थंकर द्वय के चार-चार, कल्याणक से पावन नगरी।।
उस मिथिलापुरि की पूजन का, मैंने शुभ भाव बनाया है।
स्थापन विधि द्वारा मैंने, निज मन को तीर्थ बनाया है।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

—अष्टक (गीता छन्द) —

लेकर विमल जल तीर्थ पूजूँ, कर्ममल हट जाएगा।
अध्यात्म रस होगा प्रगट, आनन्द अनुभव आएगा।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय-जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध लेकर, पदकमल चर्चन करूँ।
आत्मीक समतारस मगन हो, तीर्थ का अर्चन करूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव-भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय-संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदा किरण सम धवल अक्षत, पुंज प्रभु सम्मुख धरूँ।
शुभ ध्यान में लवलीन होकर, आत्म अक्षयनिधि भरूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली पुष्प सुरभित, लाय जो प्रभु पद जजें।
उन आत्मगुण कलिका खिले, अतिशीघ्र कामव्यथा नशे।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय-कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गुझिया समोसे आदि व्यंजन, लाय प्रभु सम्मुख धरूँ।
अध्यात्मरस अमृत विमिश्रित, अतुल अनुपम सुख वरूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय-क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतदीप की ज्योती जलाकर, आरती प्रभु की करूँ।
अज्ञानतिमिर हटाय अन्तर, ज्ञान की ज्योति भरूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय-मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुरभित धूप लेकर, अग्नि प्रज्ज्वालन करूँ।
जड़कर्म को कर दग्ध अपनी, आतमा पावन करूँ।।

मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय-अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अखरोट किसमिस आम्र आदिक, फल चढ़ा पूजन करूँ।
फल मोक्ष की अभिलाष लेकर, तीर्थ का अर्चन करूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध तंदुल पुष्प नेवज, दीप धूप व फल लिया।
प्रभु पदकमल में ''चन्दनामति'' अर्घ मैं अर्पण किया।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

कंचन कलशा में भरा, गंग नदी का नीर।
तीर्थ पाद धारा करूँ, मिले भवोदधि तीर।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

प्रभु के उपवन से चुना, बेला जुही गुलाब।
पुष्पांजलि अर्पण किया, मिला निजातम लाभ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि त्रयोदशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—प्रत्येक अर्घ्य (दोहा)—

चैत्र सुदी एकम जहाँ, हुआ गर्भ कल्याण।
मल्लिनाथ की वह धरा, पूजूँ हो कल्याण।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथगर्भकल्याणक पवित्रमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदी ग्यारस जहाँ, हुआ जन्मकल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ, मिथिला जन्मस्थान।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथजन्मकल्याणक पवित्रमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मतिथी को ही जहाँ, उपजा प्रभु वैराग।
पूजूँ मैं मिथिलापुरी, दीक्षास्थल आज।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी दुतिया तिथि, पाया केवलज्ञान।
मल्लिनाथ की वह धरा, पूजूँ सौख्य महान।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—सोरठा—

आश्विन कृष्णा दूज, नमि प्रभु आये गर्भ में।
वह मिथिलापुरि पूज्य, अतः चढ़ाऊँ अर्घ्य मैं।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनमिनाथगर्भकल्याणक पवित्रमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी वदि आषाढ़, नमि जिनवर जन्मे जहाँ।
जजूँ जन्मस्थान, मिथिला में उत्सव हुआ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनमिनाथजन्मकल्याणक पवित्रमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मदिवस ही त्याग, लिया नमीप्रभु ने जहाँ।
पूजूँ दीक्षाधाम, मिथिलापुरि तीरथ महा।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनमिनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रमिथिला-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारस मगसिर शुक्ल, केवलज्ञान प्रकाश था।
नमिप्रभु हुए विशुद्ध, पूजूँ मिथिला की धरा।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनमिनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रमिथिला-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्यं (शंभु छंद) —

मिथिलापुरि की जिस धरती पर, श्री मल्लि व नमिप्रभु जन्मे हैं।
उन दोनों प्रभु के गर्भ जन्म, तप ज्ञान कल्याण वहीं पे हैं।।
उस नगरी को मैं अर्घ्य चढ़ाकर, एक यही प्रार्थना करूँ।
रत्नत्रय निधि हो पूर्ण मेरी, तब भव सन्तति खंडना करूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान चतुः चतुःकल्याणक पवित्रमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—शेर छंद —

हे नाथ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।।टेक०।।

तुमने अनादिकाल से जग में भ्रमण किया।
पुरुषार्थ करके उसका अब अंत कर दिया ।।
हे नाथ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।।१।।

भव भव से आत्मतत्व के चिन्तन में लग गये।
इस हेतु ही प्रभु एक दिन भगवान बन गये।।
हे नाथ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।।२।।

श्री मल्लिप्रभु उन्नीसवें तीर्थेश जैन के।
जन्मे थे जो मिथिलापुरी में स्वर्ग से आके।।
हे नाथ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।।३।।

पितु कुम्भराज एवं माता प्रजावती।
थे धन्य तथा मिथिला की धन्य प्रजा थी।।
हे नाथ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।।४।।

जातिस्मरण से प्रभु को वैराग्य जब हुआ।
बन बालयती तप कर कैवल्य वर लिया।।
हे नाथ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।।५।।

नमिनाथ जी इक्कीसवें तीर्थेश भी जन्मे।
समझो कि तीस माह वहाँ रत्न थे बरसे।।
हे नाथ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।।६।।

माँ वप्पिला की महिमा का पार नहीं था।
राजा विजय का हर्ष भी अपार वहीं था।।
हे नाथ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।।७।।

जातिस्मरण से उनको भी वैराग्य हो गया।
सब राजपाट छोड़ शिव से राग हो गया।।

हे नाथ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।।८।।

तीर्थंकरों की धरती ही तीर्थ कहाती।
तीर्थों की वन्दना ही आत्मकीर्ति बढ़ाती।।
हे नाथ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।।९।।

मैं तीर्थक्षेत्र मिथिला की वन्दना करूँ।
जयमाल का पूर्णार्घ्य लेके अर्चना करूँ।।
हे नाथ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।।१०।।

मैं भी मनुष जनम का सार प्राप्त कर सकूँ।
वरदान दो निज आत्म का उद्धार कर सकूँ।।
हे नाथ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।।११।।

अतएव ''चन्दना'' प्रभु से प्रार्थना करे।
हो रत्नत्रय की प्राप्ति यही याचना करे।।
हे नाथ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।।१२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(पूजा नं.—15)

राजगृही तीर्थ पूजा

तर्ज-फूलों सा.....

मुनिसुव्रत जन्मस्थली, राजगृही धाम है।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।टेक.।।

जिस भूमि को ग्यारह लाख वर्षों, पहले ही यह सौभाग्य मिला।
सोमावती माता के महल में, पूरब दिशा का सूरज खिला।।
सूर्य चमकता है, तीर्थ महकता है, राजगृही के शुभ नाम से।
तीरथ की कीरत अमर, होती है प्रभु नाम से।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।
मुनिसुव्रत.।।१।।

सबसे प्रथम पूजन में करूँ, आह्वानन व स्थापना तीर्थ की।
सन्निधिकरण से अर्चन करूँ, शुद्धातम की आराधना हेतु ही।
मन में बसा लूँ मैं, प्रभु को बिठा लूँ मैं, हो जाएगा पावन मन मेरा।
तीरथ अरु तीर्थंकरों की, पूजन का फल मान्य है।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।
मुनिसुव्रत.।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक—

तर्ज-जैनधर्म के हीरे मोती.....

तीर्थंकर मुनिसुव्रत प्रभु की, जन्मभूमि है राजगृही।
मुनियों से वन्दित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।

क्षीरोदधि का जल लेकर, जलधारा कर लूँ भक्ति से।
जन्मजरामृत्यू का क्षय हो, प्रगटे आतम शक्ति है।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वन्दित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्य मही।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिसकर, जिनवर पद में चर्चन कर लूँ।
भवआतप हो जाय नष्ट, इस हेतु तीर्थ अर्चन कर लूँ।।
इसी भावना को लेकर, मैं मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय संसार-तापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंजों में ही, गजमोती की कल्पना करूँ।
अक्षयपद की प्राप्ति हेतु, मैं तीरथ की अर्चना करूँ।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला आदि पुष्प में ही, मैं दिव्य पुष्प कल्पना करूँ।
कामबाण के नाश हेतु, मैं तीरथ की अर्चना करूँ।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के भोजन की, कल्पना करूँ नैवेद्य बना।
पूजन में वह अर्पण कर, क्षुधरोग विनाशन हो अपना।।

इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक में ही रत्नों के, दीपक की कल्पना किया।
मोह नाश हेतू आरति कर, तीरथ की अर्चना किया।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप जलाई अग्नी में।
कर्म भस्म करने हेतू, तीरथ की पूजा करनी है।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे सुस्वादू फल मैंने, जाने कितने खाये हैं।
शिवफल हेतू अब पूजन में, उन्हें चढ़ाने आये हैं।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे भगवन् ! आठों द्रव्यों को, मिला अर्घ्य अर्पण कर लूँ।
पद अनर्घ्य के हेतु ''चन्दनामती'' तीर्थ अर्चन कर लूँ।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

गंग नदी की धार का, प्रासुक जल भर लाय।
शांतिधारा मैं करूँ, निज पर को सुखदाय।।

शान्तये शांतिधारा

राजगृही उद्यान के, विविध पुष्प मंगवाय।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, जीवन हो सुखदाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि चतुर्दशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—प्रत्येक अर्घ्य (रोला छन्द)—

श्रावण कृष्णा दूज, राजगृही नगरी में।
सोमावति के गर्भ, आये त्रिभुवनपति हैं।।
मैं भी अर्घ्य चढ़ाय, उस नगरी को पूजूँ।
पाऊँ पद सुखदाय, भवबंधन से छूटूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथगर्भकल्याणक पवित्रराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि वैशाख सुमास, की द्वादशि तिथि आई।
मुनिसुव्रत भगवान, जन्मे खुशियाँ छाईं।।
जन्मकल्याण पवित्र, उस नगरी को अर्चन।
कर हो पावन चित्त, राजगृही का वंदन।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मकल्याणक पवित्र राजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी वदि वैशाख, को दीक्षा जहाँ धारी।
जातिस्मृति से नाथ, ने सम्पत्ति बिसारी।।
नीलबाग से प्रसिद्ध, था राजगृहि उपवन।
पूजूँ उसको नित्य, खिल जावे मन उपवन।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमी वदि वैशाख, चंपक तरुतल तिष्ठे।
केवलज्ञान प्रकाश, पाया मुनिसुव्रत ने।।
राजगृही उद्यान, समवसरण से पावन।
पूजूँ जिनवर थान, हो मेरा मन पावन।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रराजगृही-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्यं (रोला छंद)—

मुनिसुव्रत भगवान, के चारों कल्याणक।
हुए राजगृह माँहि, अतः धरा वह पावन।।
ले पूर्णार्घ्य सुथाल, श्रद्धा सहित चढ़ाऊँ।
मन का मैल उतार, तीरथ का फल पाऊँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणक पवित्रराजगृहीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—शेरछन्द—

हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।टेक.।।

यूँ तो जगत में जन्मते हैं प्राणि अनन्ते।
मरते हैं प्रतिक्षण भी यहाँ प्राणि अनन्ते।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।१।।

एकेन्द्रि से पंचेन्द्रि तक जो जीव आतमा।
उन सबमें छिपा शक्ति से भगवान आतमा।।

हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।२।।

भगवान आतमा प्रगट पुरुषार्थ से होता।
पुरुषार्थ बिना मात्र जग में खाना है गोता।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।३।।

तीर्थंकरों का सिद्धपद निश्चित है यद्यपी।
फिर भी तपस्या करके वे पाते हैं शिवगती।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।४।।

मैंने भी मनुष जन्म जो पाया अमोल है।
वह मोक्षमार्ग के लिए सचमुच ही मूल है।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।५।।

इस काल में निर्वाणपद की प्राप्ति नहीं है।
पर जन्म सार्थ करने की युक्ति यहीं है।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।६।।

पुरुषार्थ के द्वारा प्रथम तो कार्य शुभ करें।
जीवन में सदाचार से सारे अशुभ टलें।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।७।।

प्रभु जन्मभूमि अर्चन का अर्थ है यही।
आत्मा में रागद्वेष अल्प होवें शीघ्र ही।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।८।।

इस राजगृही में जनम मुनिसुव्रतेश का।
प्रभु वीर की खिरी यहीं पे प्रथम देशना।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।९।।

है पंच पहाड़ी में एक विपुलाचल गिरी।
जिस पर बनी रचना है प्रभू गंधकुटी की।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।१०।।

गणधर सुधर्मा ने यहीं से सिद्धपद लिया।
कुछ मुनि के सिद्धपद से सिद्धक्षेत्र यह हुआ।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।११।।

जिननाथ मुनिसुव्रतेश की बड़ी प्रतिमा।
श्री ज्ञानमती मात प्रेरणा की है महिमा।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।१२।।

जयमाल में यह अर्घ्य थाल मैं सजा लाया।
अर्पण करूँ अनर्घ्यपद की प्राप्त हो छाया।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।१३।।

भगवान श्री जिनेन्द्र से विनती यही मेरी।
मिट जावे ''चन्दनामती'' संसार की फेरी।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।१४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.—16)

शौरीपुर तीर्थ पूजा

—स्थापना (शंभु छंद)—

तीर्थंकर प्रभु श्री नेमिनाथ का, शौरीपुर में जन्म हुआ।
माँ शिवादेवि अरु पिता समुद्रविजय का शासन धन्य हुआ।।
उस जन्मभूमि शौरीपुर की, पूजन हेतू आह्वानन है।
सन्निधीकरण विधि के द्वारा, मैं करूँ तीर्थ स्थापन है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

—अष्टक—

तर्ज-तीरथ करने चली सती.....

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्में बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।
नीर पिया भव भव में मैंने, प्यास न लेकिन बुझ पाई।
प्रभु पद में जलधारा देने, हेतु तभी स्मृति आई।।
स्वर्ण कलश में जल लेकर, पूजा कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि के साथ वहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर की।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।। टेक०।।
चन्दन एवं चन्द्रकिरण, तन को शीतल कर सकते हैं।
मन को शीतल करने में, नहिं वे सक्षम हो सकते हैं।।

सुरभित चंदन घिस कर अब, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।

आतम सुख का स्वाद चखा नहिं, इसीलिए दुख पाया है।
खंडित सुख को समझ अखंडित, उसमें ही भरमाया है।।
अक्षयपद हित अक्षत ले, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।

हे प्रभु! कामदेव ने सारे, जग को अपने वश में किया।
इससे बचने हेतु सुगंधित, पुष्प चरण में अर्प दिया।।
निज सौरभ हित पुष्प को ले, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।

सभी तरह के पकवानों से, भूख मिटानी चाही है।
लेकिन कुछ पल भूख मिटी, नहिं शाश्वत तृप्ती पाई है।।

अब नैवेद्य थाल लेकर, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।

अज्ञान तिमिर के कारण आतम, में अंधियारा छाया है।
इसीलिए प्रभु सम्मुख आकर, घृत का दीप जलाया है।।
आरति थाल सजाकर मैं, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।

कर्म मुझे दुख देते हैं, तुम तो प्रभु कर्मरहित स्वामी।
अशुभ कर्म हों भस्म मेरे, इसलिए शरण आया स्वामी।।
अग्निपात्र में धूप जला, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।

बहुत तरह के फल खाकर भी, रसना तृप्त न हो पाई।
इसीलिए ताजे फल लेकर, प्रभु अर्चन की मति आई।।

शिवफल हित कुछ फल लेकर, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।

जल गंधाक्षत आदि अष्ट, द्रव्यों का थाल सजाया है।
निज अनर्घ्य पद प्राप्त करूँ, यह भाव हृदय में आया है।।
रत्नत्रय हित अर्घ्य चढ़ा, पूजन कर लूं तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शेर छन्द —

गंगा नदी के नीर से कलशे को भर लिया।
प्रभु नेमि जन्मभूमि पे जलधार कर दिया।।
राजा प्रजा व राष्ट्र भर में शांति कीजिए।
मेरी भी आतमा में नाथ! शांति दीजिए।।१०।।

शांतये शांतिधारा

शौरीपुरी उद्यान में जो फूल खिले हैं।
वहाँ नेमिनाथ जन्म के उल्लेख मिले हैं।।
उन पुष्पों से प्रभु पाद में पुष्पांजली करूँ।
निज आत्मसंपदा को पा दुख शोक सब हरूँ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि पञ्चदशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—प्रत्येक अर्घ्य (दोहा) —

कार्तिक सुदी छठ को जहाँ, हुई रतन की वृष्टि।
शौरीपुर की वह धरा, गर्भागम सुपवित्र।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथगर्भकल्याणक पवित्रशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि छठ नेमिप्रभु, जन्मे ले त्रय ज्ञान।
शौरीपुर वह जन्मभू, जजूँ मिले शिवथान।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मकल्याणक पवित्रशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि छठ को हुआ, नेमिनाथ वैराग।
ब्याह न कर वन चल दिये, कर राजुल का त्याग।।३।।

ॐ ह्रीं ऊर्जयन्तपर्वतस्य सहसाम्रवने दीक्षाकल्याणकप्राप्त श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्जयन्त गिरि पर हुआ, प्रभु को केवलज्ञान।
आश्विन सुदि एकम तिथी, जजूं नेमि भगवान।।४।।

ॐ ह्रीं ऊर्जयन्तपर्वतस्योपरिकेवलज्ञानकल्याणकप्राप्त श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य (दोहा) —

गर्भ जन्म कल्याण से, स्थल जो सु पवित्र।
पूजूँ मैं पूर्णार्घ्य ले, शौरीपुर को नित्य।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथगर्भजन्मकल्याणकपवित्रशौरीपुर-तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

तर्ज–हे वीर! तुम्हारे द्वारे पर.....

हे नेमिनाथ! तुम जन्मभूमि की, गुणगाथा गाएं कैसे।
शौरीपुर अतिशय पुण्यभूमि की, महिमा बतलाएं कैसे।।१।।

शब्दों की संख्या में कैसे, अगणित गुण बांधे जा सकते।
इन रूक्ष शब्द कण के द्वारा, भक्ति को दरशाएं कैसे।।२।।

जैसे दीपक से सूर्यदेव की, अर्चा लोक में होती है।
वैसे ही अल्पमती द्वारा, प्रभु गुणगाथा गाएं कैसे।।३।।

जैसे नदी का जल नदि में ही, अर्पण करते देखा मैंने।
वैसे ही अल्पशक्ति द्वारा, प्रभु जयमाला गाएं कैसे।।४।।

जैसे फूलों से वृक्षों की, पूजा करते हैं मूढ़मती।
वैसे ही तुच्छ भक्ति पुष्पों से, गुणमाला गाएं कैसे।।५।।

शौरीपुर राजा समुद्रविजय, श्री शिवादेवि संग रहते थे।
कर रहे देव जिनकी पूजा, उन महिमा बतलाएं कैसे।।६।।

इन सुत तीर्थंकर नेमी की, बारात चली जूनागढ़ को।
पशुबंधन लख वैराग्य हुआ, उस क्षण को बतलाएं कैसे।।७।।

राजुल ने भी नहिं ब्याह किया, पति का पथ अपनाया उसने।
दीक्षा लेकर आर्यिका बनी, उसका तप बतलाएं कैसे।।८।।

प्रभु नेमिनाथ ने ऊर्जयन्त, गिरि से मुक्ती पद प्राप्त किया।
निर्वाणथान वह पूज्य हुआ, उसकी महिमा गाएं कैसे।।९।।

इन बालयती तीर्थंकर का, जन्मस्थल शौरीपुर माना।
जहाँ अद्यावधि है जिनमंदिर, उसका यश बतलाएं कैसे।।१०।।

इक मंदिर और बटेश्वर में, जहाँ यात्री नित्य ठहरते हैं।
अतिशयकारी प्रतिमाओं का, हम अतिशय बतलाएं कैसे।।११।।

उस जन्मभूमि शौरीपुर को, पूर्णार्घ्य समर्पण है मेरा।
''चन्दनामती'' है चाह यही, रत्नत्रय को पाएं कैसे।।१२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.–17)

कुण्डलपुर तीर्थ पूजा

—स्थापना (चौबोल छन्द) —

महावीर प्रभु जहां जन्म ले, सचमुच बने अजन्मा हैं।
जिस धरती पर त्रिशला मां ने, एक मात्र सुत जनमा है।।
उस बिहार की कुण्डलपुर, नगरी को वन्दन करना है।
वन्दन कर उस तीरथ का, हर कण चन्दन ही समझना है।।

—दोहा —

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
अष्टद्रव्य का थाल ले, पूजा करूँ महान।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (शंभु छंद) —

जिनवर ने कर्मों की ज्वाला, समता के जल से शांत किया।
भक्तों ने ले जल की धारा, जिनवर का पद प्रक्षाल किया।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जहां प्रभु सन्मति को लखते ही, मुनियों की शंका दूर हुई।
जहां की चंदनसम माटी से, भव की बाधा निर्मूल हुई।।

महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुंडलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने अक्षय पद पाने का, जिस धरती पर संकल्प लिया।
अक्षत के पुंज चढ़ा मैंने, उन प्रभु अर्चन का यत्न किया।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

महलों का सुख वैभव तज कर, जहाँ वीर बने वैरागी थे।
कर कामदेव पर विजय चले, शिवपथ के वे अनुरागी थे।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

देवों द्वारा लाया भोजन, महावीर सदा ही खाते थे।
क्षुधरोग विनाशन हेतु तथापी, वे निज काय तपाते थे।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिश्रुत व अवधि त्रय ज्ञान सहित, तो वीर प्रभू थे जन्म से ही।
मनपर्ययज्ञान हुआ प्रगटित, प्रभुवर के दीक्षा लेते ही।।

महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूं शत वन्दन मैं।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुक्ल ध्यान की अग्नी में, कर्मों की धूप जलाते थे।
उनकी सौरभ पाने हेतु, प्रभु पास भक्तगण आते थे।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर प्रभु ने तप करके, कैवल्य महाफल पाया है।
भक्तों ने इच्छा पूर्ति हेतु, फल प्रभु चरणों में चढ़ाया है।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज अष्टकर्म के नाशक प्रभु की, अष्टद्रव्य से पूजन है।
''चन्दनामती'' शिवपद हेतू, सन्मति से मेरा निवेदन है।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शेर छन्द—

महावीर प्रभु की भक्ति की रसधार जो बही।
उससे मनुज व देवों में सुमति प्रगट हुई।।
निज शांति व शीतल सहज अनुभूति मैं करूँ।
जिनवर का ज्ञान अंश मैं भी निज हृदय भरूँ।।१।।

शांतये शांतिधारा.....

निज ज्ञान के पुष्पों को बिखेरा जो प्रभू ने।
उसकी सुगन्ध ग्रहण कर ली बहुत जनों ने।।
भगवान मुझे यदि तेरे, गुण पुष्प मिल सकें।
तो मेरा मोक्षमार्ग बन्द, स्वयं खुल सके।।

दिव्य पुष्पांजलिः.....

(इति मण्डलस्योपरि षोडशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—प्रत्येक अर्घ्य (शंभु छन्द)—

कुण्डलपुर में सिद्धार्थ नृपति, निज राज्य का संचालन करते।
प्रियकारिणि त्रिशला रानी के संग, पुण्य का संपादन करते।।
आषाढ़ सुदी छठ तिथि में नंद्यावर्त, महल का भाग्य जगा।
जहाँ गर्भ कल्याणक हुआ वीर का, मैं पूजूँ वह धाम महा।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्रगर्भकल्याणक पवित्रकुण्डलपुरतीर्थ-क्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित चैत्र त्रयोदशि को महावीर, प्रभू जन्मे कुण्डलपुर में।
स्वर्गों में बाजे बाज उठे, सुरपति के स्वयं ही मुकुट नमे।।
सुरशैल शिखर पर जन्मोत्सव कर, कुण्डलपुर प्रभु को लाये।
उस जन्मभूमि का अर्चन कर, हम सब मन में अति हरषाये।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्रजन्मकल्याणक पवित्रकुण्डलपुरतीर्थ-क्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जातिस्मरण वीर प्रभु को, दीक्षा का भाव हृदय जागा।
दीक्षा लेते ही प्रगट हुए, चउ ज्ञान मोहप्रभु का भागा।।
वैराग्य भूमि कुण्डलपुर को, मैं जजूँ मुझे वैराग्य मिले।
नृप कूल ने प्रथम आहार दिया, मैं नमूँ पुण्य साम्राज्य मिले।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्रदीक्षाकल्याणक पवित्रकुण्डलपुर-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुण्डलपुर निकट जृंभिका में ऋजुकूला तट पर ज्ञान हुआ।
उसके ऊपर गगनांगण में, प्रभु समवसरण निर्माण हुआ।।
मैं केवलज्ञान कल्याणक की, भूमी का नित्य यजन कर लूँ।
सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हेतु, सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्रकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रजृंभिका-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य—

जिस नगरी की रज महावीर के, कल्याणक से पावन है।
जहाँ इन्द्र इन्द्राणी की भक्ती का, सदा महकता सावन है।।
उस कुण्डलपुर में नंद्यावर्त, महल का सुन्दर परिसर है।
पूर्णार्घ्य चढ़ाकर नमूँ वहाँ, महावीर की प्रतिमा मनहर है।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र गर्भजन्मदीक्षाआदिकल्याणक पवित्रकुण्डलपुर-तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

तर्ज-जरा सामने तो आओ.....

जहाँ जन्मे वीर वर्धमान जी, जहाँ खेले कभी भगवान जी।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।टेक.।।

कुण्डलपुर में राजा सर्वारथ, के सुत सिद्धार्थ हुए।
जो वैशाली के नृप चेटक, की पुत्री के नाथ हुए।।
रानी त्रिशला की खुशियां अपार थी, सुन्दरता की वे सरताज थीं।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।१।।

राजहंस से मानसरोवर, जैसे शोभा पाता है।
वैसे ही प्रभु जन्म से जन्म, नगर पावन बन जाता है।।

जय जय होती है प्रभु पितु मात की, इन्द्र गाता है महिमा महान भी।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।२।।

प्रान्त बिहार में नालंदा के, निकट बसा कुण्डलपुर है।
छब्बिस सौंवे जन्मोत्सव में, गूंजा ज्ञानमती स्वर है।।
तभी आई घड़ी उत्थान की, होती दर्शन से जनता निहाल भी।
उस कुण्डलपुर की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।३।।

प्रभु तेरी उस जन्मभूमि का , कण-कण पावन लगता है।
छोटा सा भी उपवन तेरा, नन्दन वन सम लगता है।।
अर्घ्य का लाके इक लघु थाल जी, करूँ अर्पण झुका निज भाल भी।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।४।।

इस तीरथ के अर्चन से, आत्मा तीरथ बन सकती है।
इसकी कीरत के कीर्तन से, कीर्ति स्वयं की बढ़ती है।।
करूँ ''चन्दनामती'' प्रभु आरती, भरूँ मन में सुगुण की भारती।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.–18)

प्रयाग तीर्थक्षेत्र पूजा

—स्थापना (गीता छंद) —

वृषभेश प्रभु की त्यागभूमि तीर्थधाम प्रयाग है।
तीर्थंकरों की शृंखला में वे प्रथम जिनराज हैं।।
श्री नाभिनन्दन जगतवन्दन की तपोभूमी जजूँ।
आह्वान स्थापन तथा सन्निधिकरण विधि से भजूँ।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव दीक्षाकल्याणक केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयाग तीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव दीक्षाकल्याणक केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयाग तीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव दीक्षाकल्याणक केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयाग तीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक—

तर्ज —बार-बार तोहे क्या समझाऊँ.....

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपस्थली है प्रयाग।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।
गंगा यमुना सरस्वती की, धार जहाँ बहती है।
ऋषभदेव के रत्नत्रय की, कथा सदा कहती है।।
वही नीर से त्रयधारा दे, पाऊँ निज साम्राज्य।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव दीक्षाकल्याणक केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपस्थली है प्रयाग।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।

ऋषभदेव की तपोभूमि का, कण कण महक रहा है।
मानो अपने प्रभु की गुण, सुरभी से चहक रहा है।।
मलयागिरि चन्दन लेकर के, चर्चूं मैं प्रभु पाद।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव दीक्षाकल्याणक केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपस्थली है प्रयाग।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।
अक्षय पद की प्रथम शृंखला, प्रभुवर जहाँ चढ़े थे।
अक्षयवट के नीचे वे, योगी ध्यानस्थ खड़े थे।।
अक्षत के पुंजों से मैं भी, चाहूँ अक्षय राज।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव दीक्षाकल्याणक केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपस्थली है प्रयाग।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।
बेला चम्प चमेली एवं, पुष्प गुलाब खिले हैं।
पुष्पों के अंदर कोमलता, के गुण सदा खिले हैं।।
उन पुष्पों का थाल सजाकर, प्रस्तुत करुँ प्रभु पास।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव दीक्षाकल्याणक केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपस्थली है प्रयाग।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।
स्वर्गों का भोजन खाकर प्रभु, ऋषभदेव वन पहुँचे।
एक वर्ष उपवास किया, आहार हुआ गजपुर में।।

मैं भी इक नैवेद्य थाल ले, अर्पण करुँ प्रभु पास।
पूजा करुँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव दीक्षाकल्याणक केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपस्थली है प्रयाग।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।
अंधकार को दूर हटाकर, दीपक करे उजाला।
जब भी पूजन करना हो, घी का दीपक ले आना।।
इक छोटा सा दीपक लेकर, करूँ आरती नाथ।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव दीक्षाकल्याणक केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपस्थली है प्रयाग।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।
चन्दन अगर कपूर आदि की, धूप शुद्ध बनवाई।
अष्टकर्म के नष्ट हेतु, अग्नी में धूप जलाई।।
कर्मदहन की आदिभूमि है, तीरथराज प्रयाग।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव दीक्षाकल्याणक केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपस्थली है प्रयाग।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।
सेव आम अंगूर फलों की, चाह में जीवन बीता।
प्रभु ने शिवफल खाने हेतू, अपने मन को जीता।।

वह फल ही पाने हेतू मैं, अर्पूं फल का थाल।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव दीक्षाकल्याणक केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपस्थली है प्रयाग।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।
जल चन्दन अक्षत पुष्पादिक, दीप धूप फल लाऊँ।
कण कण पूजित तीरथ की, पूजन में अर्घ्य चढ़ाऊँ।।
फल अनर्घ्य मिल जावे मुझको, यही ''चन्दना'' आश।
पूजा करूँ मैं उसी, तीरथ की प्रभु आज।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव दीक्षाकल्याणक केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

संगम की धारा जहाँ, बहती अविरल आज।
उसी धार से मैं करूँ, तीरथ पर त्रयधार।।

शांतये शांतिधारा।

तपस्थली उद्यान से, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि ले हाथ में, अर्पूं प्रभु पद मांहि।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(इति मण्डलस्योपरि सप्तदशमदले पुष्पांजलि क्षिपेत्)

तर्ज-देख तेरे संसार की हालत.....

तीर्थ प्रयाग है ऋषभदेव का दीक्षा तीर्थ महान,
उसको कोटी कोटि प्रणाम।।टेक.।।
युग की पहली तपोभूमि है।
जिनशासन की यशोभूमि है।।
कोड़ाकोड़ी वर्ष बाद भी मिटा न उसका नाम।
उसको कोटी कोटि प्रणाम।।१।।

अष्टद्रव्य का थाल सजाया।
तीर्थ अर्चना हेतु चढ़ाया।।
करे ''चन्दनामती' तीर्थ का अर्चन बारम्बार।
उसको कोटी कोटि प्रणाम।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री ऋषभदेव दीक्षाकल्याणक पवित्र प्रयाग तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

तीर्थ प्रयाग में ऋषभदेव को हुआ था केवलज्ञान,
उसको कोटी कोटि प्रणाम।।टेक.।।

ज्ञान कल्याणक के प्रतीक में।
धनकुबेर ने रचा निमिष में।।
समवसरण की रचना से, भव्यों ने पाया ज्ञान,
उसको कोटी कोटि प्रणाम।।१।।

समवसरण को अर्घ्य चढ़ाऊँ।
तीर्थराज को शीश नमाऊँ।।
इस तीरथयात्रा से सबको मिलता आतमज्ञान,
उसको कोटी कोटि प्रणाम।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीऋषभदेव केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

तर्ज —हे वीर तुम्हारे.....

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपोभूमि को वन्दन है।
तीरथ प्रयाग के प्रति मेरा, श्रद्धायुत भाव समर्पण है।।टेक.।।

युग की आदी में सर्वप्रथम, जब केशलोंच की क्रिया हुई।
उत्कृष्ट महाव्रत धारण करने, की पहली प्रक्रिया हुई।।
वह भूमि प्रयाग बनी तब से, उसको मेरा शत वन्दन है।
तीरथ प्रयाग के प्रति मेरा, श्रद्धायुत भाव समर्पण है।।१।।

वहीं पुरिमतालपुर उपवन में, जिनवर को केवलज्ञान हुआ।
इक सहस वर्ष तप करने के, पश्चात् उन्हें यह लाभ हुआ।।
देवों ने समवसरण रचना में, बैठ किया प्रभु अर्चन है।
तीरथ प्रयाग के प्रति मेरा, श्रद्धायुत भाव समर्पण है।।२।।

कोड़ाकोड़ी वर्षों के भी, पश्चात् वहाँ अक्षयवट का।
इतिहास यही बतलाता है, प्रभुजी ने किया वहीं तप था।।
उस नगरी के रत्नत्रय के, प्रतिफल में बहती संगम है।
तीरथ प्रयाग के प्रति मेरा, श्रद्धायुत भाव समर्पण है।।३।।

गणिनी माता श्री ज्ञानमती की, मिली प्रेरणा भक्तों को,
नगरी प्रयाग में ऋषभदेव की, तपस्थली इक निर्मित हो।।
हुई धन्य तृतीय सहस्त्राब्दि, पाकर यह तीरथ पावन है।
तीरथ प्रयाग के प्रति मेरा, श्रद्धायुत भाव समर्पण है।।४।।

उस तपस्थली में निर्मित श्री, कैलाशगिरी को वन्दन है।
वहाँ शान्त विराजे ऋषभदेव की, प्रतिमा को शत वन्दन है।।
वटवृक्ष तले ध्यानस्थ प्रभू अरु, समवसरण को वन्दन है।
तीरथ प्रयाग के प्रति मेरा, श्रद्धायुत भाव समर्पण है।।५।।

इस पावन तीर्थ की पूजन को, हम थाल सजाकर लाए हैं।
वृषभेश्वर के वैरागी जीवन, से परिचित हो पाए हैं।।
''चन्दनामती'' मेरी आत्मा भी, बने तीर्थ नन्दनवन है।
तीरथ प्रयाग के प्रति मेरा, श्रद्धायुत भाव समर्पण है।।६।।

—दोहा—

त्याग प्रकृष्ट हुआ जहाँ, वह है तीर्थ प्रयाग।
उस तीरथ की अर्चना, भरे धर्म अनुराग।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेव दीक्षाकल्याणक केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.–19)

अहिच्छत्र तीर्थ पूजा

—स्थापना (शंभु छंद)—

तीर्थंकर प्रभु श्री पार्श्वनाथ, उपसर्गविजेता कहलाते।
इसलिए पार्श्व प्रभु संकट मोचन, चिंतामणि हैं कहलाते।।
उनकी उपसर्ग विजय एवं कैवल्यभूमि अहिच्छत्र जजूँ।
तीर्थंकर पद की प्राप्ति हेतु, उनकी कल्याणकभूमि नमूँ।।१।।

—दोहा—

आह्वानन स्थापना, करूँ प्रथम हे नाथ!
नंतर सन्निधिकरण कर, पूजूँ तीर्थ सनाथ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर पार्श्वनाथ केवलज्ञानकल्याणक पवित्र अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर पार्श्वनाथ केवलज्ञानकल्याणक पवित्र अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर पार्श्वनाथ केवलज्ञानकल्याणक पवित्र अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

—अष्टक—

स्वर्णिम झारी में जल लेकर, जलधारा प्रभु सम्मुख कर लूँ।
भवजल को जलांजली देकर, निज को निज में स्थिर कर लूँ।।
प्रभु पार्श्वनाथ उपसर्ग विजय, भूमी अहिच्छत्र को वंदन है।
उपसर्ग सहिष्णू बनने हित, तीरथ का कर लूँ अर्चन मैं।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मन की शीतलता हेतु शुद्ध, केशर प्रभु चरणों में चर्चूं।
भव के संकल्प-विकल्प तजूँ, निज को निज में स्थिर कर लूँ।।

प्रभु पार्श्वनाथ उपसर्ग विजय, भूमी अहिच्छत्र को वंदन है।
उपसर्ग सहिष्णू बनने हित, तीरथ का कर लूँ अर्चन मैं।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद पाने हेतु प्रभो! अक्षत पुंजों से मैं अर्चूं।
कर्मों को खण्डित करने हित, निज को निज में स्थिर कर लूँ।।
प्रभु पार्श्वनाथ उपसर्ग विजय, भूमी अहिच्छत्र को वंदन है।
उपसर्ग सहिष्णू बनने हित, तीरथ का कर लूँ अर्चन मैं।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषयों के नाश हेतु, पुष्पों द्वारा प्रभु को अर्चूं।
आत्यंतिक सुख की प्राप्ति हेतु, निज को निज में स्थिर कर लूँ।।
प्रभु पार्श्वनाथ उपसर्ग विजय, भूमी अहिच्छत्र को वंदन है।
उपसर्ग सहिष्णू बनने हित, तीरथ का कर लूँ अर्चन मैं।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हलुवा पूड़ी नैवेद्य आदि का, थाल सजा प्रभु को अर्चूं।
क्षुधरोग विनाशन हेतु नाथ, निज को निज में स्थिर कर लूँ।।
प्रभु पार्श्वनाथ उपसर्ग विजय, भूमी अहिच्छत्र को वंदन है।
उपसर्ग सहिष्णू बनने हित, तीरथ का कर लूँ अर्चन मैं।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन थाली में दीपक ले, मैं जिनवर की आरति कर लूँ।
मोहांधकार के नाश हेतु, निज को निज में स्थिर कर लूँ।।
प्रभु पार्श्वनाथ उपसर्ग विजय, भूमी अहिच्छत्र को वंदन है।
उपसर्ग सहिष्णू बनने हित, तीरथ का कर लूँ अर्चन मैं।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन अरु अगर तगर आदिक, अग्नी में धूप दहन कर लूँ।
कर्मारि दग्ध करने हेतू, निज को निज में स्थिर कर लूँ।।
प्रभु पार्श्वनाथ उपसर्ग विजय, भूमी अहिच्छत्र को वंदन है।
उपसर्ग सहिष्णू बनने हित, तीरथ का कर लूँ अर्चन मैं।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला अंगूर आदि, फल के द्वारा प्रभु को अर्चूं।
निर्वाण प्राप्ति के लिए नाथ, निज को निज में स्थिर कर लूँ।।
प्रभु पार्श्वनाथ उपसर्ग विजय, भूमी अहिच्छत्र को वंदन है।
उपसर्ग सहिष्णू बनने हित, तीरथ का कर लूँ अर्चन मैं।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अष्टद्रव्य ''चन्दनामती'', जिनवरपद में अर्पण कर दूँ।
निजपद अनर्घ्य की प्राप्ति हेतु, निज को निज में स्थिर कर लूँ।।
प्रभु पार्श्वनाथ उपसर्ग विजय, भूमी अहिच्छत्र को वंदन है।
उपसर्ग सहिष्णू बनने हित, तीरथ का कर लूँ अर्चन मैं।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

अहिच्छत्र शुभ तीर्थ है, शांति प्रदायक नित्य।
शांतीधारा मैं करूँ, उस पूजन के निमित्त।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

विविध भांति के पुष्प ले, पुष्पांजली करंत।
क्रम से पूजन पाठ कर, होवे भव का अंत।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(इति मंडलस्योपरि अष्टादशमदले पुष्पांजलि क्षिपेत्)

अर्घ्य (शंभु छंद)

श्री पार्श्वनाथ भगवान जहाँ इक बार ध्यान में तिष्ठे थे।
कमठाचर संवर देव के उपसर्गों में भी वे अविचल थे।।
धरणेन्द्र व पद्मावति ने आ उपसर्ग प्रभू का दूर किया।
तब केवलज्ञान हुआ प्रभुवर ने घाति कर्म चकचूर किया।।१।।

—दोहा—

अष्टद्रव्य का अर्घ्य ले, यजन करूँ तीर्थेश।
ज्ञानकल्याणक तीर्थ है, पार्श्वनाथ अहिच्छेत्र।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—दोहा—

अहिच्छत्र शुभ तीर्थ को, नितप्रति करूँ प्रणाम।
तीर्थंकर प्रभु पार्श्व को, हुआ जहाँ पर ज्ञान।।१।।

—शंभु छंद—

सिद्धों की श्रेणी में आकर, जिनने इतिहास बनाया है।
सिद्धी कन्या का परिणय कर, आत्यंतिक सुख को पाया है।।
उन सिद्धशिला के स्वामी पारसनाथ प्रभू को नमन करूँ।
उनकी उपसर्ग विजय भूमी, अहिच्छत्र तीर्थ को नमन करूँ।।२।।

इतिहास पुराना है लेकिन, हर पल हमको सिखलाता है।
शुभ क्षमा धैर्य अरु सहनशीलता का संदेश सुनाता है।।
अपनी आतमशांती से शत्रू, भी वश में हो सकता है।
क्या दुर्लभ है जो कार्य क्षमा के, बल पर नहिं हो सकता है।।३।।

अहिच्छत्र तीर्थ उत्तरप्रदेश के, जिला बरेली में आता।
जिसके दर्शन-वंदन करके, भक्तों को मिलती सुख साता।।
धरणेन्द्र और पद्मावति ने, जहाँ फण का छत्र बनाया था।
उपसर्ग निवारण कर प्रभु का, सार्थक अहिच्छत्र बनाया था।।४।।

है वर्तमान में भी अतिशय, वहाँ पार्श्वनाथ तीर्थंकर का।
मंदिर तो है अवलम्बन बस, कण-कण पावन है तीरथ का।।
इस तीरथ के पारस प्रभु को, कहते तिखाल वाले बाबा।
प्रतिमा छोटी है किन्तु वहाँ, भक्तों का बड़ा लगे तांता।।५।।

वहाँ तीन पूर्व मुख वेदी के ही, बीच में पद्मावति देवी।
अपने अतिशय को दिखा रहीं, पारसप्रभु की शासन देवी।।
लौकिक सुख की इच्छा से सारे, भक्त पूजते हैं इनको।
प्राचीन पद्धती है यह ही, मिथ्यात्व न तुम समझो इसको।।६।।

इस मंदिर के बीचों बिच में, खड्गासन पार्श्वनाथ प्रतिमा।
प्रभु के शरीर अवगाहनयुत, होने से उसकी है महिमा।।
यह मंदिर बना ज्ञानमति माताजी की पुण्य प्रेरणा से।
उनके ही द्वारा दिये गये, प्रभु नाम यहाँ उत्कीर्ण भी हैं।।७।।

ढाईद्वीपों के पाँच भरत, पंचैरावत की प्रतिमाएँ।
दश क्षेत्रों के त्रैकालिक सात सौ बीस जिनेश्वर कहलाए।।
इनका वंदन करने से इक दिन, खुद का भी वंदन होगा।
इनका अर्चन करने से इक दिन, निज का भी अर्चन होगा।।८।।

इस तीस चौबीसी मंदिर में, दश कमलों पर जिनप्रतिमाएँ।
वे सात शतक अरु बीस मूर्तियाँ, सर्वसिद्धि को दिलवाएँ।।
इस जिनभक्ती की तुलना कोई, पुण्य नहीं कर सकता है।
इस भक्ती के द्वारा मानव, भवसागर से तिर सकता है।।९।।

श्री पार्श्वनाथ पद्मावति मंदिर, नाम से इक मंदिर भी है।
जहाँ पार्श्वनाथ के साथ मात, पद्मावति पूजी जाती हैं।।

जिनवर के आजू-बाजू में, धरणेन्द्र व पद्मावति प्रतिमा।
बतलाती हैं अहिच्छत्र तीर्थ, सार्थकता की गौरव-गरिमा।।१०।।

अहिच्छत्र तीर्थ की जयमाला, पढ़कर उसका ही स्मरण करूँ।
पारस प्रभु के अगणित गुण में से, क्षमा भाव को ग्रहण करूँ।।
जयमाला का पूर्णार्घ्य चढ़ाकर, मन में यह अरमान बने।
''चन्दनामती'' इस जीवन में, अहिच्छत्र तीर्थ वरदान बने।।११।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रअहिच्छत्रतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.—20)

महावीर केवलज्ञान भूमि जृम्भिका तीर्थ पूजा

—स्थापना—

तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू, जृंभिका ग्राम में तिष्ठे थे।
ऋजुकूल नदि के तट पर, ध्यान अवस्था में वे बैठे थे।।
तब कर्म घातिया नाश उन्होंने दिव्यज्ञान को प्रगट किया।
उस केवलज्ञान तीर्थ अर्चन का भाव हृदय में उदित हुआ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमहावीरकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र जृम्भिका तीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमहावीरकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र जृम्भिका तीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमहावीरकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र जृम्भिका तीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

—अष्टक—

भावों का निर्मल जल लेकर, तीर्थंकर पद प्रक्षाल करूँ।
निज जन्म मरण के नाश हेतु, प्रभु चरणों में बस ध्यान करूँ।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर का केवल-ज्ञान कल्याणक तीर्थ नमूँ।
कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हेतु, मन वच तन से प्रभु को प्रणमूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमहावीरकेवलज्ञानभूमिजृम्भिकातीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर में कर्पूर, मिला जिनवर पद में चर्चूं।
संसार ताप के नाश हेतु, भावों से प्रभु पूजन कर लूँ।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर का केवल-ज्ञान कल्याणक तीर्थ नमूँ।
कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हेतु, मन वच तन से प्रभु को प्रणमूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमहावीरकेवलज्ञानभूमिजृम्भिकातीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल अखंड ले बासमती, प्रभु सन्निध पुंज चढ़ाऊँ मैं।
अक्षय पद की प्राप्ती हेतू, भावों को शुद्ध बनाऊँ मैं।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर का केवल-ज्ञान कल्याणक तीर्थ नमूँ।
कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हेतु, मन वच तन से प्रभु को प्रणमूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमहावीरकेवलज्ञानभूमिजृम्भिकातीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा गुलाब बेला आदिक, पुष्पों की माल करूँ अर्पण।
हो कामबाण विध्वंस मेरा, इसलिए तीर्थ को करूँ नमन।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर का केवल-ज्ञान कल्याणक तीर्थ नमूँ।
कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हेतु, मन वच तन से प्रभु को प्रणमूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमहावीरकेवलज्ञानभूमिजृम्भिकातीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सजाकर थाली में, जिनवर के निकट चढ़ाना है।
निज क्षुधारोग के नाश हेतु, भावों को शुद्ध बनाना है।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर का केवल-ज्ञान कल्याणक तीर्थ नमूँ।
कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हेतु, मन वच तन से प्रभु को प्रणमूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमहावीरकेवलज्ञानभूमिजृम्भिकातीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीपक थाली में ले, जिनवर की आरति करना है।
मोहान्धकार के नाश हेतु निज, आत्मशुद्धि अब करना है।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर का केवल-ज्ञान कल्याणक तीर्थ नमूँ।
कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हेतु, मन वच तन से प्रभु को प्रणमूँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमहावीरकेवलज्ञानभूमिजृम्भिकातीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु धूप सुगंधित ले, प्रभु सम्मुख अग्नि में दहन करूँ।
कर्मों के विध्वंसन हेतू, निज आत्मतत्व में रमण करूँ।।

तीर्थंकर प्रभु महावीर का केवल-ज्ञान कल्याणक तीर्थ नमूँ।
कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हेतु, मन वच तन से प्रभु को प्रणमूँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमहावीरकेवलज्ञानभूमिजृम्भिकातीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नारंगी आम बिजौरा आदिक, फल प्रभु पद में अर्पित है।
शिवफल की प्राप्ती हेतु नाथ, मम श्रद्धाभाव समर्पित है।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर का केवल-ज्ञान कल्याणक तीर्थ नमूँ।
कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हेतु, मन वच तन से प्रभु को प्रणमूँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमहावीरकेवलज्ञानभूमिजृम्भिकातीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल थाल लिया।
निजपद अनर्घ्य की प्राप्ति हेतु, 'चन्दनामती' नत भाल किया।।
तीर्थंकर प्रभु महावीर का केवल-ज्ञान कल्याणक तीर्थ नमूँ।
कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हेतु, मन वच तन से प्रभु को प्रणमूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमहावीरकेवलज्ञानभूमिजृम्भिकातीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा — **तीर्थ जृंभिका के निकट, कर लूँ शांतीधार।**
आत्मशांति की प्राप्ति हो, होऊँ भव से पार।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्प सुगंधित ले विविध, जिनवर चरण चढ़ाय।
पुष्पांजलि के निमित से, हृदय पुष्प खिल जाय।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(इति मण्डलस्योपरि एकोनविंशतितमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अर्घ्य *(शंभु छंद)*

जृंभिका ग्राम में ऋजुकूला नदि तट पर वीरप्रभू तिष्ठे।
तब शुक्लध्यान के अतिशय से कैवल्यसूर्य प्रगटा उनके।।

उस ज्ञानकल्याणक तीर्थधाम का अर्चन जगहितकारी है।
आत्मा में सम्यग्ज्ञान प्रगट हो, यही भाव सुखकारी है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीरकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र जृंभिकातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—शंभु छंद—

जय जय तीर्थंकर महावीर, जय उनके तीरथ की जय हो।
जय कुण्डलपुर के नाथ वीर, जय उनकी कीरत की जय हो।।
जय गर्भ जन्म तप भूमि तीर्थ कुण्डलपुर हो जयशील सदा।
जय हो कैवल्यभूमि जहाँ वीर का पहला समवसरण था रचा।।१।।

बारह वर्षों तक तप करके जब प्रभु को केवलज्ञान हुआ।
घाती कर्मों का कर विनाश आत्मा का उनको भान हुआ।।
धनपति ने तत्क्षण नभ में रचना समवसरण की कर डाली।
बीचोंबिच गंधकुटी में जिनवर शोभ रहें महिमाशाली।।२।।

उस नगर जृंभिका में जब पहला समवसरण था बना हुआ।
पर वीर प्रभू की दिव्यध्वनि नहिं खिरी अतः आश्चर्य हुआ।।
सुरनर मुनिगण थे विद्यमान लेकिन सन्नाटा छाया था।
क्यों नहीं खिरी दिव्यध्वनि प्रभु की कोई समझ न पाया था।।३।।

भव्यात्मा जन प्रभु के दर्शन करके सम्यग्दर्शन पाते।
रचना लख करके समवसरण की तृप्त स्वयं भी हो जाते।।
प्रभु वीर जहाँ करते विहार उन चरण कमल तल कमल खिलें।
हर जगह इन्द्र किंकर बनकर तीर्थंकर प्रभु के संग चले।।४।।

प्रभु श्री विहार होते-होते छ्यासठ दिन ऐसे निकल गये।
तब चिंतित होकर इन्द्रराज कुछ अन्वेषण को निकल पड़े।।

ब्राह्मण नामक इस नगरी में, विद्वत्समूह एकत्रित था।
वहाँ गौतम गोत्री इन्द्रभूति, के ज्ञान से इन्द्र भी विस्मित था।।५।।

उसने गौतम से प्रश्न किया, वे उत्तर बता नहीं पाये।
निज पाँच शतक शिष्यों के संग, गौतम फिर प्रभु सम्मुख आये।।
उस समय राजगिरि के विपुलाचल पर निर्मित था समवसरण।
वहाँ मानस्तंभ देखते ही हुआ इन्द्रभूति का मान भंग।।६।।

जा समवसरण के अंदर गौतम वीर प्रभू के शिष्य बने।
तत्क्षण दिव्यध्वनि प्रगट हुई, पहले गणधर गौतम ही बने।।
जग भर में जय जयकार हुई, महावीर व गौतम गणधर की।
जन जन में खुशी अपार हुई, सबको मानो नव निधी मिली।।७।।

जिस धरती पर महावीर प्रभू को केवलज्ञान प्रकाश मिला।
उस तीर्थ जृम्भिका में अब जीर्णोद्धार विकास का पुष्प खिला।
गणिनी माता श्री ज्ञानमती की हुई प्रेरणा कुछ ऐसी।
तीर्थंकर प्रभु के कल्याणक तीर्थों की ओर करो दृष्टी।।८।।

ये तीर्थ जैन संस्कृति के उद्गम स्थल हैं सचमुच जानो।
इनके विकास में मानव का सर्वतोमुखी विकास मानो।।
इस ही विकास क्रम में तीरथ जृंभिका को शत-शत वंदन है।
''चन्दनामती'' जयमाला के माध्यम से अर्घ्य समर्पण है।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमहावीरकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र जृम्भिका तीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(पूजा नं.–21)

कैलाशपर्वत की पूजा

तर्ज —आओ बच्चों.....

चलो सभी मिल पूजन कर लें, गिरि कैलाश महान की।
प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के, प्रथम मोक्षस्थान की।।
वन्दे गिरिवरम्, वन्दे गिरिवरम्, वन्दे गिरिवरम् ।।

कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व जहाँ ऋषभदेव जी मोक्ष गए।
चक्रवर्ति भरतेश्वर ने वहाँ, रत्नजिनालय बना दिये।।
जय जय बोलो, वन्दन कर लो, उस अष्टापद धाम की।
प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के, प्रथम मोक्ष स्थान की।।
वन्दे गिरिवरम्, वन्दे गिरिवरम्, वन्दे गिरिवरम् ।।१।।

उस पर्वत का कण-कण पावन, पूज्य सदा के लिए हुआ।
इसीलिए हमने उसकी, पूजन का थाल सजाय लिया।।
सबसे पहले आह्वानन कर, करूँ अर्चना नाथ की।
प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के, प्रथम मोक्ष स्थान की।।
वन्दे गिरिवरम्, वन्दे गिरिवरम्, वन्दे गिरिवरम् ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक—

तर्ज —माई रे माई.....

ऋषभदेव निर्वाणभूमि कैलाशगिरी को नम लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय।।

गिरि से गिरती गंगा नदि का, पावन जल ले करके।
स्वर्ण भृंग से त्रयधारा, डालूँ जिनवर के पद में।।
जन्म मरण नश जाए मेरा.....

जन्म मरण नश जाए मेरा भी, यही भावना भर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।। प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर के मन में जब चन्दन, सी शीतलता आई।
तभी जगत का ताप शांतकर, शाश्वत शांती पाई।।
मलयागिरि चन्दन घिस करके.....

मलयागिरि चन्दन घिस करके, प्रभु का चर्चन कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पर्वत पर बालि मुनी ने, ऐसा ध्यान लगाया।
रहे अकम्प तपस्या में, तब ही अक्षयपद पाया।।
अक्षत के पुंजों से गिरि की.....

अक्षत के पुजों से गिरि की, भक्ति अर्चना कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के अतिशय से अष्टापद, पुष्पों से महका था।
आज न जाने कहाँ गया वह, मोक्षधाम पहला था।।
पुष्प चढ़ा करके परोक्ष में.....
पुष्प चढ़ा करके परोक्ष में, ही सुगंधि मन भर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभदेव के पास इन्द्र जब, पूजन करने पहुँचे।
अमृतमय नैवेद्य थाल भर, प्रभु को अर्पण करते।।
अपने इस नैवेद्य में भी.....
अपने इस नैवेद्य में भी, कल्पना दिव्य की कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहतिमिर को दूर भगा, प्रभु पद्मासन बैठे थे।
देव मनुज निज मोह भगाने, को आरति करते थे।।
घृत के लघु दीपक से.....
घृत के लघु दीपक से ही, गिरिवर की आरति कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिप्रभू की तप सुगंधि, पूरे पर्वत पर फैली।
उनकी पूजा हेतु सुगंधित, धूप वहाँ पर महकी।।
अष्टगंध की धूप को ही.....
अष्टगंध की धूप को ही, अग्नी में दहन सब कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चउतरफा कैलाशगिरी पर, फल युत वृक्ष झुके थे।
मानो वृषभेश्वर के पद में, वे वन्दन करते थे।।
उन जैसा फल पाने हेतू.....
उन जैसा फल पाने हेतू, फल से पूजन कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत व पुष्प चरु, दीप धूप फल लेकर।
पद अनर्घ्य मिलता है चन्दनामती अर्घ्य अर्पित कर।।
इसीलिए अब अर्घ्य थाल.....
इसीलिए अब अर्घ्य थाल, गिरिवर को अर्पण कर दो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

गिरि कैलाश के ही विमल, झरने का ले नीर।
शांतीधारा मैं करूँ, मिटे मेरी भवपीर।।

शान्तये शांतिधारा।

उपवन से चुन चुन सुमन, अंजलि भरकर नाथ।
अर्पूं मैं उस गिरि निकट, मुक्त हुए जहाँ आप।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(इति मण्डलस्योपरि विंशतितमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अर्घ्य *(शंभु छंद)*

पहले तीर्थंकर ऋषभदेव, कैलाशगिरी पर जा करके।
चौदह दिन योग निरोध किया, निज आतमध्यान लगा करके।।

फिर माघ कृष्ण चौदश के दिन, मुक्ती कन्या का वरण किया।
ले अर्घ्य थाल, उस सिद्धक्षेत्र कैलाशगिरी का यजन किया।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरऋषभदेव निर्वाणकल्याणक पवित्र कैलाशपर्वत सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन चौबीसी के अर्घ्य

—सोरठा—

जिनप्रतिमा निर्माण, कथा युगादी से बनी।
चक्रवर्ति सम्राट, रत्नमूर्तियाँ दी घनी।।

—शंभु छंद—

निर्वाणनाथ से शांतिनाथ तक, चौबिस तीर्थंकर माने।
ये भूतकाल में भरतक्षेत्र के, आर्यखंड में थे जन्मे।।
उन भगवन्तों की प्रतिमाएँ, रत्नों की बड़ी मनोहर हैं।
चरणों में अर्घ्य समर्पित कर, हो गया धन्य मन मंदिर है।।२।।

ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतस्योपरिविराजितभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जिनप्रतिमाचरणेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ऋषभदेव से महावीर तक, चौबीसों तीर्थंकर हैं।
रत्नों की प्रतिमा में हमने, माना साक्षात् जिनेश्वर हैं।।
उन सब जिनवर के चरणों में, मेरा यह अर्घ्य समर्पित है।
श्री वर्तमान चौबीसी के, दर्शन से मन आनन्दित है।।३।।

ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतस्योपरिविराजितवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकराणां जिनप्रतिमाचरणेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महापद्म से अनंतवीर्य तक, चौबिस भावी जिनवर हैं।
प्रभु आदिनाथ की दिव्यध्वनि से, जाना वे क्षेमंकर हैं।।

नाना प्रकार की मणियों से, उनकी प्रतिमाएँ बनीं वहाँ।
उन पद में अर्घ्य समर्पण कर, मेरे मन में छाईं खुशियाँ।।४।।

ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतस्योपरिविराजितभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकराणां जिनप्रतिमाचरणेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

तर्ज—भवसागर अपार है.....

ऊँचा सा पहाड़ है, अष्टापद गिरिराज है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।टेक.।।

नाभिराय मरुदेवी के नन्दन, तीर्थंकर प्रभु प्रथम हुए।।तीर्थंकर.....
राजपाट सब त्याग वनों में, जाकर मुनिवर प्रथम हुए।।जाकर.....
मन में हुआ विचार है, नश्वर सब संसार है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।१।।

चौदह दिन की आयु रही जब, अष्टापद पर पहुँच गये।अष्टापद.....
योग निरोधा कर्म नष्टकर, सिद्धालय को प्राप्त हुए।।सिद्धालय....
सुख का वह साम्राज्य है, तीन लोक सरताज है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।२।।

आओ खोज करें उस गिरि की, कहाँ आज वह लुप्त हुआ।। कहाँ.....
चक्रवर्ती भरतेश्वर ने जहाँ, रत्नमूर्ति निर्माण किया।।रत्नमूर्ति...
कहते ग्रन्थ पुराण हैं, इतिहासों में नाम है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।३।।

मानी रावण ने मुनि पर वहाँ, एक बार उपसर्ग किया।।एक बार.....
मुनि ने तब जिनमंदिर रक्षा, हेतू इक पग दबा दिया।।हेतू एक.....

कथा यही विख्यात है, रोया रावण राज है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।४।।

उस गिरिवर से और न जाने, कितने मुनिवर मोक्ष गए।कितने मुनिवर.....
इसीलिए ''चन्दना'' भक्तगण, अष्टापद की भक्ति करें।।अष्टापद की.....
अर्घ्य समर्पण नाथ है, कर लेना स्वीकार है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से पावन गिरि कैलाश है।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.—22)

सम्मेदशिखर पूजन

रचयित्री- गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी

—अथ स्थापना- शंभु छन्द—

गिरिवर सम्मेदशिखर पावन, श्रीसिद्धक्षेत्र मुनिगण वंदित।
सब तीर्थंकर इस ही गिरि से, होते हैं मुक्तिवधू अधिपति।।
मुनिगण असंख्य इस पर्वत से, निर्वाण धाम को प्राप्त हुये।
आगे भी तीर्थंकर मुनिगण का, शिवथल यह मुनिनाथ कहें।।१।।

दोहा— **सिद्धिवधू प्रिय तीर्थंकर, मुनिगण तीरथराज।**
आह्वानन कर मैं जजूँ, मिले सिद्धिसाम्राज्य।।२।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

चाल-नन्दीश्वर पूजा

भव भव में शीतल नीर, जी भर खूब पिया।
नहिं मिटी तृषा की पीर, आखिर ऊब गया।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।१।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भव में त्रयविध ताप, अतिशय दाह करे,
चंदन से पूजत आप, अतिशय शांति भरे।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।२।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! सर्वसुखहेतु, सबकी शरण लिया।
अब अक्षय सुख के हेतु, तुम पद पुंज किया।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।३।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु वर्ण वर्ण के फूल, चरण चढ़ाऊँ मैं।
मिल जाये भवदधिकूल, समसुख पाऊँ मैं।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।४।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी पेड़ा पकवान, नित्य चढ़ाऊँ मैं।
हो क्षुधा व्याधि की हान, निजसुख पाऊँ मैं।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।५।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूरज्योति उद्योत, आरति करते ही।
हो ज्ञानज्योति उद्योत, भ्रम तम विनशे ही।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।६।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप अग्नि में खेय, कर्म जलाऊँ मैं।
जिनपद पंकज को सेय, सौख्य बढ़ाऊँ मैं।।

सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।७।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लेकर बहुफल की आश, बहुत कुदेव जजे।
अब एक मोक्षफल आश, फल से तीर्थ जजें।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।८।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर अर्घ रजत के फूल, लेकर नित्य जजूँ।
होवे त्रिभुवन अनुकूल, तीरथराज जजूँ।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।९।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

झरने का अतिशीत जल, शांतीधार करंत।
त्रिभुवन में हो सुख अमल, सर्वशांति विलसंत।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब ले, तीर्थराज को नित्य।
पुष्पांजली चढ़ावते, मिले सर्वसुख इत्य।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक टोंक अर्घ

—सोरठा—

तीर्थराज सुर वंद्य, पूजत निज सुख संपदा।
मिले ज्ञान आनंद, पुष्पांजलि कर मैं जजूँ।।१।।

(इति मण्डलस्योपरि एकविंशतितमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री सम्मेद शिखर टोंक पूजन

सिद्धवर कूट नं. १(शुभ छन्द)

श्री अजितनाथ जिन कूट सिद्धवर से निर्वाण पधारे हैं।
उन संघ हजार महामुनिगण, हन मृत्यू मोक्ष सिधारे हैं।।
इससे ही एक अरब अस्सी, कोटी अरु चौवन लाख मुनी।
निर्वाण गये सबको पूजूँ, मैं पाऊँ निज चैतन्य मणी।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
बत्तिस कोटि उपवास फल, अनुक्रम से निज राज्य।।१।।

ॐ ह्रीं सिद्धवरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल कूट नं. २

श्री संभव जिनवर धवलकूट से, हजार मुनिसह मोक्ष गये।
इससे नौ कोड़िकोड़ि बाहत्तर, लाख बियालिस हजार ये।।
मुनि पाँच शतक मुनिराज सर्व, निर्वाण धाम को प्राप्त किये।
इन सबके चरण कमल पूजूँ, निजज्ञान ज्योति हो प्रगट हिये।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
ब्यालिस लाख उपवास फल, अनुक्रम से शिवराज्य।।२।।

ॐ ह्रीं धवलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित सम्भव नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्द कूट नं. ३

अभिनंदन जिन आनंद कूट से, हजार मुनिसह सिद्ध बने।
बाहत्तर कोड़िकोड़ि सत्तर, कोटि मुनि सत्तर लाख बने।।

ब्यालीस सहस अरु सातशतक, मुनि यहाँ से मोक्ष पधारे हैं।
इन सबके चरण कमल वंदूँ, ये सबको भवदधि तारे हैं।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना नित्य।
एक लाख उपवास फल, मिले स्वात्म सुख नित्य।।३।।

ॐ ह्रीं आनन्दकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित अभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल कूट नं. ४

श्री सुमतिनाथ अविचल सुकूट से, सहस साधु सह मोक्ष गये।
इक कोड़ि कोड़ि चौरासि कोटि, बाहत्तर लाख महामुनि ये।।
इक्यासी सहस सात सौ, इक्यासी मुनि इससे मोक्ष गये।
इन सबके चरण कमल पूजूँ, हो शांति अलौकिक प्रभो ! हिये।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि बत्तीस लख, मिले सुफल उपवास।।४।।

ॐ ह्रीं अविचलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहन कूट नं. ५

श्री पद्म प्रभू मोहन सुकूट से, तीन शतक चौबिस मुनिसह।
निर्वाण पधारे आत्मसुधारस, पीते मुक्ति वल्लभा सह।।
इससे निन्यानवे कोटि सत्यासी, लाख तेतालिस सहस तथा।
मुनि सातशतक सत्ताइस सब, शिव पहुँचे पूजत हरूँ व्यथा।।

—दोहा—

जो वंदे इस टोंक को, स्वर्ग मोक्ष फल लेय।
एक कोटि उपवास फल, तत्क्षण उन्हें मिलेय।।५।।

ॐ ह्रीं मोहनकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभास कूट नं. ६

जिनवर सुपार्श्व सुप्रभासकूट से, पाँच शतक मुनि साथ लिये।
उनचास कोटिकोटि चौरासी, कोटि सुबत्तिस लाखसु ये।।
मुनि सात सहस सात सौ ब्यालिस, कर्मनाश शिवनारि वरी।
मैं सबके चरण कमल पूजूँ, मेरी होवे शुभ पुण्य घड़ी।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
बत्तिस कोटि उपवास फल, मिले मोक्ष सुख राज्य।।६।।

ॐ ह्रीं प्रभासकूटात्सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ललित कूट नं. ७

श्री चंद्रनाथ निज ललितकूट से, सहस मुनी सह मोक्ष गये।
इससे नव सौ चौरासि अरब, बाहत्तर कोटि अस्सि लख ये।।
चौरासि हजार पाँच सौ पंचानवे, साधुगण सिद्ध हुये।
इनके चरणों में बार-बार, प्रणमूँ शिव सुख की आश लिये।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
छ्यानवे लाख उपवास फल, मिले सरें सब काज।।७।।

ॐ ह्रीं ललितकूटात्सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रभ कूट नं. ८

श्री पुष्पदंत सुप्रभ सुकूट से, सहस साधु सह सिद्ध हुये।
इससे ही इक कोड़ाकोड़ी, निन्यानवे लाख महामुनि ये।।
पुनि सात सहस चार सौ अस्सी, मुनी मोक्ष को पाये हैं।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ाकर के, ये गुण अनंत निज पाये हैं।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक को, जो वंदे कर जोड़।
एक कोटि उपवास फल, लहें विघ्न घनतोड़।।८।।

ॐ ह्रीं सुप्रभकूटात्सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितपुष्पदंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत्वर कूट नं. ९

श्री शीतलजिन विद्युत सुकूट से, सहस साधुसह मोक्ष गये।
इससे अठरा कोड़ाकोड़ी, ब्यालीस कोटि साधुगण ये।।
बत्तीस लाख ब्यालिस हजार, नव शतक पाँच मुनि मोक्ष गये।
इनके चरणारविंद पूजूँ, परमानंद सुख की आश लिये।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से निज साम्राज्य।।९।।

ॐ ह्रीं विद्युत्वरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकुल कूट नं. १०

श्रेयांस प्रभू संकुल सुकूट से, एक सहस मुनि के साथे।
निर्वाण पधारे परम सौख्य को, प्राप्त किया भवरिपु घाते।।
इससे छ्यानवे कोटिकोटि, छ्यानवे कोटि छ्यानवे लक्ष।
नव सहस पाँच सौ ब्यालिस मुनि, शिव गये जजूँ कर चित्त स्वच्छ।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि उपवास फल, मिले पुनः शिवराज।।१०।।

ॐ ह्रीं संकुलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवीर कूट नं. ११

श्री विमल जिनेंद्र सुवीर कूट से, छह सौ मुनि सह सिद्ध हुये।
इससे सत्तर कोड़ा कोड़ी अरु, साठ लाख छह सहस हुये।।
मुनि सात शतक ब्यालिस मुनी, सब कर्मनाश शिवधाम गये।
उन सबके चरण कमल पूजूँ, मेरे सब कारज सिद्ध भये।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से शिव साम्राज्य।।११।।

ॐ ह्रीं सुवीरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंभू कूट नं. १२

वर कूट स्वयंभू से अनंत जिन, निज अनंत पद प्राप्त किया।
उन साथ सात हज्जार साधु ने, कर्मनाश निज राज्य लिया।।
इससे छ्यानवे कोटिकोटि, सत्तर करोड़ मुनि मोक्ष गये।
पुनि सत्तर लाख सत्तर हजार, अरु सात शतक मुनि मुक्त भये।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
नव करोड़ उपवास फल, क्रम से शिव साम्राज्य।।१२।।

ॐ ह्रीं स्वयंभूकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदत्त कूट नं. १३

श्री धर्मनाथ जिन सुदत्त कूट से, कर्मनाश कर मोक्ष गये ।
उनके साथ आठ सौ इक मुनि, पूर्ण सौख्य पा मुक्त भये ।।
उससे उनतिस कोड़ा कोड़ी, उन्निस कोटी साधू पूजूँ।
नौ लाख नौ सहस सात शतक, पंचानवे मुक्त गये पूजूँ।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना नित्य।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से अनुपम सिद्धि।।१३।।

ॐ ह्रीं सुदत्तकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद प्रभ कूट नं. १४

श्री शांतिनाथ जिन कुंद कूट से, नव सौ मुनि सह मुक्ति गये।
नव कोटि कोटि नव लाख तथा, नव सहस व नौ सौ निन्यानवे।।
इस ही सुकूट से मोक्ष गये, इन सबके चरण कमल वंदूँ।
प्रभु दीजे परम शांति मुझको, मैं शीघ्र कर्म अरि को खंडूँ।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना नित्य।
एक कोटि उपवास फल, मिले ज्ञान सुख नित्य।।१४।।

ॐ ह्रीं कुंदप्रभकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानधर कूट नं. १५

—शंभु छन्द—

श्री कुंथुनाथ जिन कूट ज्ञानधर, से निर्वाण पधारे हैं।
उन साथ में इक हजार साधू, सब कर्मनाश गुणधारे हैं।।
इससे छ्यानवे कोड़ा कोड़ी, छ्यानवे कोटि बत्तीस लाख।
छ्यानवे सहस सात सौ ब्यालिस, शिव पहुँचे मुनि पूजूँ आज।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक को, जो वंदे सिर नाय।
एक कोटि उपवास फल, लहे स्वात्मनिधि पाय।।१५।।

ॐ ह्रीं ज्ञानधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितश्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाटक कूट नं. १६

श्री अरहनाथ नाटक सुकूट से, सहस साधु सह मुक्ति गये।
इस ही से निन्यानवे कोटि, निन्यानवे लाख महामुनि ये।।
नव सौ निन्यानवे सर्व साधु, निर्वाण पधारे पूजूँ मैं।
सम्यक्त्व कली को विकसित कर, संपूर्ण दुःखों से छूटूँ मैं।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
छ्यानवे कोटि उपवास फल, पाय लहूँ निजराज।।१६।।

ॐ ह्रीं नाटककूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संबल कूट नं. १७

श्री मल्लिनाथ संबल सुकूट से, मोक्ष गये सब कर्म हने।
मुनि पाँच शतक प्रभु साथ मुक्ति को, प्राप्त किया गुण पाय घने।।
इस ही से छ्यानवे कोटि महामुनि, सर्व अघाती घाता था।
मैं परमानंदामृत हेतू इन पूजूँ गाऊँ गुण गाथा।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक को , वंदूँ बारंबार।
एक कोटि प्रोषधमयी, फल उपवास जु सार।।१७।।

ॐ ह्रीं संबलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निरजर कूट नं. १८

श्री मुनिसुव्रत निर्जरसुकूट से, सहस साधु सह मुक्ति गये।
इससे निन्यानवे कोटिकोटि, सत्यानवे कोटि महामुनि ये।।
नौ लाख नौ सौ निन्यानवे सब, मुनिराज मोक्ष को प्राप्त हुये।
हम इनके चरणों को पूजें, निज समतारस पीयूष पियें।।

—दोहा—

कोटि प्रोषध उपवास फल, टोंक वंदते जान।
क्रम से सब सुख पायके, अंत लहें निर्वाण।।१८।।

ॐ ह्रीं निर्जरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मित्रधर कूट नं. १९

—दोहा—

नमिजिनवर कूट मित्रधर से, इक सहस साधु सहमुक्ति गये।
इससे नव सौ कोड़ाकोड़ी, इक अरब लाख पैंतालिस ये।।
मुनि सात सहस नौ सौ ब्यालिस, सब सिद्ध हुए उनको पूजूँ।
निज आत्म सुधारस पान करूँ, दुःख दारिद संकट से छूटूँ।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक की, करें वंदना भव्य।
एक कोटि उपवास फल, लहें नित्य सुख नव्य।।१९।।

ॐ ह्रीं मित्रधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवर्णभद्र कूट नं. २०

श्री पार्श्व सुवर्णभद्र कूट से, छत्तिस मुनि सह मुक्ति गये।
इससे ही ब्यासी कोटि चुरासी, लाख सहस पैंतालिस ये।।
पुनि सात शतक ब्यालीस मुनी, सब कर्मनाश शिवधाम गये।
उन सबको पूजूँ भक्ती से, इससे मनवांछित पूर्ण भये।।

—दोहा—

भाव सहित इस टोंक को, वंदूँ बारंबार।
सोलह कोटि उपवास फल, मिले भवोदधि पार।।२०।।

ॐ ह्रीं सुवर्णभद्रकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभदेव भगवान की टोंक नं. २१

—शेर छन्द—

कैलाशगिरि से ऋषभदेव मुक्ति पधारे।
उन साथ मुनि दस हजार मोक्ष सिधारे।।
मैं बार बार प्रभूपाद वंदना करूँ।
निजात्म तत्त्व ज्ञानज्योति से हृदय भरूँ।।२१।।

ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य भगवान की टोंक नं. २२

चंपापुरी से वासुपूज्य मोक्ष गये हैं।
उन साथ छह सौ एक साधु मुक्त भये हैं।।
इनके पदारविंद को मैं भक्ति से नमूँ।
निज सौख्य अतीन्द्रिय लहूँ संसार सुख वमूँ।।२२।।

ॐ ह्रीं चंपापुरीक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ भगवान की टोंक नं. २३

गिरनार से नेमी प्रभू निर्वाण गये हैं।
शंबू प्रद्युम्न आदि मुनि मुक्त भये हैं।।
ये कोटि बाहत्तर व सात सौ मुनी कहे।
इन सबकी वंदना करूँ ये सौख्यप्रदकहे।।२३।।

ॐ ह्रीं ऊर्जयंतगिरिक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितनेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान महावीर की टोक नं. २४

पावापुरी सरोवर से वीरप्रभू जी।
निज आत्म सौख्य पाया निर्वाण गये जी।।

इनके चरण कमल की मैं वंदना करूँ।
संपूर्ण रोग दुःख की मैं खंडना करूँ।।२४।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर कूट नं. २५

चौबीस जिनेश्वर के गणीश्वर उन्हें जजूँ।
चौदह शतक उनसठ[१] कहे उन सबको मैं भजूँ।।
ये सर्व ऋद्धिनाथ रिद्धि सिद्धि प्रदाता।
मैं अर्घ चढ़ाके जजूँ ये मुक्ति प्रदाता।।२५।।

ॐ ह्रीं वृषभसेनादिगौतमान्त्य सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शंभु छन्द—

नंदीश्वर द्वीप बना कृत्रिम, उसमें बावन जिनमंदिर हैं।
इनमें जिनप्रतिमायें मनहर, उनकी पूजा सब सुखकर हैं।।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ाकर के, संसार भ्रमण का नाश करूँ।
निज आत्म सुधारस पीकरके, निज में ही स्वस्थ निवास करूँ।।२६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर का शुभ समवसरण, अतिशायी सुंदर शोभ रहा।
श्री गंधकुटी में तीर्थंकर प्रभु, राज रहें मन मोह रहा।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ाकरके, तीर्थंकर को जिनबिंबों को।
सब रोग शोक दारिद्र हरूँ, पा जाऊँ निज गुणरत्नों को।।२७।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितसर्वजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ-शंभु छन्द—

गिरिवर सम्मेदशिखर से ही, अजितादि बीस तीर्थंकर जिन।
निज के अनन्त गुण प्राप्त किये, मैं उन्हें नमूँ पूजूँ निशदिन।।

---

१. तिलोयपण्णत्ति के आधार से।

यह ही अनादि अनिधन चौबीसों, जिनवर की निर्वाणभूमि।
मुनि संख्यातीत मुक्तिथल हैं, पूजत मिलती निर्वाणभूमि।।१।।

ॐ ह्रीं त्रैकालिक सर्वतीर्थंकरमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—दोहा—

चिन्मूरति चिंतामणि, चिन्मय ज्योतीपुंज।
गाऊँ गुणमणिमालिका, चिन्मय आतमकुंज।।१।।

—शंभु छन्द—

जय जय सम्मेदशिखर पर्वत, जय जय अतिशय महिमाशाली।
जय अनुपम तीर्थराज पर्वत, जय भव्य कमल दीधित[१] माली।।
जय कूट सिद्धवर धवलकूट, आनंदकूट अविचलसुकूट।
जय मोहनकूट प्रभासकूट, जय ललितकूट जय सुप्रभकूट।।२।।

जय विद्युत संकुलकूट सुवीरकूट स्वयंभूकूट वंद्य।
जय जय सुदत्तकूट शांतिप्रभ, कूट ज्ञानधरकूट वंद्य।।
जय नाटक संबलकूट व निर्जर, कूट मित्रधरकूट वंद्य।
जय पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि, जयसुवरणभद्रसुकूट वंद्य।।३।।

जय अजितनाथ संभव अभिनंदन, सुमति पद्मप्रभ जिन सुपार्श्व।
चंदाप्रभु पुष्पदंत शीतल, श्रेयांस विमल व अनंतनाथ।।
जय धर्म शांति कुंथू अरजिन, जय मल्लिनाथ मुनिसुव्रत जी।
जय नमि जिन पार्श्वनाथ स्वामी, इस गिरि से पाई शिवपदवी।।४।।

कैलाशगिरी से ऋषभदेव, श्री वासुपूज्य चंपापुरि से।
गिरनारगिरी से नेमिनाथ, महावीर प्रभू पावापुरि से।।

१. सूर्य।

निर्वाण पधारे चउ जिनवर, ये तीर्थ सुरासुर वंद्य हुए।
हुंडावसर्पिणी के निमित्त ये, अन्यस्थल से मुक्त हुए।।५।।

जय जय कैलाशगिरी चंपा, पावापुरि ऊर्जयंत पर्वत।
जय जय तीर्थंकर के निर्वाणों, से पवित्र यतिनुत पर्वत।।
जय जय चौबीस जिनेश्वर के, चौदह सौ उनसठ गुरु गणधर।
जय जय जय वृषभसेन आदी, जय जय गौतम स्वामी गुरुवर।।६।।

सम्मेदशिखर पर्वत उत्तम, मुनिवृंद वंदना करते हैं।
सुरपति नरपति खगपति पूजें, भविवृंद अर्चना करते हैं।।
पर्वत पर चढ़कर टोंक-टोंक पर, शीश झुकाकर नमते हैं।
मिथ्यात्व अचल शतखंड करें, सम्यक्त्वरत्न को लभते हैं।।७।।

इस पर्वत की महिमा अचिन्त्य, भव्यों को ही दर्शन मिलते।
जो वंदन करते भक्ती से, कुछ भव में ही शिवसुख लभते।।
बस अधिक उनंचास भव धर, निश्चित ही मुक्ती पाते हैं।
वंदन से नरक पशूगति से, बचते निगोद नहिं जाते हैं।।८।।

दस लाख व्यंतरों का अधिपति, भूतकसुर इस गिरि का रक्षक।
यह यक्षदेव जिनभाक्तिकजन, वत्सल है जिनवृष का रक्षक।।
जो जन अभव्य हैं इस पर्वत का, वंदन नहिं कर सकते हैं।
मुक्तीगामी निजसुख इच्छुक, जन ही दर्शन कर सकते हैं।।९।।

यह कल्पवृक्ष सम वांछितप्रद, चिंतामणि चिंतित फल देता।
पारसमणि भविजन लोहे को, कंचन क्या पारस कर देता।।
यह आत्म सुधारस गंगा है, समरससुखमय शीतल जलयुत।
यह परमानंद सौख्य सागर, यह गुण अनंतप्रद त्रिभुवन नुत।।१०।।

मैं नमूँ नमूँ इस पर्वत को, यह तीर्थराज है त्रिभवुन में।
इसकी भक्ती निर्झरणी में, स्नान करूँ अघ धो लूँ मैं।।
अद्भुत अनंत निज शांती को, पाकर निज में विश्राम करूँ।
निज 'ज्ञानमती' ज्योती पाकर, अज्ञान तिमिर अवसान करूँ।।११।।

—दोहा—

नमूँ नमूँ सम्मेद गिरि, करूँ मोह अरि विद्ध।
मृत्युंजय पद प्राप्त कर, वरूँ सर्वसुख सिद्धि।।१२।।

ॐ ह्रीं त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरमुनिगणसिद्धपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.—23)

श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पूजा

—स्थापना (शंभु छंद)—

सिद्धक्षेत्र गिरनार गिरी, गुजरात प्रान्त का तीरथ है।
प्रभु नेमिनाथ के मोक्षगमन से, पावन उसकी कीरत है।।
तप, ज्ञान और निर्वाण तीन कल्याणक स्थल को वंदूँ।
गिरनार तीर्थ की पूजन कर, मैं भी निज कर्मों को खंडूँ।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (शंभु छन्द)—

सागर सरवर नदियों का जल, खारा औ मीठा होता है।
पर क्षीर सिंधु का जल केवल, मीठा व दुग्धसम होता है।।
भावों से उस जल के द्वारा, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चन्दन को घिस घिसकर, उसकी शीतलता बढ़ती है।
काश्मीरी केशर परिणामों को, भी केशरिया करती है।।
उस चन्दन केशर के द्वारा, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती के दानों से शीतलता, की औषधि बन जाती है।
पूजन एवं जपमाला में, मोती भी चढ़ाई जाती है।।
मोती सम अक्षत के द्वारा, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों की माला प्रभु चरणों से, जब स्पर्शित हो जाती।
तब जयमाला बनकर मानव के, कंठ में वह शोभा पाती।।
सुरभित पुष्पों की माला से, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय कामबाण-विध्वसंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शारीरिक क्षुधा मिटाने के, साधन नाना विधि व्यंजन हैं।
आध्यात्मिक क्षुधा मिटाने में, तप ध्यान ज्ञान अवलम्बन हैं।।
सुन्दर पकवान थाल लेकर, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत् के दीपक बाह्य अंधेरा, नष्ट करें आलोक भरें।
अन्तरतम का अज्ञान अंधेरा, प्रभु आरति से दूर करें।।
दीपक का थाल सजाकर मैं, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित चन्दन की धूप बना, अग्नी में दहन किया जाता।
वह धूप जलाकर निज आत्मा की, सुरभी को पाया जाता।।

उस मलयागिरि की धूप से मैं, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम अमरूद आदि फल, खाकर मन कुछ तृप्त हुआ।
लेकिन आत्मा का लक्ष्य कभी उन, फल से नहिं संतृप्त हुआ।।
नाना फल थाल सजाकर मैं, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल से फल तक वसु द्रव्य मिलाकर, अर्घ्य बनाया जाता है।
''चन्दनामती'' तब पद अनर्घ्य का, भाव हृदय में आता है।।
अब स्वर्ण थाल में अर्घ्य सजा, गिरनार क्षेत्र पूजन कर लूँ।
गिरिवर पर ध्यान करूँ मैं भी, ऐसी आतम शक्ती भर लूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमि गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

स्वर्ण भृंग में नीर ले, जाऊँ गिरि गिरनार।
रत्नत्रय की प्राप्ति हित, करूँ धार त्रयबार।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

विविध पुष्प की अंजली, भर पूजूँ गिरिराज।
गुण पुष्पों के संग ही, पाऊँ पद सुरराज।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(इति मंडलस्योपरि द्वाविंशतितमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

—अर्घ्य—

शौरीपुर से बारात लिए, जूनागढ़ पहुँचे नेमिकुंवर।
जहाँ इंतजार में खड़ी हुई, थी राजुल वरमाला लेकर।।

पशु बंधन देख चले प्रभुवर, गिरनारगिरी पर तप करने।
दीक्षाकल्याणक से पवित्र वन, सहस्त्राम्र को नमन करें।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रगिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन शुक्ला प्रतिपद के दिन, शिरसा वन में शुभ ज्ञान हुआ।
धनपति के द्वारा गगनांगण, में समवसरण निर्माण हुआ।।
उस ज्ञानकल्याणक स्थल श्री गिरनार गिरी को नमन करूँ।
शुद्धात्मज्ञान की प्राप्ति हेतु, अज्ञानभाव उपशमन करूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रगिरनारगिरि-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आषाढ़ सुदी सप्तमि प्रभु ने, निर्वाण धाम को प्राप्त किया।
इन्द्रों ने आकर नेमिनाथ का, महामोक्ष कल्याण किया।।
गिरनार की पंचम टोंक को प्रभु का, मोक्ष धाम माना जाता।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमन करूँ, मेरा शिवपद से हो नाता।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथमोक्षकल्याणकपवित्रगिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य—

प्रभु नेमिनाथ के तीन-तीन कल्याणक से जो पावन है।
गुजरात प्रान्त में ऊर्जयन्त, गिरि का उपवन मन भावन है।।
गणिनी आर्या राजुलमति की, भी तपोभूमि सिरसा वन है।
उस गिरि को मैं पूर्णार्घ्य, चढ़ाकर पूजूँ यह मेरा मन है।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथस्य दीक्षाज्ञानमोक्षत्रयकल्याणकपवित्र-गिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—शंभु छन्द—

श्रीसिद्धक्षेत्र गिरनार तीर्थ, का अर्चन सिद्धिप्रदायक है।
आतमसिद्धि के साथ-साथ, सांसारिक सुख परिचायक है।
निर्वाणभूमि की श्रेणी में, इसका प्राचीन कथानक है।
शौरीपुर से जूनागढ़ तक, जुड़ गये पंचकल्याणक हैं।।१।।

छ्यासी हजार अरू पाँच शतक, वर्षों पहले की घटना है।
बाइसवें तीर्थंकर नेमिप्रभु के, जीवन की घटना है।।
शौरीपुर के नृप समुद्रविजय जी, शिवादेवी संग रहते थे।
उनके आँगन में धनकुबेर, रत्नों की वर्षा करते थे।।२।।

कार्तिक शुक्ला षष्ठी को वहाँ पर, गर्भकल्याणक उत्सव था।
श्रावण शुक्ला षष्ठी को, नेमीनाथ का जन्म महोत्सव था।
इन्द्रों ने मेरू पर्वत पर, जन्माभिषेक का ठाट किया।
शचि इन्द्राणी ने जिनबालक को, गोद में ले शृंगार किया।।३।।

कर दिया इन्द्र ने नामकरण, तब नेमिनाथ जयकार हुआ।
श्रीकृष्ण और बलदेव भ्रात के, साथ एक इतिहास जुड़ा।।
थी श्यामवर्ण काया प्रभु की, पर सुन्दरता कुछ अनुपम थी।
सूरज चन्दा की दिव्यप्रभा भी, प्रभुवर के सम्मुख कम थी।।४।।

शैशव से बचपन में आये, फिर क्रम से वे युवराज बने।
पितु भ्रात सभी बारात लिये, फिर जूनागढ़ गिरनार चले।।
कुछ षड्यंत्रों से रचे गये, पशुबंधन को देखा प्रभु ने।
तत्क्षण विरक्त हो गये नाथ, नहिं ब्याह किया पहुँचे वन में।।५।।

राजुल भी उनके संग गई, पति की अनुगामिनि बन करके।
प्रभु समवसरण की गणिनी बन, कल्याण किया राजुल सति ने।।

बस इस इतिहास से ही प्रभु के, तीनों कल्याणक हुए वहाँ।
गिरनार बना तीरथ फिर तो, कितने मुनियों ने मोक्ष लहा।।६।।
है वर्तमान में यह पर्वत, सबकी श्रद्धा का केन्द्र कहा।
थक थक कर पर्वत पर चढ़कर, भी भक्त अथक श्रम करें वहाँ।।
फिर भी पुण्योपार्जन का सुख, नहिं दुख किंचित् होने देता।
पर्वत यात्रा कर हर यात्री, सुख की अनुभूती कर लेता।।७।।

इस पर्वत का वन्दन करने, श्रीकुन्दकुन्द गुरु आए थे।
निज संघसहित यात्रा करके, कुछ चमत्कार दिखलाए थे।।
पाषाण अम्बिका बोल पड़ी जिनधर्म दिगम्बर सच्चा है।
जय जय कारों से गूँजा तब, निर्ग्रन्थ पंथ ही अच्छा है।।८।।

अतिशयकारी गिरनार क्षेत्र की, पूजन को हम आये हैं।
आठों द्रव्यों का थाल सजा, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
यह सिद्धक्षेत्र हम सभी प्राणियों, के मनरथ को पूर्ण करे।
''चन्दनामती'' बस यही कामना है, आतम रस पूर्ण भरे।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथनिर्वाणभूमिगिरनारगिरिसिद्धक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.—24)

भगवान महावीर निर्वाणभूमि

श्री पावापुरी सिद्धक्षेत्र पूजा

—स्थापना (चौबोल छंद)—

महावीर प्रभु जिस धरती से, कर्मनाश कर मोक्ष गये।
सिद्धशिला के स्वामी बनकर, सब कर्मों से छूट गये।।
पावापुर निर्वाणभूमि, तीरथ का अर्चन करना है।
आह्वानन स्थापन करने, जलमंदिर में चलना है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (शंभु छंद)—

प्रभुवर ने जन्म जरा मृत्यू का, नाश किया शिवपद पाया।
जलधारा इसीलिए करने को, वीरचरण में मैं आया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्मतिजिन ने संसारताप को, तप के द्वारा नष्ट किया।
मैंने शीतल चन्दन लेकर, जिनवर के पद में चर्च दिया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर तन द्वारा वीर प्रभू ने, अविनश्वर पद को पाया।
मोती सम अक्षत पुंजों को, इसलिए चढ़ाने मैं आया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यौवन में भी प्रभु वर्धमान को, विषयभोग नहिं लुभा सके।
वे पुष्प भी महिमाशाली हैं, जो प्रभुपद में हम चढ़ा सके।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उग्रोग्र तपस्या के द्वारा, प्रभु ने क्षुधरोग विनाश किया।
मैंने नैवेद्य थाल द्वारा, प्रभु पूजन में विश्वास किया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्मति ने शुक्लध्यान द्वारा,निज मोहकर्म का नाश किया।
घृतदीप जला आरति करके, मैंने निज ज्ञान प्रकाश किया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ध्यान अग्नि में घातिकर्म को, भस्म वीर ने कर डाला।
मैंने उनके सम्मुख अग्नी में, धूप जलाकर सुख माना।।

निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर घाति अघाती कर्म नाश, प्रभु ने मुक्तीफल प्राप्त किया।
मैंने शिवफल की आशा से, प्रभु को अर्पित फल थाल किया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस वसुधा से प्रभु महावीर ने, अष्टम वसुधा प्राप्त किया।
''चन्दनामती'' उस वसुधा को, दे अर्घ्य सहज सुख प्राप्त हुआ।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शेर छंद—

पावापुरी सरोवर से स्वच्छ जल लिया।
प्रभु वीर के चरण में त्रयधार कर दिया।।
त्रयरत्न प्राप्ति हेतु मैंने प्रभु शरण लिया।
त्रयताप शांति हेतु मैंने यह यतन किया।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

पावापुरी सरोवर कमलों से भरा है।
कुछ पुष्प वही लेके मैंने थाल भरा है।।
पुष्पांजलि कर वीर प्रभु से याचना करूँ।
आतम गुणों की प्राप्ति हेतु प्रार्थना करूँ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(इति मंडलस्योपरि त्रयोविंशतितमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य

—दोहा—

जलमंदिर में हैं बने, वीर चरण प्राचीन।
उनको अर्घ्य चढ़ाय मैं, करूं प्रदक्षिण तीन।।१।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरस्य मध्यस्थितजलमंदिरे भगवन्महावीर-चरणकमलयोः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गौतम गणधर के चरण, पूजूँ मैं चितलाय।
केवलज्ञान हुआ वहीं, नमूँ मोह नश जाय।।२।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरस्य मध्यस्थितजलमंदिरे गौतमगणधरचरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य सुधर्मा स्वामि के, गणधर चरण महान।
उनको अर्घ्य चढ़ाय मैं, पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।३।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरस्य मध्यस्थितजलमंदिरे श्रीसुधर्मास्वामि-गणधरचरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनमंदिर प्रांगण विषै, कई जिनालय जान।
उनमें स्थित बिम्ब सब, पूजूँ करूँ प्रणाम।।४।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसिद्धक्षेत्रस्यदिगम्बरजिनमंदिरपरिसरे निर्मित जिनालयेषु विराजित समस्त जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शंभु छंद—

जलमंदिर के सम्मुख इक पांडुकशिला नाम उद्यान कहा।
प्रभु महावीर की खड्गासन प्रतिमा, से वह जिनधाम रहा।।
गणिनी माता श्री ज्ञानमती ने, पुण्य कार्य यह कर डाला।
उन महावीर को अर्घ्य चढ़ा, मैं जपूँ वीर की ही माला।।५।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसिद्धक्षेत्रे जलमंदिरसम्मुखे विराजमान तीर्थंकरमहावीर खड्गासन जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—स्रग्विणी छंद—

अर्चना मैं करूँ पावापुरि तीर्थ की,
जो है निर्वाणभूमी महावीर की।
वन्दना मैं करूं पावापुरि तीर्थ की,
जो है कैवल्यभूमी गणाधीश की।।टेक.।।

जैनशासन के चौबीसवें तीर्थंकर,
जन्मे कुण्डलपुरी राजा सिद्धार्थ घर।
रानी त्रिशला ने सपनों का फल पा लिया,
बोलो जय त्रिशलानंदन महावीर की।।१।।

वीर वैरागी बनकर युवावस्था में,
दीक्षा ले चल दिये घोर तप करने को।
मध्य में चन्दना के भी बंधन कटे,
बोलो कौशाम्बी में जय महावीर की।।२।।

प्रभु ने बारह बरस तक तपस्या किया,
केवलज्ञान तब प्राप्त उनको हुआ।
राजगिरि विपुलाचल पर प्रथम दिव्यध्वनि,
खिर गई बोलो जय जय महावीर की।।३।।

तीस वर्षों में, प्रभु का भ्रमण जो हुआ,
सब जगह समवसरणों की रचना हुई।
पावापुर के सरोवर से शिवपद लिया,
बोलो जय पावापुर के महावीर की।।४।।

मास कार्तिक अमावस के प्रत्यूष में,
कर्मों को नष्ट कर पहुँचे शिवलोक में।

तब से दीपावली पर्व है चल गया,
बोलो सब मिल के जय जय महावीर की।।५।।

पावापुर के सरोवर में फूले कमल,
आज भी गा रहे कीर्ति प्रभु की अमर।
वीर प्रभु के चरण की करो अर्चना,
बोलो जय सिद्ध भगवन् महावीर की।।६।।

पंक में खिल के पंकज अलग जैसे हैं,
मेरी आत्मा भी संसार में वैसे है।
उसको प्रभु सम बनाने का पुरुषार्थ कर,
जय हो अंतिम जिनेश्वर महावीर की।।७।।

पूरे सरवर के बिच एक मंदिर बना,
जो कहा जाता जल मंदिर है सोहना।
पारकर पुल से जाकर करो वंदना,
बोलो जय पास जाकर महावीर की।।८।।

लोग प्रतिवर्ष दीपावली के ही दिन,
पावापुर में मनाते हैं निर्वाणश्री।
भक्त निर्वाणलाडू चढ़ाते जहाँ,
बोलो उस भूमि पर जय महावीर की।।९।।

वीर के शिष्य गौतम गणीश्वर ने भी,
पाया कैवल्यपद वीर सिद्धि दिवस।
पूजा महावीर के संग करो उनकी भी,
बोलो गौतम के गुरु जय महावीर की।।१०।।

पावापुर में नमूँ वीर के पदकमल,
और गौतम, सुधर्मा के गणधर चरण।
''चन्दनामति'' चरणत्रय का अर्चन करो,
बोलो त्रयरत्नपति प्रभु महावीर की।।११।।

थाल पूर्णार्घ्य का यह सजाया प्रभो,
मैंने जयमाल में वह चढ़ाया प्रभो।
इससे आतमविशुद्धी बढ़े नित्य ही,
भाव से बोलो जय प्रभु महावीर की।।१२।।

धाम सिद्धी स्वयंवर का है तीर्थ ये,
जिसने प्रभु वीर से पाई यशकीर्ति है।।
यदि वरण करना है वैसी सिद्धी प्रिया,
अर्चना कर लो पावापुरी तीर्थ की।।१३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

(पूजा नं.—25)

निर्वाणक्षेत्र पूजा

रचयित्री–**गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी**

—अथ स्थापना (गीता छंद) —

चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर जहाँ जहाँ से शिव गये।
गणधरगुरू अन्यान्य संख्यों साधु जहाँ से शिव गये।।
वे सर्व थल पूजित हुए इन पूज्य के संसर्ग से।
पूजूँ यहाँ आह्वान विधि से कर्म मेरे सब नसे।।१।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसर्वसाधुनिर्वाणक्षेत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसर्वसाधुनिर्वाणक्षेत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसर्वसाधुनिर्वाणक्षेत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टक (गीता छंद) —

गंगा नदी का तीर्थजल मैं स्वर्ण झारी में भरूँ।
सब तीर्थभूमी पूजने को भक्ति से धारा करूँ।।
कैलाशगिरि चंपापुरी गिरनार पावापुरि जजूँ।
सम्मेदगिरि आदिक सभी निर्वाण क्षेत्रों को भजूँ।।१।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसर्वसाधुनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित शुद्ध केशर स्वर्ण द्रव सम लायके।
सब तीर्थभूमी चर्चहूँ निज आत्म शुद्धि बढ़ायके।।
कैलाशगिरि चंपापुरी गिरनार पावापुरि जजूँ।
सम्मेदगिरि आदिक सभी निर्वाण क्षेत्रों को भजूँ।।२।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसर्वसाधुनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि कांति सम अक्षत अखंडित धोय थाली मैं भरूँ।
सब तीर्थभूमी पूजने को पुंज प्रभु आगे धरूँ।।
कैलाशगिरि चंपापुरी गिरनार पावापुरि जजूँ।
सम्मेदगिरि आदिक सभी निर्वाण क्षेत्रों को भजूँ।।३।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसर्वसाधुनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चमेली आदि सुरभित पुष्प चुन चुन लायके।
सब तीर्थभूमी पुष्प से मैं पूजहूँ गुण गायके।।
कैलाशगिरि चंपापुरी गिरनार पावापुरि जजूँ।
सम्मेदगिरि आदिक सभी निर्वाण क्षेत्रों को भजूँ।।४।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसर्वसाधुनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी इमरती मालपूआ आदि से थाली भरूँ।
सब तीर्थभूमी पूजते भव भव क्षुधा व्याधी हरूँ।।
कैलाशगिरि चंपापुरी गिरनार पावापुरि जजूँ।
सम्मेदगिरि आदिक सभी निर्वाण क्षेत्रों को भजूँ।।५।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसर्वसाधुनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योती से उतारूँ आरती तम वारती।
सब तीर्थभूमी पूजते ही प्रगट होवे भारती।।
कैलाशगिरि चंपापुरी गिरनार पावापुरि जजूँ।
सम्मेदगिरि आदिक सभी निर्वाण क्षेत्रों को भजूँ।।६।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसर्वसाधुनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध धूप सुगंध खेऊँ अग्नि में अति चाव से।
सब तीर्थभूमी पूजते ही कर्म जल जावें सबे।।
कैलाशगिरि चंपापुरी गिरनार पावापुरि जजूँ।
सम्मेदगिरि आदिक सभी निर्वाण क्षेत्रों को भजूँ।।७।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसर्वसाधुनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर दाड़िम आम अमृतफल भरे हैं थाल में।
सब तीर्थभूमी पूजते ही इष्टफल तत्काल में।।
कैलाशगिरि चंपापुरी गिरनार पावापुरि जजूँ।
सम्मेदगिरि आदिक सभी निर्वाण क्षेत्रों को भजूँ।।८।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसर्वसाधुनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु फल दीप धूप सभी लिये।
सब तीर्थभूमी पूजहूँ मैं अर्घ को अर्पण किये।।
कैलाशगिरि चंपापुरी गिरनार पावापुरि जजूँ।
सम्मेदगिरि आदिक सभी निर्वाण क्षेत्रों को भजूँ।।९।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसर्वसाधुनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा — **पद्मसरोवर नीर से, जिनपद धार करंत।**
तीर्थभूमि को पूजते, चउसंघ शांति करंत।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार ले, पुष्पांजलि विकिरंत।
सर्व सौख्य संपत्ति बढ़े, होवे भवदुःख अंत।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(इति मंडलस्योपरि चतुर्विंशतितमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य

चाल–हे दीनबंधु.....

वृषभेश गिरि कैलाश से निर्वाण पधारे।
मुनिराज दश हजार साथ मुक्ति सिधारे।।
तीर्थेश की मुनिराज की मैं वंदना करूँ।
उस तीर्थक्षेत्र अद्रि की भी अर्चना करूँ।।१।।

ॐ ह्रीं दशसहस्रमुनिभिः सहमुक्तिपदप्राप्तश्रीवृषभदेवजिनतत्क्षेत्र–कैलाशपर्वतनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपापुरी से वासुपूज्य मुक्ति सिधारे।
उन साथ छह सौ एक साधु मुक्ति पधारे।।

उन तीर्थनाथ साधुओं की वंदना करूँ।
उस तीर्थक्षेत्र अद्रि की भी अर्चना करूँ।।२।।

ॐ ह्रीं एकोत्तरषट्शतमुनिभिः सहमुक्तिपदप्राप्तश्रीवासुपूज्यजिनतन्निमित्त–चंपापुरनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमीश ऊर्जयंत से निर्वाण गये हैं।
सह पाँच सौ छत्तीस साधु मुक्ति गये हैं।।
तीर्थेश और मुनिराज की मैं वंदना करूँ।
उस तीर्थक्षेत्र अद्रि की भी अर्चना करूँ।।३।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशदधिकपंचशतमुनिभिः सहमुक्तिपदप्राप्तश्रीनेमिनाथजिन–तन्निमित्तऊर्जयंतपर्वततनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक अमावसी दिवस प्रत्यूष काल में।
पावापुरी सरोवर के मध्य स्थान में।।
कर योग का निरोध वर्धमान शिव गये।
निजरज से उस स्थान को हि तीर्थ कर गये।।४।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनमुक्तिपदप्राप्तपावापुरीनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रादि वंद्य बीस जिनेश्वर करम हने।
सम्मेदगिरि शिखर से शिव गये नमूँ उन्हें।।
मुनिराज भी असंख्य इसी गिरि से शिव गये।
उन सबकी करूँ अर्चना वे सौख्यकर हुये।।५।।

ॐ ह्रीं अजितादिविंशतितीर्थंकर असंख्यसाधुगणमुक्तिपदप्राप्तसम्मेद–शिखरनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बलभद्र सात और आठ कोटि बताये।
यादव नरेन्द्र आर्ष में हैं साधु कहाये।।
गजपंथ गिरि शिखर से ये निर्वाण गये हैं।
इनको जजूँ ये मुक्ति में निमित्त कहे हैं।।६।।

ॐ ह्रीं बलभद्रयादवनरेन्द्रादिमुनिमुक्तिपदप्राप्तगजपंथगिरिनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरदत्त औ वरांग सागरदत्त मुनिवरा।
ऋषि और साढ़े तीन कोटि भव्य सुखकरा।।
ये तारवर नगर से मुक्ति धाम पधारे।
मैं नित्य जजूँ मुझको भी संसार से तारें।।७।।

ॐ ह्रीं वरदत्तवरांगसागरदत्तादिमुनिमुक्तिपदप्राप्ततारवरनगरनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ औ प्रद्युम्न शंभु कुमारा।
अनिरुद्धकुमर पा लिया भवदधि का किनारा।।
मुनिराज बाहत्तर करोड़ सात सौ कहे।
गिरनार क्षेत्र से ये सभी मुक्ति पद लिये।।८।।

ॐ ह्रीं प्रद्युम्न शंभुअनिरुद्धादिमुनिमुक्तिपदप्राप्तऊर्जयंतपर्वतनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो पुत्र रामचन्द्र के औ लाडनृपादी।
ये पाँच कोटि साधु वृंद निज रसास्वादी।।
ये पावा गिरीवर शिखर से मोक्ष गये हैं।
इनको जजूँ ये मुक्ति में निमित्त कहे हैं।।९।।

ॐ ह्रीं रामचंद्रपुत्रलाडनृपादिमुनिगणमुक्तिपदप्राप्तपावागिरिवरनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पांडु पुत्र तीन और द्रविडनृपादी।
ये आठ कोटि साधु परम समरसास्वादी।।
शत्रुंजयाद्रि शिखर से ये सिद्ध हुये हैं।
इनको जजूँ ये सिद्धि मे निमित्त कहे हैं।।१०।।

ॐ ह्रीं पांडुपुत्रद्रविडराजादिमुनिगणमुक्तिपदप्राप्तशत्रुंजयपर्वतनिर्वाण-क्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीराम हनुमान औ सुग्रीव मुनिवरा।
जो गव गवाख्य नील महानील सुखकरा।।

निन्यानवे करोड़ तुंगीगिरि से शिव गये।
उन सबकी अर्चना से सर्वपाप धुल गये।।११।।

ॐ ह्रीं रामहनुमानसुग्रीवादिमुनिगणमुक्तिपदप्राप्ततुंगीगिरिनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नंग औ अनंग दो कुमार हैं कहें।
वे साढ़े पाँच कोटि मुनि सहित शिव गये।।
सोनागिरी शिखर है सिद्धक्षेत्र इन्हो का।
इनको जजूँ इन भक्ति भवसमुद्र में नौका।।१२।।

ॐ ह्रीं नंगानंगकुमारआदिमुनिगणमुक्तिपदप्राप्तसुवर्णगिरिनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमुखनृपति के पुत्र आत्म तत्त्व के ध्याता।
जो साढ़े पाँच कोटि मुनि सहित विख्याता।।
रेवानदी के तीर से निर्वाण पधारे।
मैं उनको जजूँ मुझको भवोदधि से उबारे।।१३।।

ॐ ह्रीं दशमुखनृपपुत्रादिमुनिगणमुक्तिपदप्राप्तरेवानदीतटनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्रीश दो दश कामदेव साधुपद धरा।
मुनि साढ़े तीन कोटि मुक्ति राज्य को वरा।।
रेवानदी के तीर अपर भाग में सही।
मैं सिद्धवर सुकूट को पूजूँ जो शिवमही।।१४।।

ॐ ह्रीं द्वयचक्रिदशकामदेवादिमुनिगणमुक्तिपदप्राप्तसिद्धवरकूटनिर्वाण-क्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बड़वानिवर नगर में दक्षिणी सुभाग में।
है चूलगिरि शिखर जो सिद्ध क्षेत्र नाम में।।

श्री इन्द्रजीत कुंभकरण मोक्ष पधारे।
मैं नित्य जजूँ उनको सकल कर्म विडारें।।१५।।

ॐ ह्रीं इंद्रजीतकुंभकर्णादिमहामुनिमुक्तिपदप्राप्तवडवानीनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावागिरीनगर में चेलना नदी तटे।
मुनिवर सुवर्णभद्र आदि चार शिव बसे।।
निर्वाण भूमि कर्म का निर्वाण करेगी।
मैं नित्य नमूँ मुझको परम धाम करेगी।।१६।।

ॐ ह्रीं सुवर्णभद्रादिमुनिगणमुक्तिपदप्राप्तपावागिरिनगरनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फलहोड़ी श्रेष्ठ ग्राम में पश्चिम दिशा कही।
श्री द्रोणगिरि शिखर है परमपूत भू सही।।
गुरुदत्त आदि मुनिवरेन्द्र मृत्यु के जयी।
निर्वाण गये नित्य जजूँ पाऊँ शिवमही।।१७।।

ॐ ह्रीं गुरुदत्तादिमुनिगणमुक्तिपदप्राप्तद्रोणागिरिनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बालि महाबालि नागकुमर आदि जो।
अष्टापदाद्रि शिखर से निर्वाण प्राप्त जो।।
उनको नमूँ वे कर्म अद्रि चूर्ण कर चुके।
वे तो अनंत गुण समूह पूर्ण कर चुके।।१८।।

ॐ ह्रीं बालिमहाबालिमुनिगणमुक्तिपदप्राप्तअष्टापदगिरिनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलापुरी ईशान में मेंढागिरि कही।
मुनिराज साढ़े तीन कोटि उनकी शिवमही।।
मुक्तागिरि निर्वाण भूमि नित्य जजूँ मैं।
निर्वाण प्राप्ति हेतु अखिल दोष वमूँ मैं।।१९।।

ॐ ह्रीं सार्धत्रयकोटिमुनिगणमुक्तिपदप्राप्तमुक्तागिरिनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंशस्थली नगर के अपर भाग में कहा।
कुंथलगिरी शिखर जगत में पूज्य हो रहा।।
मुनि कुलभूषण व देशभूषण मुक्ति गये हैं।
मैं नित्य जजूँ उनको वे कृतकृत्य हुये हैं।।२०।।

ॐ ह्रीं कुलभूषणदेशभूषणमहामुनिमुक्तिपदप्राप्तकुंथलगिरिनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जसरथ नृपति के पुत्र और पाँच सौ मुनी।
निर्वाण गये हैं कलिंग देश से सुनी।।
मुनिराज एक कोटि कोटिशिला से कहे।
निर्वाण गये उनको जजूँ दुःख ना रहे।।२१।।

ॐ ह्रीं जसरथनृपतिपुत्रादिमुनिगणकलिंगदेशक्षेत्रकोटिशिलानिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्व के समवसरण में जो प्रधान थे।
वरदत्त आदि पाँच ऋषी गुणनिधान थे।।
रेसिंदिगिरि शिखर से वे निर्वाण पधारे।
मैं उनको जजूँ वे सभी संकट को निवारें।।२२।।

ॐ ह्रीं वरदत्तादिमुनिगणमुक्तिपदप्राप्तनिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जंबूमुनींद्र जंबुविपिन गहन में आके।
निर्वाण प्राप्त हुये अखिल कर्म नशाके।।
मन वचनकाय शुद्धि सहित अर्घ्य चढ़ाके।
मैं नित्य नमस्कार करूँ हर्ष बढ़ा के।।२३।।

ॐ ह्रीं जंबूस्वामीमुक्तिपदप्राप्तजंबूवननिर्वाणक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि शेष जो असंख्य आर्यखंड में हुये।
जिस जिस पवित्रधाम से निर्वाण को गये।।
उन साधुओं की क्षेत्र की भी वंदना करूँ।
संपूर्ण दुःख क्षय निमित्त अर्चना करूँ।।२४।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थभरतक्षेत्रसंबंधिआर्यखंडे ये ये मुनीश्वराः यत्यत् स्थानात् शिवंगताः तत्तत्सर्वनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शंभु छंद—

भव्यात्माओं के पुण्य निमित जहाँ चमत्कार प्रगटित होते।
वे तीरथ अतिशयक्षेत्र नाम से जगभर में प्रचलित होते।।
चांदनपुर श्री महावीरजी आदिक अतिशय क्षेत्रों को वंदन।
आठों द्रव्यों को स्वर्ण थाल में लेकर उनका करूँ यजन।।२५।।

ॐ ह्रीं अतिशयक्षेत्रश्रीमहावीरजीआदिसमस्तअतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—दोहा—

नमूँ नमूँ सब सिद्धगण, प्राप्त किया निर्वाण।
नमूँ सर्व निर्वाण थल, जो करते कल्याण।।१।।

—शंभु छंद—

जय जय अष्टापद चंपापुर, जय ऊर्जयंत पावापुर की।
जय जय सम्मेदशिखर पर्वत, जय जय सब निर्वाण स्थल की।।
जय ऋषभदेव जय वासुपूज्य, जय नेमिनाथ जय वीर प्रभो।
जय अजित आदि बीसों जिनवर, जय जय अनंत जिन सिद्ध विभो।।२।।

जिनने निज में निज को ध्याकर, निज को तीर्थंकर बना लिया।
जिन धर्म तीर्थ का वर्तन कर, तीर्थंकर सार्थक नाम किया।।
निज के अनंतगुण विकसित कर, निर्वाणधाम को प्राप्त किया।
उनने जग में भू पर्वत आदिक, को भी ''तीरथ'' बना दिया।।३।।

जो सोलह भावन भाते हैं, उस रूप स्वयं हो जाते हैं।
वे ही नर तीर्थंकर प्रकृती, का बंध स्वयं कर पाते हैं।।

फिर पंचकल्याणक के स्वामी, होते भगवान कहाते हैं।
सौधर्म इन्द्र आदिक मिलकर, कल्याणक उनके मनाते हैं।।४।।
ये जहाँ से मुक्ति प्राप्त करते, वे ही निर्वाणक्षेत्र बनते।
निर्वाणक्षेत्र की पूजा कर, सुर नर भी कर्मशत्रु हनते।।
मुनिगण तो क्या गणधर गुरु भी, निर्वाण क्षेत्र को नित नमते।
तीर्थों की यात्रा स्वयं करें, मुनियों को भी प्रेरित करते।।५।।

चारण ऋद्धीधारी मुनि भी, आकाशमार्ग से गमन करें।
निर्वाणक्षेत्र आदिक तीरथ, वंदे भक्ती स्तवन करें।।
निज आत्मसुधारस पान करें, निज में ही निज का ध्यान करें।
निर्वाण प्राप्ति हेतू केवल, निर्वाण भक्ति में चित्त धरें।।६।।

इस भरतक्षेत्र में जहाँ जहाँ, से तीर्थंकर जिन सिद्ध हुये।
श्री वृषभसेन आदिक गणधर गुरु जहाँ जहाँ से सिद्ध हुये।।
भरतेश बाहुबलि रामचंद्र, हनुमान व पांडव आदि मुनी।
निर्वाण गये हैं जहाँ जहाँ से, वे सब पावन भूमि बनीं।।७।।

हम भी यहाँ भक्तिभावपूर्वक, उन क्षेत्रों की वंदना करें।
निज आत्म सौख्य की प्राप्ति हेतु, उन क्षेत्रों की अर्चना करें।।
जो जो भी पंचकल्याण भूमि, उनको भी वंदन करते हैं।
जिनवर के अतिशय क्षेत्रों की, भक्ती से अर्चन करते हैं।।८।।

इक्षूरस मिश्रित शालिपिष्ट, से व्यंजन भी मीठे होते।
वैसे ही पुण्य पुरुष के पद की, रज से थल पावन होते।।
तीर्थों की भक्ती गंगा में, स्नान करें मल धो डालें।
निज आत्मा को पावन करके, परमानंदामृत को पालें।।९।।

तीर्थों की यात्रा कर करके, भव भव की यात्रा नष्ट करें।
त्रिभुवन के जिनगृह वंदन कर, तिहुंजग का भ्रमण समाप्त करें।।
जिनवचन और उनके धारक, ये दो भी तीर्थ कहाते हैं।
बस ''ज्ञानमती'' कैवल्य हेतु, तीर्थों को शीश झुकाते हैं।।१०।।

—घत्ता—

जय जय जिन तीरथ, पुण्य भगीरथ, भक्ती गंगा में न्हावें।
अति पुण्य बढ़ाकर, सब सुख पाकर, मुक्ति रमापति बन जावें।।११।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर-गणधर-सर्वसाधु-निर्वाणक्षेत्र-अतिशयक्षेत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

समुच्चय जयमाला अर्घ्य

तर्ज-चलो मिल सब.....

चलो तीरथ वंदन कर लो, निजात्मा को तीरथ कर लो,
जिनवर पंचकल्याणक तीर्थों का अर्चन कर लो।।चलो.।।

ऋषभ अजित अभिनंदन सुमती, अरु अनंत जिनवर।
नगरि अयोध्या में जन्मे, जो तीरथ है शाश्वत।।
अयोध्या को वंदन कर लो,
ऋषभदेव की जन्मभूमि का रूप नया लख लो।। चलो.।।१।।

श्रावस्ती में संभव, कौशाम्बी में पद्मप्रभू।
वाराणसि में श्री सुपार्श्व, पारस प्रभु को वंदूँ।।
चन्द्रपुरि तीरथ को नम लो,
जहाँ चन्द्रप्रभु जी जन्मे वह रज सिर पर धर लो।।चलो.।।२।।

पुष्पदन्त काकन्दी, शीतल भद्दिलपुर जन्मे।
श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर, सिंहपुरी जन्मे।।
तीर्थ चम्पापुर को नम लो,
वासुपूज्य की पंचकल्याणक भूमि इसे समझो।।चलो.।।३।।

कम्पिल जी में विमलनाथ, प्रभु धर्म रतनपुरि में।
हस्तिनापुर में शांति कुंथु अर, तीर्थंकर जन्मे।।
चलो मिथिलापुरि को नम लो,
मल्लिनाथ नमिनाथ जन्मभूमी वंदन कर लो।। चलो.।।४।।

राजगृही में मुनिसुव्रत, नेमी शौरीपुर में।
कुण्डलपुर में चौबिसवें, महावीर प्रभू जन्मे।।
तीर्थ से भवसागर तिर लो,
जिनवर जन्मभूमि दर्शन कर जन्म सफल कर लो।। चलो.।।५।।

गणिनी ज्ञानमती जी की, प्रेरणा मिली भक्तों।
सभी जन्मभूमी जिनवर की, जल्दी विकसित हों।।
पुण्य का कोष सभी भर लो,
तीर्थ वंदना करके भव्यों पुण्यकोष भर लो।। चलो.।।६।।

तीर्थ प्रयाग व अहिच्छत्र, जृंभिका को वंदन है।
अष्टापद, सम्मेदशिखर, गिरनार का अर्चन है।।
तीर्थ पावापुरि को नम लो,
दीक्षा, ज्ञान व मोक्षकल्याणक भूमि नमन कर लो।।चलो.।।७।।

पूर्ण अर्घ्य का थाल सजाकर, फल अनर्घ्य चाहूँ।
सब तीर्थों की यात्रा करके, तीरथ बन जाऊँ।।
यही इच्छा पूरी कर दो,
कहे ''चन्दनामती'' अर्घ्य स्वीकार प्रभू कर लो।।८।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकतीर्थमांगीतुंगीआदिसिद्धक्षेत्र-श्रीमहावीरजीआदि अतिशयक्षेत्रेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेर छंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

G G G G G

पंचकल्याणक तीर्थों की आरती

तर्ज-पंखिड़ा.....

आरती करूँ मैं सभी तीर्थधाम की।
जिनवरों के पंचकल्याण धाम की।।आरती.....आरती.....

प्रभु की जन्मभूमि वंदना से जन्म सफल हो।
प्रभु की त्यागभूमि अर्चना से धन्य जनम हो।।
झूम झूम भक्ति करूँ, नृत्य करूँ मैं।
आरती प्रभू की करके पुण्य भरूँ मैं।।आरती.....।।१।।

घाति कर्मनाश प्रभु को दिव्यज्ञान हो जहाँ।
धनकुबेर नभ में समवसरण को रचें वहाँ।।
झूम झूम भक्ति करूँ नृत्य करूँ मैं।
आरती प्रभू की करके पुण्य भरूँ मैं।।आरती.....।।२।।

अष्टकर्म नाश प्रभु को मोक्ष प्राप्त हो जहाँ।
सिद्धक्षेत्र उनको जैन ग्रंथ शास्त्रों में कहा।।
झूम झूम भक्ति करूँ, नृत्य करूँ मैं।
आरती प्रभू की करके पुण्य भरूँ मैं।।आरती.....।।३।।

मांगीतुंगी आदि और कई सिद्धक्षेत्र हैं।
अन्य अतिशयों से पूर्ण कहे अतिशयक्षेत्र हैं।।
झूम झूम भक्ति करूँ, नृत्य करूँ मैं।
आरती प्रभू की करके पुण्य भरूँ मैं।।आरती.....।।४।।

घृत का दीप लेके तीर्थक्षेत्र आरती करूँ।
''चन्दनामती'' हृदय में ज्ञानभारती भरूँ।।
झूम झूम भक्ति करूँ, नृत्य करूँ मैं।
आरती प्रभू की करके पुण्य भरूँ मैं।।आरती.....।।५।।

सम्मेदशिखर वन्दना

रचयित्री-**आर्यिका चंदनामती**

तीर्थराज सम्मेदशिखर है, शाश्वत सिद्धक्षेत्र जग में।
एक बार जो करे वन्दना, वह भी पुण्यवान सच में।।
ऊँचा पर्वत पार्श्वनाथ हिल, नाम से जाना जाता है।
जिनशासन का सबसे पावन, तीरथ माना जाता है।।१।।

जब प्रत्यक्ष करें यात्रा, उस पुण्य का वर्णन क्या करना।
लेकिन प्रतिदिन भी परोक्ष में, गिरि का ध्यान किया करना।।
आँख बन्दकर करो कल्पना, मेरी यात्रा शुरू हुई।
प्रातःकाल चले सब यात्री, जय जयकारा शुरू हुई।।२।।

एक हाथ में छड़ी दूसरे, में चावल की झोली है।
ज्यादातर सब पैदल हैं, पर किसी-किसी की डोली है।।
कभी न चलने वाले भी, हिम्मत कर पर्वत चढ़ते हैं।
पारस प्रभु के पास पहुँचने, हेतु कदम बढ़ चलते हैं।।३।।

चढ़ते-चढ़ते आठ किलोमीटर, का पथ जब तय होता।
दायें हाथ तरफ तब इक, चौपड़ा कुंड दर्शन होता।।
वहाँ दिगम्बर जिनमंदिर, संस्कृति की अमिट धरोहर है।
पार्श्वनाथ चन्द्रप्रभु बाहुबलि की मूर्ति मनोहर हैं।।४।।

उस मन्दिर में रुककर अपने, प्रभु का दर्शन कर लेना।
सुन्दर बनी धर्मशाला में, इच्छा हो तो ठहर लेना।।
मंदिर दर्शन करके फिर, यात्रा प्रारंभ करो अपनी।
बायें हाथ चलो चढ़ कर जहाँ, गौतम स्वामी टोंक बनी।।५।।

यहाँ पहुँचकर ठंडी-ठंडी, हवा थकान मिटाती है।
गणधर चरण वन्दना से, यात्रा की शक्ती आती है।।
प्रथम टोंक यह हुई पास में, दुतिय टोंक कुंथु जिन की।
तीर्थंकर क्रम में यह पहली, टोंक नमूँ कुंथु प्रभु की।।६।।

इन टोंकों के दर्शन से, उपवास का फल प्रारंभ हुआ।
त्रय प्रदक्षिणा देने से, आगे शुभ गति का बंध हुआ।।
शुभ भावों से आगे बढ़कर, टोंक तीसरी आती है।
श्रीनमिनाथ जिनेश्वर की, वन्दना सहज हो जाती है।।७।।

चौथा नाटक कूट तीर्थंकर, अरहनाथ का आया है।
जहाँ करोड़ों मुनियों ने भी, तपकर शिवपद पाया है।।
वन्दन कर आगे बढ़ने से, मल्लिनाथ के चरण मिले।
आगे छठे टोंक पर श्री, श्रेयाँसनाथ पदकमल मिले।।८।।

इन सबका वन्दन कर मैंने, सिद्धशिला को नमन किया।
वहाँ विराजे सिद्धों को, अपने मन में स्मरण किया।।
थकना नहिं अब पुष्पदंत की, सप्तम टोंक पे चलना है।
आगे चढ़ने हेतु वहीं से, आतमशक्ती भरना है।।९।।

पुष्पदंत प्रभु के चरणों में, अर्घ्य चढ़ाकर नमन किया।
और चले आठवीं टोंक पर, पदमप्रभू का शरण लिया।।
नवमीं टोंक विराजे श्री, मुनिसुव्रत जिन के चरणकमल।
इन सबके पावन पद में, श्रद्धा से मैंने किया नमन।।१०।।

हे भव्यात्मन् ! अब दसवीं चन्द्रप्रभ टोंक पे चलना है।
पहले दौड़-दौड़ कर उतरो, फिर ऊँचाई चढ़ना है।।
चन्द्रप्रभ मंदिर में जाकर, चरणवन्दना करना है।
अपने सारे सुख-दुख को, प्रभु चरण बैठकर कहना है।।११।।

अब ग्यारहवीं टोंक पे चलकर, ऋषभदेव को नमन करो।
गिरि कैलाश से मुक्त हुए, यहाँ उनके चरण चिन्ह प्रणमो।।
श्री शीतल जिनवर की है, बारहवीं टोंक प्रसिद्ध कही।
मन-वच-तन से वन्दन कर, पाओ यात्रा का पुण्य सही।।१२।।

श्री अनंत तीर्थंकर का, तेरहवाँ कूट स्वयंभू है।
उनके चरणों में श्रद्धायुत, शीश झुकाकर वन्दूँ मैं।।
संभव जिनवर का चौदहवाँ, धवलकूट माना जाता।
वासुपूज्य जिनका पन्द्रहवां, टोंक सभी को सुखदाता।।१३।।

इनको वन्दन कर आगे, अभिनन्दन प्रभु के पास चलो।
बन्दर चिन्ह सहित उन प्रभु की, टोंक पे बन्दर से न डरो।।
अभिनन्दन के चरणों में, कर नमन चलो जलमंदिर तक।
चढ़ो वहाँ से जहाँ है गौतम, गणधर प्रभु की टोंक प्रथम।।१४।।

फिर सत्रहवीं टोंक से अपनी, अगली यात्रा करना है।
धर्मनाथ प्रभु के चरणों में, नमन सभी को करना है।।
सुमतिनाथ का अट्ठारहवाँ, टोंक है अविचल कूट कहा।
नौ करोड़ बत्तीसलाख, उपवास का फल मिलता है यहाँ।।१५।।

उन्निसवाँ है टोंक शांतिजिन, का जो यहाँ से मोक्ष गये।
नौ करोड़ से अधिक मुनी, इस कुंदकूट से मोक्ष गये।।
शांतिनाथ के संग सब मुनियों, को श्रद्धा से नमन किया।
पुनः बीसवीं टोंक पे जाकर, वीरप्रभू की शरण लिया।।१६।।

श्री सुपार्श्व तीर्थंकर इक्कीसवीं टोंक पर राजे हैं।
कहते हैं यहाँ की मिट्टी से, रोग सभी नश जाते हैं।।
इनका वंदन करके पास में, विमल नाथ की टोंक चलो।
बाइसवीं इस टोंक को नमकर, अजितनाथ के निकट चलो।।१७।।

थके कदम से तेइसवीं इस, टोंक का वंदन कठिन तो है।
लेकिन यात्रा पूरी करने, का शुभ भाव हृदय में है।।
धीरे-धीरे चढ़कर आखिर, अजितनाथ तक पहुँच गये।
उन चरणों में नमन किया फिर, नेमिनाथ जी प्राप्त हुए।।१८।।

इस चौबिसवीं टोंक पे नेमीनाथ चरण को नमन किया।
पारसनाथ प्रभू पाने हेतू फिर मैंने गमन किया।।
स्वर्णभद्र यह टोंक है अंतिम, यात्रा पूर्ण यहाँ होती।
पार्श्वनाथ की पूजन करके, मन सन्तुष्टि यहाँ होती।।१९।।

कुछ क्षण ध्यान करो फिर नीचे, गुफा में स्थित चरण नमो।
खुशी-खुशी वन्दना पूर्ण कर, पर्वत से नीचे उतरो।।
यही वन्दना आत्मा की, भव्यत्व शक्ति बतलाती है।
तभी "चन्दनामती" सभी में, भक्ति स्वयं आ जाती है।।२०।।

भगवन् ! इस सम्मेदशिखर का, पुनः पुनः दर्शन पाऊँ।
यही भावना है मन में, सिद्धों के गुण में रम जाऊँ।।
इसी क्षेत्र से कभी मुझे, निर्वाण धाम भी मिल जावे।
सिद्ध भक्ति मेरे जीवन में, सिद्ध अवस्था दिलवाये।।२१।।

विधान के मण्डल का नक्शा

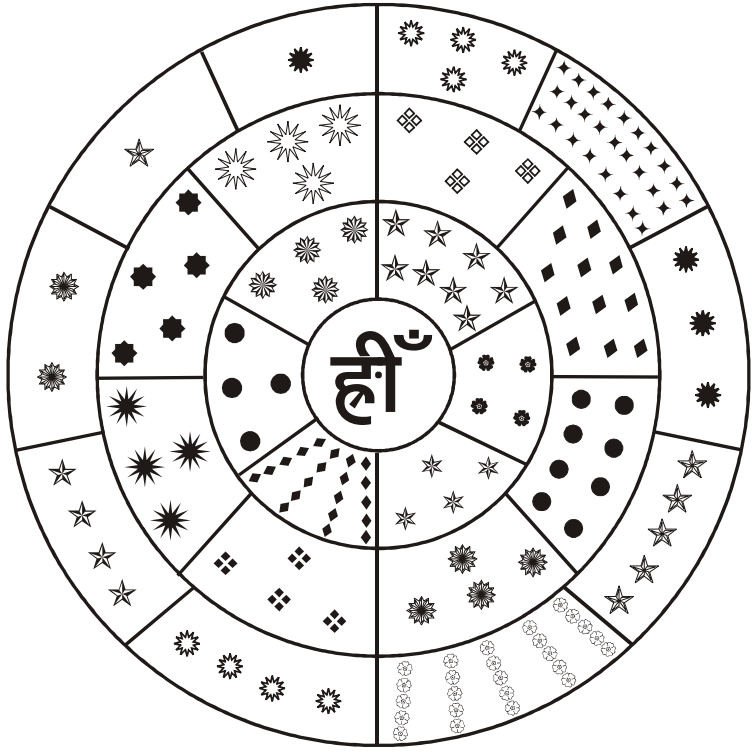

पहले वलय में	-२० अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य	तेरहवें वलय में	-८ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य
दूसरे वलय में	-४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य	चौदहवें वलय में	-४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य
तीसरे वलय में	-४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य	पंद्रहवें वलय में	-४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य
चौथे वलय में	-८ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य	सोलहवें वलय में	-४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य
पाँचवे वलय में	-४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य	सत्रहवें वलय में	-२ अर्घ्य
छठे वलय में	-४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य	अट्ठारहवें वलय में	-१ अर्घ्य
सातवें वलय में	-४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य	उन्नीसवें वलय में	-१ अर्घ्य
आठवें वलय में	-४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य	बीसवें वलय में	-४ अर्घ्य
नवमें वलय में	-५ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य	इक्कीसवें वलय में	-२७ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य
दशवें वलय में	-४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य	बाईसवें वलय में	-३ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य
ग्यारहवें वलय में	-४ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य	तेईसवें वलय में	-५ अर्घ्य
बारहवें वलय में	-१२ अर्घ्य १ पूर्णार्घ्य	चौबीसवें वलय में	-२५ अर्घ्य

कुल -१६५ अर्घ्य १८ पूर्णार्घ्य